कौरवी—वाक्पद्धति और लोकोक्ति-कोश

सकलन एव व्याख्या
डॉ॰ कृष्णचन्द्र शर्मा,
मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ

अमित प्रकाशन गाजियाबाद
(उत्तर प्रदेश)

समर्पण

लोक-मनीषा को

यस्तु प्रयुङ्क्ते कुशलो विशेषे
शब्दान् यथावद्व्यवहारकाले।
सोऽनन्तमाप्नोति जयं परत्र
वाग्योगविद् दुष्यति चापशब्दैः॥

भूमिका

अस्तमित आदित्ये याज्ञवल्क्य चन्द्रमस्यस्तमिते शान्तेऽग्नौ किंज्योतिरेवाय पुरुष इति वागेवास्य ज्योतिर्भवतीति वाचैवाय ज्योतिषास्ते पल्ययते कर्म कुरुते विपल्येतीति तस्माद्वै सम्राडपि यत्र स्व पाणिर्न विनिर्ज्ञायतेऽथ यत्र वागुच्चरत्युपैव तत्र न्येतीत्येवमेवैतद्याज्ञवल्क्य ।।

बृहदारण्यकोपनिषद (४।३।५)

'जब सूर्य चन्द्र तथा अग्नि भी नही होती, तब मनुष्य वाणी के प्रकाश में देखता है। वाणी के प्रकाश म देखने की क्षमता उसको देशकाल के अवरोध से मुक्त कर देती है। और फिर वह सब कुछ देख सकता है किसी अन्य प्रकाश म, जब कि वह दृष्टि क्षितिज की सीमा के भीतर ही कुछ देख पाता है।'

भाषा प्रकृति और मानव के सघर्ष का परिणाम है। वह उस सघर्ष का साधन भी है और प्रतिफल भी। मानव चेतना के आरम्भिक स्तर पर स्थूल अनुभव का भारी महत्त्व रहा है किन्तु मनीषा के विकास के साथ उपयोगिता वादी दृष्टि ने जब यह निश्चय कर लिया कि जीवन के सीमित समय म सृष्टि के विशाल अनुभव कोई भी प्राप्त नही कर सकता, तब स भाषा का महत्त्व और अधिक बढ गया। क्योकि, इसके द्वारा वह दूसरो के अनुभवो का लाभ प्राप्त करने की स्थिति मे आया तथा उसके समक्ष ज्ञान का विशाल भडार खुल गया।

इस भाति भाषा की अर्जित शक्ति मानव-कल्याण की साधिका बनी, तथा दूसरो के अनुभव और ज्ञान को लोक की मान्यता प्राप्त हुई।

वाक्पद्धति और लोकोक्तिया लोकानुभव की व सिद्ध मणिया हैं जिनको पाकर मनुष्य वाग्शक्ति-सपन्न बनता है। य भाषा की ऐसी थातियाँ हैं जिनम युगयुगान्तर का अनुभव बोलता है और जो हमारे नैतिक सामाजिक एव धार्मिक जीवन की आधार शिलाएँ है। जीवन के परिवेश मे जो कुछ समा सकता है वह यहा प्राप्त है। महर्षि वेदव्यास ने अपने महाग्रथ महाभारत के सबध म जसे कहा है कि—

यदि हास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति तत् क्वचित।'

वही लोकमनीषा की इस ज्ञान-गाठरी के विषय म भी निर्भीकतापूर्वक कहा जा सकता है । लोकजीवन की इन वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियो म भी सभी कुछ है ।

भारतीय जीवन का सार सेवा त्याग और वैराग्य मे है । इस देश मे जीवन ऐन्द्रिय भोग-हेतु नही अपितु सेवा समर्पण और परोपकार के हेतु धारण किया जाता है । वस्तु-सग्रह एव धनोपार्जन का उद्देश्य ससार-सुख न होकर परहित और पर सत्कार है । इन सभी मूल भावनाओं का सामजस्य तो इस लोक ज्ञान गगा म हुआ ही है साथ ही यथार्थपरक दृष्टि को भी यहा विस्मृत नहीं किया गया है । इस सबध म भी ऐसी व्यापक दृष्टि का इनम परिचय मिलता है जो आश्चर्य म डाल देती है । अनुभव और चिंतन का ऐसा मणिकाचन योग अन्यत्र कम ही देखने को मिलेगा । ठोस व्यवसायिक दृष्टि हो या विरागमयी उदास-वृत्ति, मानवता का उदार विशाल बोध हो या सकुचित जातिपरक दृष्टि, नैतिक गृहस्थ आस्था हो अथवा वासनामय चचल प्रवृत्ति—इन सभी विषयो के सम्बन्ध म कुछ न कुछ अवश्य यहाँ कहा गया है । इन सब म बुद्धि का आलोकमय उन्मेष है— गागर म सागर की ऐसी अनुभूति अन्यत्र दुर्लभ है ।

परम्परा की स्वयपूत गरिमा स अनुप्राणित ज्ञान की यह धारा काल के किन गह्वरो से निरन्तर हम तक पहुँची है यह नही कहा जा सकता । परन्तु इनके इतिहास पर यदि विहगम दृष्टि डाली जाय तो ज्ञात होगा कि वैदिक, लौकिक सस्कृत पाली प्राकृत और अवहट्ट के वाड्मय म सर्वत्र सूक्तियो का उल्लेख हुआ है । उत्तर भारत म बौद्धधर्म को राज मर्यादा और राज समर्थन महाराज हर्ष के शासन-काल के उपरान्त प्राप्त नही हो सका इस कारण उसके अनन्तर पाली भाषा का एक छत्र साम्राज्य भी न रह सका और १०वीं शताब्दी क आस-पास प्रान्तिक प्राकृतो का उदय आरम्भ हुआ । इसी का विकसित रूप आज की बोलिया हैं । सत और भक्त कवियो न इन्ही बोलियो म से एक—हिन्दी म अपनी रचनाए की हैं जो जन जीवन क अति निकट होन क कारण वाक्पद्धतियो (मुहावरो) और लोकोक्तियो स भरपूर हैं। कबीर सूर तुलसी आदि का साहित्य इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है ।

कुछ विद्वानो न लोकोक्ति एव वाक्पद्धतियो क मूल की खोज करते हुए, भाषा की उत्पत्ति क अनक सिद्धान्तो क आधार पर इनम विकास-क्रम निश्चित करन की चेष्टा की है ।

निम्नाकित वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियो की महत्ता देखकर, उनका देश कालगत उद्गम-स्थान जानने की इच्छा होती है । इस सबध म गभीरतापूर्वक विचार करने स ऐसा मालूम है कि इनका मूल अनुभव और चिंतन म सुरक्षित

है। अनुभव सहज है और साधारणतया सर्वत्र प्राप्त होता है। जब कभी किसी के मानस पटल पर सृष्टि के किसी व्यापार का प्रभाव, अथवा किसी क्रिया का आघात होता है तो उसकी प्रतिक्रिया इतनी तीव्र और शक्ति शालिनी होती है कि वह बरबस शब्दों की अभिधा में प्रकट हो जाती है।[1] कालांतर में यही अभिधाय लक्षणा और व्यंजना का आश्रय लेता है और तब किसी एक का सामान्य अनुभव लोक का समर्थन प्राप्त कर वाकपद्धति अथवा लोकोक्ति का रूप ले लेता है।

अनुभव की अपेक्षा चिंतन का कार्य कुछ जटिल है। फिर भी इस सम्बन्ध में अनुमान किया जा सकता है कि मानव जीवन की गहन समस्याओं पर विचार करने और निर्णय देने का कार्य किन्हीं विशिष्ट चरित्रवान् मेधा सम्पन्न तटस्थ वृत्ति वाले व्यक्तियों द्वारा ही संभव है। ऐसे महापुरुषों के वचन जन-जीवन के नियमन और मार्गदर्शन में सहायक होते हैं और लोक द्वारा समय समय पर आदर पूर्वक उनका स्मरण एवं कथन किया जाता है। यह चिंतन प्रसूत वाक्यावली आप्त-वाक्य के रूप में लोकग्राह्य होकर वाकपद्धतियों और लोकोक्तियों का रूप ग्रहण करती है।[2]

इस भांति अनुभव और चिंतन की उभय क्रियाओं के द्वारा वाक्पद्धतियां और लोकोक्तियां की रचना सम्पन्न होती है।

वाचिक भाषा मानवी अभिव्यक्ति का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण आधार है। अतः यह कथन अत्युक्तिपूर्ण प्रतीत नहीं होता कि वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियां का उदय उसी के साथ हुआ होगा। इसीलिये सुभाषित सप्तशती की भूमिका में आचार्य मंगलदेव शास्त्री द्वारा इनको अपौरुषेय कहा जाना समीचीन है।

> प्रबोधाय विवेकाय, हिताय प्रशमाय च।
> सम्यक्तत्वोपदेशाय, सतां सूक्तिः प्रवर्तते॥
>
> —सुभाषित सप्तशती, पृ० ३।

उनका मत है कि वाचिक भाषा का आदिम रूप अनुकरणात्मक, एवं संकेतात्मक शब्द तथा विस्मयादि बोधकों का व्यवहार जिन लोकोक्तियां और

---

1 'Speech is symbolic transformation of experiences
(Philosophy in a New Key p 27) —S Langer

2 "In proverbs the conscience of people sits in judgement
(Hindu Character p 321) —D Narayan

वाकपद्धतियो मे मिलता है उनको ही इनका प्रायमिक रूप समझना चाहिय । किन्तु यह मान लेना कि जिन लोकोक्तिया और वाकपद्धतिया म अनुकरणात्मक एव सकेतात्मक शब्दा का प्रयोग हुआ है वे ही सर्वाधिक प्राचीन हैं भ्रमपूर्ण होगा । क्योकि ऐसे शब्द आज भी हमारे व्यवहार म हैं, जो उन अनुभूतिया के प्रतीक बनकर प्रकट होते है जिनके लिये हमारे पास शब्द नही हैं । भाषा अनुभूति से सदैव न्यून (ओछी) पडती है । महाकवि बिहारी ने कहा है—

झूठे जात न सग्रहे, मुह से निकसे बैन ।।
याही सो विधि ने किए बातन को दो नन ।।

अत वाकपद्धतियो और लोकोक्तिया की प्राचीनता म तो सदेह नही किया जा सकता परन्तु भाषा के विकास के आधार पर उनम कोई पूर्वापर क्रम निश्चित करना तक सम्मत नही होगा । इनके सबध म इतना जान लेना ही पर्याप्त है कि वाकपद्धतियाँ और लोकोक्तिया भी शेष लोक साहित्य की *भांति प्रागैतिहासिक हैं तथा सभी प्रकार के शब्दा एव भावा को लेकर उनकी* निरन्तर रचना होती रहती है और वह भी 'हरि अनन्त हरि कथा अनन्ता' की भांति अनन्त हैं ।

लोक एव साहित्य दोना ही म वाकपद्धतियो का प्रचलन रहा है । साहित्य की प्रत्येक विधा—काव्य हो या कहानी उपन्यास हो या नाटक—के लेखको ने इनका अपनी भाषा मे प्रचुर प्रयोग किया है तथा ग्रामीण जना की अभिव्यक्ति की तो ये आधार ही हैं । जितने सटीक ढग से वे अपनी बात इनके द्वारा कह जाते हैं, वसा और किसी तरह सभव नही हो सकता । इनके प्रयोग से ये निरक्षर लोग वह प्रभाव उत्पन्न करते है जो प्राय बडी बडी व्युत्पन्न मति वालो के लिये कठिन होता है ।[1] मराठी कवि श्री मोरोपत ने सभाषण की विशेषताओ का वर्णन इस प्रकार किया है—

वहुव जब मनोहर
अल्पाक्षर सत्य बोलाव ।
ज्या सदवाक्य श्रवणी त्याचे
चित्तगिरिहि डोलाव ।।

ये सारे गुण वाक्पद्धतिया एव लोकोक्तिया म है । वाकपद्धतिया अथवा लोकोक्ति के सीमिताक्षरा म निहित विचार यदि कोई अपनी भाषा मे

1 "Like snake under the snake—charmer s flute we are swayed by the musical phrases of the verbal hypnotist
—S I Haykawa
(Language in Thought & Action p 118)

व्यक्त करने का सकल्प करे, तो यह निश्चय है कि वह अनावश्यक विस्तार देने एव निहित मन्तव्य को और भी अधिक धूमिल बनाने के अतिरिक्त कुछ नही कर सकता। इसी कारण लोक मडली एव विद्व मडली मे—दोना ही जगह इनका बडा मान रहा है।

मानव मनीषा के विकास का इतिहास इस बात का साक्षी है कि मानवी कल्पना के विस्तार के साथ-साथ शनै शनै स्थूल पर से उसकी आस्था कम होती रही है। पहले लोग वस्तु को देख छूकर ही उसका अनुमान कर पाते थे अब बुद्धि के विकास के साथ-साथ वह अनुमान प्रमाण के बल पर भी उनकी कल्पना कर सकते हैं। इस प्रकार वाक्पद्धतियो और लोकोक्तिया के व्यवहार का इतिहास मानव मनीषा का स्थूल से सूक्ष्म की ओर प्रस्थान है। जब ऐसा होता है तो अभिव्यक्ति को नया माध्यम प्राप्त होता है और भाषा चित्रोपम एव आलकारिक होने की अपेक्षा अधिक तर्कपूर्ण एव व्यवस्थित होने लगती है। इसीलिए हम ऐसा पाते है कि कविता, कहानी एव गद्य सभी म पहिले पुराने लेखकों की अपेक्षा आजके हमारे लेखक वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया का अपनी भाषा म कम व्यवहार करते हैं। भाषा की यह प्रयोग भगी वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया की अपेक्षा नही रखती। परन्तु यह सर्वांगत सत्य नही कहा जा सकता, क्योकि काल परिवर्तन एव सभ्यता के विकास के साथ-साथ कुछ नई वाक्पद्धतियाँ भी बनती रहती है जिनका प्रयोग साहित्यिक भाषा म होता है। अत यह विचार करना कि वाक्पद्धतियो और लोकोक्तिया का साहित्य क्षेत्र से कभी भी पूर्णरूपेण बहिष्कार हो सकेगा, ठीक नही है। यह बात दूसरी है कि पुरानी वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया का स्थान दूसरी नई ले लें। वस्तुत ससार में सब कुछ चक्रनेमिक्रमेण चलता है। अत जो चीज आज फैशन म नही है कौन जाने आगे चलकर कब उसको फिर सोत्साह ग्रहण कर लिया जाय। ऐसा हम व्यवहार म नित्य देखते हैं। इसलिए पुराने मणि भूषणों की भाति भाषा की इन प्रभा मणियो के सरक्षण की भी आवश्यकता है। यह बात भी नागरिक क्षेत्र के सम्बन्ध मे यथार्थ है अन्यथा ग्रामो के विषय म न तो ऐसी आशका है और न किसी विशिष्ट प्रयास की आवश्यकता है। वहाँ उनका प्रचलन रहा है और सदा रहेगा।

लोक भाषा के जिस सगठित पक्ष के सबध म अब तक इतनी चर्चा हुई है उसके रूप गुण एव लक्षण के विषय म जानकारी आवश्यक है। अत सर्व प्रथम वाक्पद्धति और लोकोक्ति को परिभाषित करना आवश्यक प्रतीत होता है। उनकी कतिपय विशेषताओ का उल्लेख भी महत्वपूर्ण है।

किसी भाषा की विशिष्ट अभिव्यजना प्रणाली जिसमे रूढ़ार्थी व्यजनाएं हो वाक्पद्धति कहलाती हैं। वाक्पद्धतियाँ पूर्ण वाक्य कभी नही होती व ऐसे

पद, अथवा अधूरे वाक्य हैं जो प्रयोक्ता की इच्छा और मति के अनुसार किसी सम्पूर्ण वाक्य में विलक्षण अर्थगरिमा भर देते हैं। इस प्रकार कहना चाहिये कि वाक्पद्धतियों का अर्थ साधारण शाब्दिक अर्थों से भिन्न होता है तथा वे अपनी छोटी पदाकृति में जो निहितार्थ लेकर चलती हैं उनके पूर्ण प्रकाशन के लिए उनको कुछ और शब्दों की सहायता अपेक्षित होती है॥ यथा 'जूता चलना'—

इस पद की अभिधा पर ध्यान दें तो तुरन्त ज्ञात हो जायेगा कि जूता नहीं चलता आदमी चला करता है। अतः यहां चलने का अर्थ भिन्न होना चाहिये, तथा वह नीचे दिए उदाहरण से प्रकट है—

'बूट डासन ने बनाया, हमने एक मजमूं लिखा
मुल्क में मजमून फैला और जूता चल गया।

—स्पष्ट है कि उक्त वाक्य में 'जूता चल गया' के दो अर्थ हैं—१ जूते की अच्छी बिक्री होने लगी (वह लोकप्रिय हो गया) २ पारस्परिक झगड़े प्रारम्भ हो गए। यदि उक्त वाक्य से 'जूता चल गया' पद को पृथक कर उसका अर्थ किया जाय तो वह पूरी तरह ज्ञात न होगा। जबकि सम्पूर्ण वाक्य में उसके प्रयोग से एक विलक्षणता आ गई। एल०पी० स्मिथ का यह वचन यथार्थ है कि 'वाक्पद्धति में हमारी बोलचाल में जीवन और स्फूर्ति की चमकती हुई चिंगारियाँ हैं। वे हमारे भोजन को पौष्टिक स्वास्थ्यकर बनाने वाले उन तत्वों के समान हैं जिनका अर्थ लक्षणा, व्यंजना द्वारा निकलता हो तथा वह शब्दों के प्रत्यक्ष अर्थ (अभिधार्थ) से भिन्न हो। देश विशेष में ऐसी वाक्पद्धति का प्रचलन राज मुद्रा के समान होता है। क्योंकि, ये वाक्पद्धतियाँ देशज पुष्ट एवं समग्र स्थानीय वातावरण को अपने में इस भांति समाहित किए होती हैं कि उनसे तादात्म्य करने में किसी को कठिनाई नहीं होता।' ये सब बातें लोकोक्तियों के सम्बन्ध में भी सर्वांगतः सत्य हैं किन्तु लोकोक्ति या वाक्पद्धतियों में गठन में भिन्न होती है।

लोकोक्तियाँ सम्पूर्ण वाक्य होती हैं। उनके अर्थ की पूर्णता के निमित्त किन्हीं और शब्दों की आवश्यकता भी नहीं होती। यह अवश्य है कि लोकोक्ति में शब्द विन्यास कुछ इस भांति का होता है कि उसमें परिवर्तन की कतई गुंजाइश नहीं होती। लोकोक्ति के शब्दों में हेर-फेर या किसी शब्द का पर्याय रख लिया जा सकता। लोकोक्ति के वाक्य में इस प्रकार उसकी लय की विशिष्टता भी स्पष्ट होता है। लोकोक्ति इसलिये वह संक्षिप्त चमत्कार पूर्ण वाक्य है जिसमें किसी अनुभूति एव तथ्य की चित्ताकर्षक अभिव्यक्ति होती है।" [illegible] [illegible] कोश के अनुसार "लोकोक्ति साहित्य का एक सूत्रात्मक स्वरूप है जिसमें सामान्य अनुभव के अनुसार जीवन की व्यावहारिकता

होती है। लोकमानस की अभिव्यजना होने के नाते इसमे प्रचलित मनोवृत्तियों की परछाईं मिलती है।' [1]

चैम्बर्स शब्दकोष में इसी को एक सक्षिप्त सुपरिचित वाक्य जिसमे किसी सर्वमान्य सत्य का उद्घाटन अथवा कोई नीति उपदेश हो बतलाया गया है। लोकोक्ति शब्द से यह तो सिद्ध ही है कि वह ज्ञान की एक परम्परा है, जो लोक मे सदा रहती आई है और इसी कारण लोकोक्ति को प्रेषणीयता की अद्भुत शक्ति प्राप्त हुई है। लोकोक्तिया म तीव्र जीवनानुभूति, गहन चिंतन, एव सूक्ष्म निरीक्षण व्यक्त होता है। जन जीवन के मार्ग दर्शनार्थ यह निस्सदेह हमारी अलेखित आचार-सहिता है। अत किसी भी स्थान अवसर अथवा व्यक्ति के उद्धरण हेतु यह निरी वाक्पद्धति नही अपितु आप्त वाक्यो के समान हैं।

ऊधो का लेना न माधो का देना।'

इस छोटी सी लोकोक्ति म निस्सगता दार्शनिकता तथा ठोस व्यावहारिकता का कैसा सुन्दर समन्वय है, यह देखते ही बनता है। लोकोक्तिया इस भाति हमारे जीवन-पथ को आलोकित करती और हमको जीवन निर्वाह की दृष्टि प्रदान करती हैं। सचमुच, लोकानुभव की ये मणिया खो देने नही, सहेज कर, सजा कर रखने के योग्य हैं।

कला पक्ष की दृष्टि से लोकोक्तियों की कुछ विशेषताएँ ये हैं —

१ ये तुकान्त है।

२ इनमे किसी विशिष्ट शब्द पर अर्थबल रहता है।

३ इनमें आलकारिकता रहती है।

४ ये लक्षणा, व्यजना अथवा ध्वनि चमत्कार से सवलित होती है।

प्राय लोकोक्तियाँ तुकातमय होती हैं। इससे उनका झुकाव लय और छन्द की ओर देखा जा सकता है। यदि यह कहा जाय कि लोकोक्तियाँ लौकिक छन्द रचनाओ के प्रारूप हैं तो कदाचित् अत्युक्ति न होगी। क्योकि कविता की भाति इनम भी सक्षिप्तता, शब्द चयन पर बल, भावप्रबलता एव सगीतमयता, किसी न किसी अश म देखी जा सकती है। कुछ लोकोक्तिया तो छन्द बद्ध रूपो म भी पाई जाती हैं।

लोकोक्ति म प्राय एक शब्द ऐसा होता है जो उसको गहनता विशिष्ट अर्थभगिमा तथा प्रभाव देता है। अर्थ की दृष्टि से यही वह शब्द होता है जिसका परिवर्तन नहीं किया जा सकता।

लोकोक्तिया म अनेक अलकारो की छटा दर्शनीय होती है। इनम कितने

१ मानविकी पारिभाषिक कोश, पृ० २१२।

घिसे हुए रूपक, बिसरी हुई उपमाएं, अथवा प्रतीप, व्यतिरेक, उदाहरण, अर्थान्तरन्यास, परिसंख्या, श्लेष असंगति, व्याजस्तुति अथवा अन्य अलंकारों के उदाहरण मिलते हैं यह अनुमान कर पाना कठिन है। अनुप्रास की छटा तो अधिकतर मिलती ही है। साथ ही यमक, श्लेष, आदि शब्दालंकार भी मिल जाते हैं। भाषा की तीव्रता लक्षणा, व्यंजना आदि तो इनकी प्राणशक्तियाँ ही हैं।

लोकोक्तियों के विषय में एक उल्लेख-योग्य बात यह है कि जैसे वाक्पद्धति को अर्थद्योतन में हेतु वाक्य के विशिष्ट गठन की अपेक्षा होती है, उसी प्रकार लोकोक्ति को संदर्भ की अपेक्षा रहती है। संदर्भ से रहित लोकोक्ति का 'अर्थ ओज' अनुभव कर पाना कठिन है। अवसर एवं संदर्भ विशेष में कहे—सुने जाने पर लोकोक्ति का अभिप्राय श्रोता वक्ता दोनों को सद्य ग्राह्य होता है। परन्तु संदर्भ से विलग उसका अर्थ (व्याख्या) कर पाना संभव नहीं होता। इस प्रयत्न में शब्दों का दुरुपयोग कितना भी क्यों न किया जाय। बिन अवसर की बात के लिए किसी कवि ने 'नीकी हू फीकी' कहकर उसका संदर्भ से कटकर महत्वहीन होना बतलाया है। लोकोक्ति के सम्बन्ध में भी यह यदि पूर्ण सत्य नहीं तो आंशिक सत्य अवश्य है। मेरे विचार में लोकोक्तियाँ शस्त्रागार में रखे उन पने शस्त्रों के समान हैं जिनकी तीक्ष्ण धार का अनुभव केवल उसके शरीर पर पड़ने पर होता है। संदर्भ रहित लोकोक्ति में वह अर्थगरिमा एवं प्रेषणीयता नहीं जो संदर्भ सहित लोकोक्ति में उत्पन्न हो जाती है।

वाक्पद्धतियों एवं लोकोक्तियों की तुलना से अधोलिखित तथ्य प्राप्त होते हैं—

	वाक्पद्धति (मुहावरे)	लोकोक्ति
१	व्यंजना रूढ़ियाँ हैं। ये अभिव्यक्ति को बल प्रदान करती हैं। इनका प्रयोगान्तर्गत रूप परिवर्तन सम्भव है।	चिरकाल के अनुभवों एवं गहन विचारों की निष्कर्षात्मक अभिव्यक्तियाँ हैं। ये अपरिवर्तनीय हैं।
२	खंड वाक्य—अपूर्ण विचार की वाहिका।	संक्षिप्त वाक्य, तथा संपूर्ण विचार की वाहिका।
३	भाव को हृदयंगम कराने में सहायक अप्रस्तुत विधान के समान।	तर्क को प्रमाण प्रदान कर अंतिम व्यवस्था एवं निर्णय की उद्घोषिका।
४	भाषा की शृंगार मंजूषा।	लोक मनीषा की संग्राहिका।

५ वाणी को चित्र तथा चित्र को सतत् उद्धत उद्धरण।
सजीवता दने वाली।

६ गद्य गरिमा से युक्त। वाक्य बीज मंडित।

इनके अतिरिक्त इनम कुछ प्रकट साम्य भी हैं, यथा—
सक्षिप्ति सुस्पष्टता कुशाग्रता विदग्धता आदि वाक्यपद्धतिया और लोको क्तिया म समान रूप स पाई जाने, वाली विशेषताएँ हैं।

सक्षिप्ति प्रतिभा का लक्षण है। यह वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया मे समान भाव स देखी जा सकती है। यह इन दोना को लोकप्रियता एव प्रभाव देने म सहायक होती है। अालकारिकता अभिव्यक्ति को स्पष्टता प्रदान करती है तथा उसके नाद-सौंदय म वृद्धि करती है। कालान्तर के मनन, निरीक्षण का फल कुशाग्रता है। व्युत्पन्न व्यक्ति अविलम्ब जो मत प्रकट कर देता है, वह सामान्य जन के लिए सभव नही। वाक्पद्धतियाँ और लाकोक्तिया ऐसे ही मेधावी जना की अभिव्यक्तियाँ हैं। वाणी विलास का अच्छा उदाहरण भी कठिनता स मिलेगा। वाक्पद्धतियाँ और लोकोक्तिया व्याकरण विरुद्ध तथा अभिव्यक्ति के स्वीकृत मानदडों की अवहेलना करके चलती हैं। विधान एव आर्थी व्यजना दोना ही रूपो म इस विदग्धता का अनुभव किया जा सकता है।[1] द्विरुक्ति पुनरुक्ति तथा विपमोक्ति भाषा के विकार ही हैं जिनको वाक्पद्धतिया और लाकोक्तिया साथ लकर चलती हैं। विभक्ति और समास क सबध म भी इनमे पर्याप्त स्वच्छन्दता देखी जाती है। किन्तु यदि भाषा का सर्वोपरि गुण भावाभिव्यक्ति स्वीकार किया जाय,—कदाचित जिस कारण उसका जन्म हुआ है—तो जब तक इस उद्देश्य की पूर्ति भाषा के द्वारा होती है उसे दूपित नही बतलाया जा सकता।

डा० जॉनसन जसे कठोर अनुशासनवर्त्ताओं ने इसलिए जहा वाक्पद्धतियों और लोकोक्तिया को व्याकरण विरुद्ध तथा 'दूपित' बतलाया है वहा स्मिटर महोदय जस उपयोगितावादी दृष्टि रखने वाले विद्वान् ने—**प्रत्येक भाषा अस्पष्ट और औपचारिक प्रयोगों का कोष होती है** एसा कहकर उसकी रक्षा भी कर ली है। इसी सम्बन्ध म जान वीम्स का यह मत उद्धत करना भी समीचीन होगा कि 'लोकोक्तिया यथार्थ लोक भाषा सिखाती हैं और मूल निवासिया के मन की अब तक छिपी हुइ बात पर प्रकाश डालती हैं।

वाक्पद्धतियाँ और लोकोक्तिया लाक की सपत्ति हैं तथा विशाल लोक ही म उनका प्रचलन होता है इस दृष्टि से भी यदि वह सकीर्ण पडित मडली के

---

१ (यद्यपि मुहावरे काल सकेत के निमित्त व्याकरण के नियमानुसार अपने क्रिया रूपों में परिवर्त्तन भी लाते हैं।)

भाषा नियमन—मुहावरे की भाषा म— जीभ पर ताला' लगाने की प्रवृत्ति का विरोध करते हैं, तो उचित ही है। लोकोक्ति है कि—

'मारते का हाथ पकडते, बोलत के जीभ कौन पकड सकता है।

लोक को गूगा बनाने के किसी भी षडयन्त्र का विरोध होना चाहिए। व्याकरण स्वय दोषमुक्त नहीं है। भाषा विज्ञान के परिप्रेक्ष्य म उसके पुन लेखन की आवश्यकता भी अनुभव की जाती है तो लोकवाणी म दोष-दर्शन की कहा गुजायश है ? लोक के पश्चात वद आता है।

इन वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियों म कतिपय लोगों को अश्लीलता भी दिखाई दे सकती है। इस विषय पर भी विचार कर लेना होगा।

संस्कृत साहित्यशास्त्र म त्रिधा अश्लीलम्—त्रिधेति व्रीडा जुगुप्सामगल व्यजकत्वात। अश्लील तीन प्रकार होता है कहकर आगे स्पष्ट किया गया है कि लज्जा घृणा, एव अनिष्टकर प्रभाव उत्पन्न करने वाला, साहित्य अश्लील होता है। पाश्चात्य देशों म भी नग्नता कुरुचि एव मन म वासना को उत्तेजित करने वाले साहित्य को अश्लील बतलाकर उपेक्षित किया गया है। किन्तु प्रश्न यह है कि अश्लीलता की कसौटी क्या है ? अन्तत वह व्यक्ति समाज और काल ही हो सकती है। इन तीनों के आधार पर ही अश्लील श्लील का निर्णय हो सकता है। जहा तक व्यक्ति का सबध है उसके जैसे सस्कार अथवा पूर्वाग्रह होग वसी ही दृष्टि उसको प्राप्त होगी। रीतिकाल की किसी विरहिणी नायिका का वर्णन करते हुए कवि कहता है—

विरह भरी लखि जीगनु कही न कयो बार।
अरी आव भजि भीतरें बरसतु आज अगार॥

अर्थात् छोटा चमकीला जीव जस उस नायिका को अगार' दिखाई दिया, वैसे ही अन्य को भी अपने अपने विचार और रुचि के अनुसार वस्तुए दीख पडती हैं। इस कारण कह सकते है कि अश्लीलता विषयीगत है। सरमद की यह उक्ति द्रष्टव्य है—

आकिलो ताजे शहाबानी दाद,
मारा हमों असबाबे परेशानी दाद।
पोशीद लिबास हरकेरा ऐबे दीद
बे एबौरा लिबासे उरियानी दाद॥

किसी भी नग्न मनुष्य पर डाक्टर की निर्विकार दृष्टि शरीर के सब अगों पर घूम सकती है किन्तु वासना के कीटों के लिए विशिष्ट अगों पर पडी दृष्टि उत्तेजना का कारण हो सकती है। वस्तुत सपूर्णता म अश्लीलता का निवास नहीं। जब हम वस्तु को खड खड कर (सदर्भ से विमुक्त) देखने का प्रयास करते हैं तभी अश्लीलता उत्पन्न होती है।

जीवन म कुछ भी अश्लील नही है हाँ, यदि यथाय को अश्लील वतलान की कुचेष्टा की जाय, तो वात दूसरी है। फिर प्रत्यक देश-काल म शिष्ट समाज की मान्यताए एक समान नही होती। ऐसी दशा म अश्लीलता वास्तव म क्या है इसका निणय कठिन होगा। तथाकथित सभ्य समाज जिन बाता को अश्लील की सज्ञा देता है वे लोक म बडे ही तटस्थ, अबोध भाव से कही सुनी जाती हैं।[1] उनका तात्पय ऐसा कुछ कहकर वासना को उत्तेजित करना नही केवल तथ्य को सुस्पष्ट एव प्रभावशाली रीति से प्रकाशित करना ही होता है। सौंदयशास्त्रिया की भी ऐसी ही दृष्टि है, और इसलिए वह साहित्य मे अश्लीलता की स्थिति स्वीकार नही करते। निष्कषत कहा जा सकता है कि लोकाभिव्यक्ति (वाक्पद्धति, लोकोक्ति) म अश्लील कुछ नही होता। न इनके कारण कभी किसी मन विकार को उत्तेजना मिलती है न कोई अमगल होता है। घृणा और लज्जा का तो इस सहज म कोई स्थान ही नही है। अत यदि यह आपत्ति की जाय कि वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया म अश्लीलता है तो वह निमूल निराधार ही सिद्ध होगी, क्यांकि इनकी विशेषता तो जन-जीवन का नियत्रण और माग दशन कर व्यष्टि और समष्टि को उत्कप प्रदान करना है। लोकोक्ति, वक्ता और श्रोता दोना को उच्च स्तर पर रख देती हैं। वक्ता उसको बोलते समय ज्ञान गव का अनुभव करता है तो श्रोता ज्ञानलुब्ध जिज्ञासु की भाति आत्मतुष्ट होता है।

वाकपद्धतिया और लोकोक्तिया को अध्ययन की दृष्टि से कई प्रकार से विभाजित किया जा सकता है—साधारणतया इस प्रकार के विभाजन क आधार इस प्रकार हैं—

१ क्षेत्रीय।
२ विषयानुक्रम।
३ वर्णानुक्रम।

क्षेत्रज वाक्पद्धतियाँ एव लोकोक्तिया अपने साथ स्थानीय रग लिए होती है। प्रथमत एक क्षेत्र विशेष की भाषा (देशज) ही अपने म भिन्न होती है। यह भिन्नता 'चार कोस पर पानी बदले आठ कोस पर बानी' की लोकोक्त्यनुसार थोडी थोडी दूर म ही यद्यपि देखी जा सकती है फिर भी एक ही बोली के कई रूपा म कुछ न कुछ मूलभूत साम्य भी रहता ही है। इसलिए

1 'Sexual feeling is really the root of all ethics and no doubt of astheticism and religion

—Dr R V Krafft Ebing
(Psychopathia Sexualis, Intro)

थोड़े थोड़े भाषा परिवर्तन के साथ उस पूरे क्षेत्र म एक जैसी वाक्यपद्धति का प्रचलन रहता है। किसी विशाल प्रदेश की वाक्पद्धतियो म तुलना करके देखा जाय तो, अधिकाशत साम्य ही मिलेगा। यह अवश्य है कि इनमे कुछ ऐसी भी होगी जिनका सबध एक सीमित क्षेत्र अथवा स्थान विशेष ही स होगा। इस प्रकार की वाक्पद्धति म उस क्षेत्र विशेष का इतिहास, सस्कृति और जीवनाचार व्यक्त होता है। यह वहा के वातावरण की गध स युक्त होती हैं और जो रूपक एव उपमाए उनम मिलती हैं उनका उस क्षेत्र विशेष की प्रकृति और जलवायु का घनिष्ट सबध होता है।

ऐसी वाक्पद्धति एव लोकोक्तियो का अध्ययन करत समय, इसलिए कुछ आतरिक विभाजन और भी कर लेने की आवश्यकता है।

इस प्रकार क अध्ययन म भाषा की उच्चारणगत विशेषताओ का भी ध्यान रखना उचित होगा। क्योकि अनेक बार शब्दो म स्वराघात बलाघात के परिणाम स्वरूप भी अर्थ म परिवर्तन उपस्थित हो सकता। तथा—

तुम जाओगे
तुम जाओगे
तुम जाओगे

विषयानुक्रममूलक विभाजन अपेक्षतया सरल है। यो तो जीवन के विषय अनन्त हैं, फिर भी उनको कुछ विशिष्ट वर्गों मे विभाजित कर उनके आधार पर अध्ययन किया जा सकता है। जसे रस दृष्टि से लोक साहित्य म शृगार एव वीर रस प्रधान है, अत इन दो मुख्य और दो गौण—करुण तथा हास्य के आधार पर उनका अध्ययन सभव है। दूसरे प्रकार स यह विषयानुक्रम विभाजन धर्म नीति एव लोक व्यवहार के आधार पर भी किया जा सकता है। विषयो की गणना व्यवसाय के अनुसार भी यथा कृषि वाणिज्य ज्योतिष आदि रूपो म की जा सकती है। परन्तु इस भाति कोई एक विभाजन अपने मे समग्र लोकोक्ति एव वाक्पद्धति साहित्य को समाहित नहा कर सकता। ऐसी दशा म उक्त सभी का मिलाकर आवश्यकता और अध्ययन के दृष्टिकोण के अनुसार ही कोई काम चलाऊ विषयानुक्रम स्थिर किया जा सकता है

वर्णानुक्रममूलक विभाजन सरल है, इन्ही के अनुसार लोकोक्तियो एव वाक्पद्धतियो का अध्ययन सुगमतापूर्वक किया जा सकता है। इस विभाजन की व्यावहारिकता के कारण ही प्राय लोगो ने इसी को अपनाया है।

इनके अतिरिक्त स्त्री पुरुष एव बालको की वाक्पद्धतियो और लोकोक्तियो तथा अवसर विशेष से सम्बद्ध वाक्पद्धतियो और लोकोक्तियो को पृथक पृथक वर्गीकृत करके उनका अध्ययन किए जा सकते हैं। परन्तु

यह कृत्रिम विभाजन होगा। अनेक वाक्पद्धतियां और लोकोक्तियां को, जिनका प्रचलन अधिक हैं, किसी एक श्रेणी म रखन का आधार खोजना भी कठिन हो सकता है। इसलिए अध्येता को प्रथम तीन प्रकार के विभाजनो म से कोई एक चुनाव उपयुक्त होगा।

अब हम वाक्पद्धति एव लोकोक्तियों के अध्ययन के मुख्य विषय पर आते हैं। इनका अध्ययन कई रूपो म किया जा सकता है। अध्ययन की इस व्यापक दृष्टि से न केवल इस प्रकार के साहित्य की सूझ-बूझ बढेगी, अपितु हम अपनी भाषा की मूलशक्ति को पहिचानेंगे, तथा आवश्यकतानुसार परिनिष्ठित साहित्य मे उनका आकलन कर उनकी उपयोगिता का विस्तार कर सकेंगे। इस संदभ म आचाय रामचन्द्र शुक्ल एव कई पाश्चात्य साहित्यकारो का यह मत स्मरणीय है कि जब कभी साहित्यकारो को शब्द दारिद्रय सताता है, तो उनको देशज भाषाओं की ओर दौडना पडता है। वाक्पद्धतिया एव लोकोक्तियां म ऐसी वैविध्यपूर्ण विपुल शब्दावली भरी है।

लोकोक्ति एव वाक्पद्धति के अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण हो सकते हैं। इनम कुछ इस प्रकार हैं —

१ भाषिक,
२ साहित्यिक,
३ शैलीगत,
४ व्याकरणिक,
५ भौगोलिक,
६ समाजशास्त्रीय,
८ नवशशास्त्रीय,
६ मनोवैज्ञानिक,
१० धार्मिक,
११ सास्कृतिक एव
१२ तुलनात्मक।

भाषिक अध्ययन रूप ध्वनि एव अर्थ विचार के अतगत होना आवश्यक है। देशजा की रूप रचना शक्ति असीम है। उच्चारणगत विशेषताओं के कारण उनम शब्द की नई-नई भगिमाए दृष्टिगोचर होती हैं। अर्थविचार का विषय बडा विस्तृत किन्तु रुचिकर हैं। देशजा में अर्थापकर्ष एव अर्थोत्कर्ष के विस्मयकारी उदाहरण मिल सकते हैं, जिनके अध्ययन से साहित्य को असीम लाभ की आशा है।

भाषिक अध्ययन ऐतिहासिक एव वर्णनात्मक—दोनो ही प्रकार से किया जा सकता है।

वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियों का अध्ययन दैनिक जीवन के काव्य के रूप में करना हितकर होगा।[1] साहित्य का उद्देश्य गर्हिता है। इस विचार से इस भाँति के अध्ययन की गरिमा और भी बढ़ सकती है क्योंकि वाक्पद्धति और लोकोक्तियाँ के व्यवहार का कारण लोक-साधन ही तो है। शैलीगत अध्ययन अपने में एक संपूर्ण बात है। जीवन में जो एक लय सतत विद्यमान रहती है वह अभिव्यक्ति को भी अछूता नहीं रहने देती। इस दृष्टि से शैली में होने वाले आरम्भिक परिवर्तनों का ब्यौरा लेना उपादेय होगा। अत भाषा का ध्वनिग्रामीय अध्ययन तथा विभिन्न मन स्थिति[2] एवं व्यवहारों की भाषा का अध्ययन तथा व्याकरण की दृष्टि से वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियों का अध्ययन अपेक्षित है। इस आरोप पर विचार करना लोक साहित्य के अध्येता का कर्त्तव्य और इसका निराकरण उसका धर्म है। वर्तमान स्थिति यह है कि हमारा व्याकरण भाषा वैज्ञानिक दृष्टि लेकर नहीं चलता परिणामत इसमें अनेक विषमताएं दृष्टव्य है। वास्तव में व्याकरण की उचित रचना तभी संभव है जबकि वह भाषा विज्ञान को आधार मानकर उसके सिद्धान्तों के अनुकूल भाषा का नियमन करने के उद्देश्य से लिखी जाए।[2] वाक्य रचना के संबंध में इस सदः मे व्यापक विचार की अपेक्षा है।

भौगोलिक दृष्टि से यह नितांत आवश्यक है। किसी स्थान का मनुष्य जीवन वहां के भौगोलिक नियंत्रण के अधीन होता है। इसका प्रभाव वहां के लोगों की शरीर रचना समाज व्यवस्था एवं संस्कृति पर भी होता है। प्रकृति के स्थानीय आग्रहों पर अभिव्यक्ति के साधन निर्भर करते हैं।[3] इस कारण भौगोलिक अध्ययन का भारी महत्व है। इसके लिए किसी प्रदेश की

---

1 Slang might well be regarded as the poetry of every day life —Haykawa
(Language in Thought and Action P 122)

2 Particular Syllabus got fixed on the story of language
Conception laden sounds are words —Mario Pei
—S Langer

3 Language and its changes cannot be understood unless linguistic behaviour is related to other behavioral facts × ×
Every language has an effect upon what the people who use it see what they feel how they think —
Clyde Kluckhohn—Mirror for Man P 128, 129

छोटे-छोटे खडा म विभाजित कर वहा की विशेषताओ का अध्ययन और उनका वहा की वाक्पद्धति पर प्रभाव जानने का यत्न होना चाहिए।[1] इन सभी स्थानो मे समाज के विभिन्न स्तरा पर भाषा एव अभिव्यक्तिगत भेद दर्शनीय होगा।

एतिहासिक एव समाजशास्त्रीय अध्ययन के लिए वाक्पद्धतियो और लोकोक्तिया मे प्रचुर सामग्री वतमान है। वाक्पद्धतिया तो काल के साथ बदलती भी हैं। लोकोक्तिया, यद्यपि सावकालिक सत्य के रूप म ही होती है, फिर भी इन पर काल और परिस्थितिया की छाप स्पष्ट होती है। "कहावता और मुहावरा मे इतिहास के बहुत से तथ्य जीते चले जात हैं। जिस इलाके म कहावत प्रचलित है, कई बार उसके इतिहास, रीति-नीति, पर इन कहावतो मुहावरा से नई रोशनी पडती है।[2]

काल विशेष म समाज म कौन-कौन सी सस्थाए थी, जीवन के क्या आदश जनता द्वारा स्वीकार किए गए थे तथा सामान्यत तत्कालीन समाज के क्या प्रतिमान थ उन सबका ज्ञान, इस प्रकार क अध्ययन से सुगमतापूवक प्राप्त हो सकता है।

नृवशशास्त्रीय अध्ययन वाक्पद्धति और लोकोक्तिया म प्राप्त प्राचीन शब्द समूह के आधार पर सभव होगा।

जहाँ तक मनोवैज्ञानिक अध्ययन का सम्बन्ध है उसके लिए तो कदाचित् वाक्पद्धति और लोकोक्तिया से बडी प्रयोगशाला अन्यत्र प्राप्त नही हो सकती। विभिन्न मनोवृत्तियो तथा व्यक्ति और समाज के विभिन्न आचरणो, विचारा और चरित्रा का जसा विस्तृत ब्यौरा इनम मिल सकेगा, वह और कही भी प्राप्त नही हो सकता। मन विश्लेषण के सुस्पष्ट उदाहरण, जिनसे सामान्य एव असाधारण व्यक्ति के विचार-व्यापार का परिचय मिलता है इनम प्रचुर

---

1 The differences between neighbouring local dialects are usually small, but recognizable × × ×

—Bloomfield, Language, p 51

2 —वी० वी० केसकर (भूमिका, कहावत कोष—फलन)

"Nothing tells us more of the spirit of a people, than its Proverbs —English, p 4

'As the people, so the Proverbs —Scottish, p 5

'As the country so the morals as the morals so the Proverbs —German p 178—Champion

(Racial Proverbs)

भाषा में है। अतः जाति और व्यक्ति एवं किसी देशकाल विशेष के साधारण एवं असाधारण जनों के मनोवैज्ञानिक अध्ययन के लिए वाक्पद्धति और लोकोक्ति पर गहन विचार होना चाहिए।

किसी देश काल समाज की संस्कृति और धार्मिक मान्यताएँ अहरह उनके शब्दों में प्रकट हुआ करती हैं। इस दृष्टि से वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियों में विपुल सामग्री मिल सकती है। लोक जीवन से निकटतम सम्बन्धित होने के कारण निस्सन्देह ये आंचलिक सांस्कृतिक इतिहास लेखन को प्रोत्साहन दे सकती हैं।

तथा इस सबके अनन्तर एक भाषा प्रदेश की लोकोक्तियों का दूसरे प्रदेश की वाक्पद्धति एवं लोकोक्तियों के साथ तुलनात्मक अध्ययन करना आवश्यक है।[1] विदेशी शासकों ने इनका अध्ययन लोगों की प्रकृति एवं प्रवृत्ति की जानकारी प्राप्त कर शासन व्यवस्था की सुगमता के हेतु किया था। हमको यह कार्य भावात्मक ऐक्य की स्थापना के लिए करना चाहिए। तुलनात्मक अध्ययन समाजशास्त्रीय, एवं साहित्यिक—दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

मूल से विच्छिन्न होकर जैसे कोई पौधा नहीं पनप पाता ऐसे ही अपने वंशजों की उपेक्षा कर कोई भाषा उन्नत नहीं हो सकती।

डा० ओमप्रकाश गुप्त अपने शोध ग्रंथ मुहावरा मीमांसा के आमुख में लिखते हैं—"किसी राष्ट्रभाषा को समृद्धिशाली और उन्नत बनाने में जन साधारण की बोलचाल की असंस्कृत और अपरिमार्जित भाषा से आये हुए शब्दों का महत्व तो है ही × × इसके साथ ही समृद्धि का एक और भी तत्व है जो इससे कहीं अधिक महत्व का है × × भाषा व्यवसायियों की इस दगनी टूटी का नाम मुहावरा है।" हिन्दी की दशा इस सम्बन्ध में बड़ी दयनीय है। देश की राष्ट्रभाषा घोषित होने के पश्चात् भी हिन्दी विद्वानों का ध्यान इसकी समृद्धि के बहुमुखी साधना की ओर नहीं गया। वाक्पद्धतियों और लोकोक्तियों के महत्व की चर्चा हम पर्याप्त विस्तार में कर आये हैं। खेद है कि लोकभाषा की इस विशाल संपत्ति के सम्बन्ध में अब तक उदासीनता बनी हुई है।

इस विषय पर जो कुछ काम हुआ है उसके फलस्वरूप केवल थोड़ी सी पुस्तकें प्राप्त हैं। इनमें भी देशी और विदेशी सभी विद्वानों के प्रयत्न सम्मिलित हैं। इनमें लोगन पियरसल स्मिथ की पुस्तक 'शब्द और मुहावरे' का बड़ा मान है। इस दिशा में यह मापदण्ड ग्रंथ माना जाता है जिसमें

---

1 The most stable and stikring differences × × × in our standard language are geographic × × ×
Bloomfield Language p 49

2 मुहावरा मीमांसा आमुख पृ० १०।

अनेक भारतीय विद्वानो को इस काय की ओर प्रेरित किया है महाकवि 'हरिऔध' की पुस्तक 'बोलचाल' मे मुहावरा का विषद विवेचन भी इसी पुस्तक का प्रसाद है तथा इसी ने श्री मिश्र तथा श्री दिनकर जैसे विद्वानो को इस ओर प्रवृत्त किया है। दूसरी प्रसिद्ध पुस्तक इस विषय पर श्री एस० डब्ल्यू० फैलन का 'हिंदुस्तानी कहावत कोष' है। श्री बालकृष्ण केसकर-प्रधान नेशनल बुक ट्रस्ट—इण्डिया इस ग्रन्थ के प्रकाशकीय मे कहते है—' उन्नीसवी सदी के कुछ अंग्रेजो ने भारतीय भाषाओ पर बहुत ठोस काम किया। सच बात कही जाय तो भारतीय भाषाओ के आधुनिक गद्य का निर्माण कुछ अंग्रेजो की सेवा के बिना सभव न होता।'

इस दिशा म हिन्दी म श्री रामदहिनमिश्र, श्री अयाध्यासिंह उपाध्याय, श्री कामता प्रसाद गुरु श्री आर० ज० सरहिंदी व श्री विश्वनाथ खत्री का काय है। इसके अतिरिक्त हिन्दी शब्द सागर तथा ना०प्र०स०, काशी[1] से प्रकाशित व्यापक मुहावरे' तथा हिन्दुस्तानी एकेडेमी स प्रकाशित 'भोजपुरी मुहावर की पुस्तकें भी हैं। परन्तु अब तक के इस समस्त काय म मुहावरे और लोकोक्तिया का विधिवद् वनानिक अध्ययन नही किया गया है। देशज मुहावरो पर तो श्री राम राजेन्द्र सिंह की पुस्तिका, जिसम कुल ३२० मुहावरे और लाकोक्तिया हैं तथा श्री उदय नारायण तिवारी के 'भोजपुरी मुहावरे' के अतिरिक्त अन्य कोई पुस्तक ही उपलब्ध नही है। अन्तिम दो को छोडकर शेष सभी पुस्तका म तो नई बोतला म केवल पुरानी शराव' भरी गई हैं। अभी वाक्पद्धतिया और लोकोक्तिया के सग्रह-सकलन का काय भी अधूरा पडा है। यह काय इतना महान् है और यह ऐसा 'चालू विषय है कि इसके पूण कर पाने का दभ कोई अकेला व्यक्ति या सस्था नही कर सकती। इसके लिये काय के अनुरूप ही उद्योग जुटमिल कर ही कर सकते हैं। यह श्रम-साध्य भी है और व्यय-साध्य भी। इसलिए आवश्यकता यह है कि सरकार इस काम मे उत्साही लोगो की आर्थिक सहायता करे तथा 'यह बिनसत नग राखिकै जगत बडो जस लेहु' की उक्ति चरिताय करे। देश की सस्कृति को पुनर्जीवित करने तथा लोगो मे भावात्मक ऐक्य की अनुभूति जगाने के लिये इससे अधिक उपयुक्त कोई दूसरा काम नहीं हो सकता। साहित्योन्नति तो इसका अतिरिक्त फल ही मानना चाहिए।" लोक से परिचय और एकता करन के जितन साधन हैं उनम यह सबसे प्रबल हैं। महर्षि व्यास का कथन है—)

'प्रत्यक्षदर्शी लोकानां सवदर्शी भवेन्नर" (लोक को अपने नेत्रा से देखने वाला व्यक्ति ही उसका सम्यक् ज्ञान प्राप्त करता है।)

कौरवी के सम्बन्ध म सधनन एसे प्रयास का अभाव देखकर, सीमित

---

[1] नागरी प्रचारिणी सभा काशी।

साधन होते हुए भी हमने कौरवी—वाक पद्धति और लोकोक्ति कोश नाम की पुस्तक को प्रकाशित करने का साहस किया है। कौन जाने किस लोकोत्साही में यह और अधिक काम की प्रेरणा जाग्रत कर अपने उद्देश्य में सफल हो। हमारी कामना है कि विद्वन्मडली एव श्रोतार्थी शासन से सहयोग प्राप्त कर इस कार्य को और अग्रसर करें तथा भाषा की इस नष्ट होती हुई शक्ति को अविलम्ब बचालें।

आश्चर्य का विषय है कि इस ओर अब तक न जाने क्या हमारे विद्वानो का ध्यान नही गया है। उनको लोकसाहित्य एव लोकभाषा की चर्चा अब भी खटकती है। परन्तु इस सम्बन्ध में डा० ओमप्रकाश गुप्त का विश्वास है कि "वह दिन दूर नहीं है जब कि इन मुट्ठीभर पुराने किताबी कीड़ों की इस प्रवृत्ति के विरुद्ध क्रांति होगी और सवत्र जनमत का बोलबाला होगा। भाषा का जो रूप उस दिन हमारे सामने आएगा, वही हमारी राष्ट्रभाषा बनेगी"।[1]

प्रस्तुत सकलन इस प्रकार हिन्दी में देर से चले आते हुए एक बड़े अभाव की पूर्ति है। यह 'मुहावरों और लोकोक्तियों' पर लिखी गई पुस्तकों से भिन्न है।

पिछले सभी सकलनों की भाँति इसमें सामग्री की पुनरावृत्ति कर कलेवर-वृद्धि का प्रयास नहीं किया गया है। न देशज मुहावरों के नाम पर उन सब का सकलन ही किया गया है, जो परिनिष्ठित साहित्य में स्वीकृत हो चुके हैं। इसके विपरीत इसमें सग्रहीत सब वाक्पद्धतियाँ और लोकोक्तियाँ नई है। ये सीधे इस प्रदेश की जनता के मुख से प्राप्त की गई हैं। इनमें से अधिकाश ने अभी नगर की वायु अपरिचित है। वे अब भी अपने उद्गम स्थल की पावन माटी की सौंधी सुगध और वण लिए हैं।

इस पुस्तक में विधात्मक अध्ययन की सिद्धि के हेतु अध्ययन के विभिन्न दृष्टिकोण प्रस्तुत किए गए हैं। अपेक्षा की जाती है कि इस दिशा में भविष्य में होने वाला कार्य सर्वांगीण व्यापक दृष्टि वाला होगा।

इस प्रकार यह पुस्तक एक नई दिशा में नवीन प्रयत्न है। इसमें अनेक त्रुटियाँ और दोष होंगे किन्तु अच्छाई भी एक है कि इसमें सकलनकर्ता व्याख्याता का निष्कपट सद्भावपूर्ण प्रयास सम्मिलित है।

पुस्तक का नाम कौरवी—वाकपद्धति और लोकोक्ति कोश रखा गया है। हिन्दी में यह एक साहसिक प्रयास है। सामान्यतया वाक्पद्धति के स्थान पर अब तक मुहावरा प्रयोग मिलता है लेकिन लोकवाणी से सहज स्फुरित मे अनुभव तरगें अपनी अभिव्यक्ति में तो असाधारण हैं ही साथ ही अपनी

[1] मुहावरा मीमांसा पृ० ३८६।

सभविष्णुता म भी बजोड हैं। अत इनकी गरिमा के अनुरूप नया नाम देने का यह प्रयास किया गया है। आप्टे ने अग्रेजी Idiom के लिय एक नाम यह भी सुझाया है। Proverb के लिये लोकोक्ति सवथा समीचीन प्रयोग है अत इसको उसी रूप म स्वीकार कर लिया गया है।

इस पुस्तक के प्रकाशन के पीछे छोटा सा इतिहास है। यह सकलन, जिस समय मैं मेरठ जनपद म अपना लोकगीत सबधी शोध काय कर रहा था, उस समय तयार होना शुरू हुआ। इसके पश्चात् जब उस काय से मुझे मुक्ति मिली तो मेरा ध्यान वाकपद्धतियो और लोकोक्तियो की ओर गया, जो मुझे लोकाभिव्यक्ति की एक बडी बलवती विधा जान पडी। लोकसाहित्य से मेरा अग अगज सम्बन्ध है। अत इस निष्कष के प्राप्त होते ही मेरे मन म मुहावरे और लोकोक्तिया के इस सकलन को और भी अधिक बढान की इच्छा उत्पन्न हुई। परन्तु समयाभाव और साधन-सपन्न न होने के कारण मैं इस ओर इच्छा रहने भी इससे अधिक जो आपकी भेंट है—कुछ न कर सका। सकलन के अनन्तर कुछ काल तक मैं निश्चेष्ट हो गया, क्योकि लोक-साहित्य म जिनकी सहायता सहयोग वाछित था उनको मैंने सवथा उदासीन पाया। यह बात और है कि कभी मनोरजनाथ वह इसकी कभी चर्चा कर लेते थ।

एक बार इस सकलन पर मित्रवर डा० हरीश शर्मा की निगाह पडी उन्होने जबरदस्ती मुझसे इस पर टिप्पणिया भी लिखवा ली और इसे शीघ्र प्रकाशित करने की योजना बना डाली। उस सब का परिणाम आपके समक्ष है।

मैं पुस्तक को लिखा लेने पर डा० हरीश का आभार तो क्या प्रकट करू, उनको बधाई अवश्य देना चाहता हूँ कि उन्होने मुझसे काम ले लिया। यदि उनका तकाजा न होता तो मेरे लिए यह कभी सभव न था।

प्रकाशन व सुदर मुद्रणाथ मुद्रक का आभारी हू। और अब सकलन सदभावना सहित स्वय को जनता जनादन की कसौटी के अपण करता हूँ।

—कृष्णचन्द्र शर्मा

कौरवी वाक्पद्धति

अ

अक्टी लगाणा —बताणा ।

कार्यसिद्धि के लिए कुछ चतुराई करना। काम बनाने वाली कोई युक्ति बतलाना। अकटी=सूक्ष्म अंक (मंत्र, तंत्र) तंत्र विद्या में अंकों का महत्व वर्णन किया गया है।

अंकस रखणा ।

कठोर नियंत्रण करना। पीड़ा देकर वश में रखना।

अंकस=अंकुश, हाथी को वश में करने की लोह की कील, जो उसके मस्तक पर धर कर महावत द्वारा दबाई जाती है।

अंग की कमाई ।

कठिन शारीरिक परिश्रम से प्राप्त धन।

प्रयोग—खेती की कमाइ किरसाण के अंग की कमाई है।

विशेष—इसी संदर्भ में बीसों नुहां की कमाई।

नुहां=नाखूना।

अंग लगणा ।

शरीर-पुष्टि में सहायक। खाद्यान्न का रस बनकर शरीर को शक्ति एवं स्वास्थ्य देना।

प्र०—पाउभर बदाम खाणे मे कोई बात्त नईं अंग लगाळे जिब है।

अंगली (उ) ठाणा ।

निर्देशपूर्वक दोषारोपण करना अपवाद करना लाञ्छन लगाना। (चरित्र विषयक)

वि०—सामान्य से विशिष्ट को पृथक् करने के लिए तर्जनी अँगूठे के बराबर वाली उंगली द्वारा संकेत किया जाता है।

अंगली करणा —कुचेडना ।

परेशान करना। किसी काम अथवा वस्तु को बिगाडने के लिए हाथ डालना।

अंगा रोट्टी ।

दीन भोजन। उपलों की आग में दबाकर बनाई गई मोटी छोटी रोटी। निर्धनता अथवा उपेक्षा सूचक भोज।

अंघाई काटना, छेतणा —तोडना ।

-अनिच्छा प्रदर्शन। (व्यवहार विषयक) तृप्त भाव से उपेक्षा करना।

(भोजन सम्बन्धी)

अधे की आंख, —लकड़ी, —का ढोल।
निराशा म ज्योति (आशा, बल)। असहाय का अवलम्ब। सही हो जाने वाला अनायास अनुमान।

अडा छोड़ना —सेना।
जेठ मास की अथवा अत्यधिक गर्मी की दोपहरी जब कहते हैं चील अडा देती (प्रसव करती) है। किसी की बहुत सार-सभार करना, अनिगम प्रेमजनित सुरक्षा का प्रदान।

अकल छांटणा, —फिरणा —मारी जाणा —के पीछे लट्ठ लिए फिरणा।
चतुराई दिखाना। मति-हीन होना। विवेकहीनता। अधिक चातुरी से दुखी, मूर्खतापूर्ण काय करना।

अकल से पदल।
मूर्ख समझ-बूझ न रखने वाला।

अग्गास के ताळे तोडना।
ताळे=तारे।
असम्भव काय का साहस दिखाना। छिपाकर ऊँचे पर रखी किसी वस्तु को सायास हस्तगत कर लेना।
प्र०—आज काल के बालका की कुच्छ ना पुच्छो सिग अग्गास के ताळे तोड।

अपणी धुगाना, —छादणा हाकणा।
हठवादिता। औरो से पृथक बात का दुराग्रह। अन्य की उपेक्षा कर अपनी बात का पुनर्वार कथन।

अफीम उतारणा।
नशा दूर करना। मद चूर्ण करना।

अपणा अपणा लहणा।
सबका भाग्य पृथक् सबकी प्राप्ति समान नही। (भाग्यवादिता का सिद्धान्त)

अम्बर मे थेगडी लाणा।
असम्भावित कर दिखाना कल्पना से अधिक साहस।
अम्बर=आकाश पट वस्त्र (रूपक)
प्र०—इसस जमाने की लमडी अम्बर म थेगडी लाव्वें।

अल्लम गल्लम।
(अलम् गप्पम)
निराधार ऊटपटाग, जो मुह म आए कह डालना। अखाद्य भक्षण—अस्वास्थ्यकर।

प्र०—वो तो अपणी अल्लम गल्लम बक ग्या, अब तू अर्थाए जा।
पहळे तो पेट्ट में अल्लम गल्लम भरले हैगा, फेर कहे द्व मरया।

अल्लाम फौंकणा।
अल्लाम=इल्हाम (दैवी प्रेरणा)। मनगढ़न्त अत्युक्तिपूर्ण कथन, असभावित वर्णन, गप्प। (लाक्षणिक प्रयोग)
प्र०—ओ नाई के भल्ला इतणा अल्लाम क्यू फाक्के ?

अलाई लेणा।
मुसीबत सिर धरना, अन्य पर पडने वाला सकट अपने ऊपर लेना रोग पालना।

असाढी के डळे।
कुछ उपयोगी न होना।
प्र०—स्हैर में धरे असाढी के डळे, यादमी ता ज्हां मिहणत करगा हैं ई कुसा खायगा।

असेब लगणा।
प्रेत-व्याधा। बालका (बडा वो भी) खोर, भपटा हवा का असर (भूत) लगना।
असेब=असेव्य।

आ

आंख भपणा, —लगणा, —लगाणा, लडाना, —फेरणा, चुराणा, —फोडना, —बचाणा —मारणा, —रखणा।
मरना, झपकी आना। प्रेम होना, नींद आना। किसी वस्तु पर वासनामय दृष्टि रखना, प्रेम (वासना) प्रकट करना। उदासीनता, लज्जा धोखा देना। उदासीनता। सकेत करना। कुचेष्टा, सावधानी, किसी वस्तु पर मोहमयी दृष्टि डालना।

आंखों की दमाण खिंचणा।
त्योरी चढना, टकटकी लगना।
प्र०—ओह उस रूप का के कहणा, देखैंगा मेरे माई तो आंखा की दमाण खिंच जागी। (शिराओं मे तनाव उत्पन्न हो जाएगा।) [रूपक]

आंख में सुअर का बाळ।
कृतघ्नता, बे मुरव्वत किसी के प्रति भी स्नेह एव दया भाव न होना।
प्र०—अजी उसतें तो किसी बात की उमन्द करणा बेकार है। उस्की आंख म तो सुअर का बाळ है।

आ बैल मन मार।

व्यर्थ झगड़ा मोल लेना किसी झगड़ी (सींगधारी) को लड़ने के लिए जबर दस्ती निमन्त्रण देना।

आ पड़ोसन लड़।

कलह प्रियता व्यर्थ रार उठाना।

प्र०—आ पड़ोसन लड़ड न लड़ मरी जुती जुती तो मारिए खसम क इस भांति लड़ाई का आरम्भ हो गया। [स्वभाव सूचक]

आखरी जोतणा उठाणा।

हर किसी को परेशान करना सताना अनुचित एव कठोर व्यवहार करना। आखरी=चरम सीमा। [नृशसतापूर्ण व्यवहार]

आग प फूस धरणा।

जले को और जलाना, उत्तेजित करना, हविष्य डालना।

प्र०—एक तो नुक्सान कर दिया और हमई बकूप (मूर्ख) बनाग्या है। आग प फस धरणा इसी कू कहैं।

वि०—फूस —शीघ्र जलने वाली वस्तु रखने स शीघ्र लपट उठती है।

आग फूस का बर।

स्वाभाविक शत्रुता।

प्र०—औरत मद कू तो आग फूस का बर है।

आग बबूला होणा।

अत्यधिक उत्तजित होना ताव खाना। [सादृश्य मूलक]

आडे त ऊठ कित।

यहा से कहा (भागता) उठकर जाना है। (आधार की अनिवार्यता का अनुभव) कहीं भी चला जा (विरक्ति एव ऊब का प्रदर्शन)।

आड=यहा (निकट)।

आबरू धेल्ला होणा।

कठिन अपमान मूल्य न रहना।

धेल्ला—ईस्ट इण्डिया क० ब्रिटिश राज्य म रुपय का १२८वा भाग तावे का छोटा गोल सिक्का।

प्र०—नमन वाग की रोट्टा ना दी तो म्हारी तो चार भाइया मां सब धेल्ला हो जागी।

वि०—वाग की रोटी—लडकी के विवाह म बारात क ग्राम-सीमा मे आने पर पहली ज्यानार (प्रथम भोज)।

श्राल करणा ।

(ट)ाल करना, विलम्ब लगाना किसी काय मे विघ्न डालना ।

श्राल=बालको की छेडखानी, उछल कूद, दगा मचाना ।

प्र०—श्रो चुप होज्या, घणी वेर त श्राल कर रया है ।

इ

इक्ड तिक्ड लगाणा ।

कुतर्क करना ।

इमली के पत्ते प डड पेलणा ।

श्रभावो म निद्द्वता काल्पनिक सुख म मस्त रहना । [व्यग्यात्मक]

इमान खाणा —खोणा —रखणा ।

धम की शपथ उठाना । नीयत बिगाडना, श्रधम काय करना । धम, ईमानदारी पर दृढ रहना ।

प्र०—श्राजकाल के लोक तो तणक बात्त पै इमान खा जा हैं ।

—श्रन्यायी तने उस्स वित्ते भर जमीन पै इमान खो दिया ।

—इमान रखणा सहज नी हैं । ऐसे श्रादमी को भौत कठनाई उठाणी पड ।

ई

ईतर होणा ।

सामान्य से भिन्न, पृथक स्वभाव, रुचि ।

प्र०—म्हारे बालक बडे ईतर हैं ऐसी-वैसी चीज कु हात्थ नई लगात्ते ।

ईत्तर=इतर, भिन्न प्रकार । [सपन्न रुचि द्योतक]

इधन होणा, —करणा ।

जलाने के योग्य, व्यथ श्रनुपयोगी वृद्ध जजर । नष्ट कर देना, विगाडना ।

प्र०—पहले कतक ठाठ हे श्रब तो तेरा ताऊ ईंधण हो रया है । उमर बी तो कतेक हुई ।

—रडुग्रा ल लिया हा सो दो दिण म इन बालका न इधण करके धर दिया ।

इधन=शुष्क जजर वृद्ध जलाने की लकडी जसा । श्रनुपयोगी ।

उ

उडणा —उडाणा —उडमूं करणा ।

शेखी बघारना इतराना । किसी बात को लापरवाही स टालना ।

गलत खबर फलाना, दोषारोपण करना (चरित्र विषयक)।
तरफ़दारी करना, पक्ष-समर्थन।
उड=ओर तरफ।
प्र०—सौक नणद सासू मिली, भर दिए उस्के काण।
मेरी उडिया मू करया भुन्टी बात पिछाण॥

उछल-कूद मचाणा।
अतिशय चचलता का प्रदर्शन, क्रीडा।

उत्तोके बजणा।
नाश के चिन्ह प्रकट होना कोई कार्य अयुक्त प्रकार से समाप्त होना।

उमर कटणा —करणा, —मरणा —लगणा।
आयु बीतना, कुछ करते अथवा कहीं रहते लम्बा समय व्यतीत होना। आयुष्मान् (आशीर्वाद)। आयु पूरी होना। विवशता कठिनाई से समय काटना। दीर्घायु होना। वृद्ध होना। किसी कार्य म जीवनकाल लगा देना।

उल्टे घडों पाणी मरणा।
असम्भव अथवा अयुक्त कार्य करना।

ऊ

ऊट के मूं मे जीरा।
आवश्यक्ता से न्यून वस्तु। स्वल्प खाद्य।
प्र०—पूरे सेर चूण मे पानी पडै तो कोइ बात हैं ना दो रोट्टी तो इस्कू ऊट के मूं में जीरा है।

ऊत होणा।
पागल (मूर्ख) बनना, नष्ट होना।

ऊत लगणा —सूझणा।
उत्साह होना। निरर्थक (हानिकर) कार्य की इच्छा होना।

ए

एक गूं क सत्तर गूं करणा।
गन्दी दिखाना एक बुराई की हजार बुराई।
प्र०—छोरे की उग बातों न क्यू एक गूं क

एक पाणी के ।
समान विचार, एक मत, सम बल ।
प्र०—दोणा चाचा भतिज्जे एक ई पाणी के हैं, दोणा एक सुर बोल्ले ।

एक लाट्ठी हाक्णा ।
समान व्यवहार (छोटे-बड़े म अ तर न करना) [अशिष्टता सूचक]

एकला चणा के भाड फोड्ड ।
एकाकी व्यक्ति कुछ उपयोगी कार्य नहीं कर सकता ।
अकेले व्यक्ति का कुछ बल (महत्व) नही ।
प्र०—जहा सात्त पाच की बात्त हो, ह्वाँ एकला चणा के भाड फोडदें ।

एड्डी रगड रगड कै मरणा ।
कठिनाई से प्राण निकलना, भारी तगी (धनाभाव) अथवा कठिन परिश्रम में जीवन व्यतीत होना ।
[प्राण प्रयाण काल की व्याकुलता —सादृश्य]

ओ

ओला करणा ।
पर्दा करना । (लज्जा सूचक) ।
वि० —ओल्ला गात्ती—स्त्रिया का वक्ष ढकने का वस्त्र । लाज की रक्षा के लिए स्तन जिनमें काम का निवास बतलाया गया है, का छिपाना आवश्यक है । किसी कवि के अनुसार नारी चुचुक "विज्जुका के बदन हैं ।'

ओल्ली-सोल्ली बकणा ।
अविचार-पूवक जो मुह म आए, वही वह डालना । जल्पना (निरथक बकवाद) करना । [आक्रोश अथवा व्यग्य वाणी]

ओंधी बात्त करणा ।
विपरीत, अयुक्त कथन सामान्य से भिन्न व्यवहार करना ।

ओंधे मूं गिरणा —सिर का होणा ।
मुह के बल गिरना, असहाय, असफल ।
(विपरीतता का भाव । सफलता के स्थान पर हताशकर असफलता होणा ।)
प्र०—गा म उस्ने बडी आस्वरी जोत रावखी राम सबने देक्खें इब ओंधे मूं गिरया कै नीं ।

मूग उत्त बुद्धि (जिसकी विपरीत काय म बुद्धि हो) । वहद ।
प्र० — जो औधे गिरे व हा व गिममाले नं मानें ?

क

कंटक होणा ।
मुगदार्थ बाधक व फकूग ।

कटकाण लगणा ।
कुसमय वतित होना कठिन (कष्टकर) गमय का पदना ।

कचुम्मर काढना ।
अत्यधिक भार डालकर म तरग कर या मार्ग्गग । भारी बोझ से पसलियाँ या बाहर निकालना । [साम्यमूलक]

कटलणी होना ।
तज होना । रूप शृङ्गार अथवा कान म द्वारा किमी स्त्री का पाकामक होना अप्रियकर अथवा अप्रियवादिनी होना । [साम्यमूलक]

कढ़ी खाणा, करणा ।
मृत्यु अभिशाप । [लोक प्रथा सबंधी]
(हिंदुमा म मत्यूपरात एकादशा (११वें दिन) कढ़ी बनाकर ब्राह्मण को खिलाई जाती है ।)

कनसुम्रा (ए) लेणा ।
दूसरे लोग जो बात करत हो उनको छिपकर सुनना अपने को गुप्त रखकर दूसरे के रहस्य जानने का यत्न ।
(प्र०—कुच्छ लोगा की भात हो—दूसरो के कनसुग गत फिरा जा ।

कनागत करणा ।
अभिशाप ।
कनागत—आश्विन कृष्ण पक्ष म मतका के नाम पर हिंदू लोग ब्राह्मण भोजन व दान की व्यवस्था करते है ।
कनागत=कण आगत ।
किंवदन्ती है कि दानी कण इन दिनो मे १५ दिन अपने पूवजो की तुष्टि के लिए पृथ्वी पर आते हैं । इसी को पितृ पक्ष कहते हैं ।

कनूनबाज होणा ।
कुतर्की मीन मेष निकालने वाला आलोचक वृत्ति ।

कन्नी काटणा।
कतरा निकल जाना। [भय अथवा लज्जावश]

कन्हेर लेणा।
दूर से आनेवाली आवाज़ पर ध्यान देकर सुनने का यत्न किसी प्रत्याशित बात की टोह लेते रहना।

कफन खसोट होणा।
दूसरों की हीन दशा में भी उनका सर्वांग धनापहरण करने वाला त्याज्य धन को सायास झपटने वाला। [अत्यंत लोभी, लालची]

कबड्डी ठोकणा।
बहुत तेजी से भागना। [एक भारतीय खेल के सादृश्य में]
वि०—कबड्डी में खिलाडियों के एक दूसरे के प्रतिद्वन्द्वी दो वर्गों के लोग एक दूसरे के पाले में तेजी से आते जाते हैं।

कमर ठोकणा।
समर्थन देना शाबाशी।

कम्पनी का बळद
सैनिक जवान साधारण व्यक्ति जिनकी आवभगत की विशेष चिन्ता न हो।
[ईस्ट इंडिया कं० के संदर्भ में]
प्र०—गाळ में निमक जादे होग्या तो के है सब कम्पनी के बळद खा जागे।

करम फोड, —ठोक, —हीन।
दुर्भाग्यकर। वह व्यक्ति जिसके आचरण से अन्य व्यक्ति दुखी हों। अभागा।

करम में छींट लगणा।
दुर्भाग्य उत्पन्न होना कलंक लगना सौभाग्य में एक ही दुर्घटना।
[बाह्य कारण से दोषारोपण]

कान कतरणा, —करणा —भरणा —अमेठणा —तत्ता होणा, —पूंछ फटकारणा।
अति चातुरी दिखाना धोखा देना। लज्जा करना ध्यान देना सुनना। पिशुनता पुनर्वार किसी की बुराई करते रहना। दंड देना सावधान करना। रोग ज्वर होना। सावधान होना तत्पर होना।

काणा खोबड़ा।
एकाक्षी असुन्दर। (शरीर की बनावट के विषय में जड चेतन सभी के लिए प्रयुक्त)

काणी कौड्डी।
धन का नितांताभाव। [निर्धनता अथवा अनुपादेयता से संबंधित]

किस का खोया फिर ।
किसी का समथन व बल प्राप्त कर आत्मप्रदशन करन वाल के प्रति ।
[गव खडित करन के लिए चेतावनी]

किस खेत का बथुग्रा ।
किस स्थान की तुच्छ उत्पत्ति ।
वि०—बथुग्रा खेत म स्वत उग आन वाली एक क्षारयुक्त घास, जो प्राय बेचने पर कोई बड़ा मूल्य प्राप्त नही करती । [ग्रमहत्वपूण व्यक्ति]

किस घुण स खाया ।
क्या रोग ग्रथवा चिन्ता लगी ।
प्र०—ग्ररे भई तू किस घुण ने खाया, जु सूखता जा है ?

कील काँटे स दुरस्त ।
पूरी तरह लैस । [शृङ्गार प्रसाधन, ग्रथवा युद्धशास्त्र से सम्बन्ध]

कुट्टा करणा ।
छोटे छोटे टुकडो म करना बोलचाल बद करना (लाक्षणिक) पृथकी भाव ।

कुदाण मचाणा ।
खेलते फिरना उछलकूद करना ।

कूढ लगणा ।
कूडा (मल) इकट्ठा करणा व्यथ वस्तु सग्रह ।

कोख मारणा ।
मारते मारते ग्रचेत करना गुप्त मार देना ।
प्र०—फेर बोळ क देख, कोख न मार द्यू ।

कौए बोलणा ।
विनाश सूचना, ग्रपशकुन ।
वि०—किसी घर पर उल्लू व चील चमगादड का बैठना एव कौग्रा का बोलना ग्रशुभ सूचक माना जाता है ।

कोट्टे करणा ।
किसी वस्तु का वचकर पक्का बनाना ।

कोल्ले झाँकणा —सेल्ले करणा ।
उद्देश्यहीन जहाँ-तहाँ घूमना । [ग्रभद्रता]
गृह के मुख्य द्वार के दाएं-बाएं पाश्व पर शीतल जल डालना ।
वि०—रोगशान्ति ग्रथवा उत्सवो क समय देखी जाने वाली लोक प्रथा जिससे सुख शान्ति की कामना की जाती है ।

ख

खटराग करणा।

किसी काय को अनावश्यक विस्तार (विलम्ब) देना, उलझन अथवा ऊब दिलाने वाला काम करना।

खट=षट, खटराग—संगीत के मूल राग छ हैं—

भरव कौशिकश्चैव हिन्दोलो दीपकस्तथा।

श्रीरागो मेघरागश्च रागा षडिति कीर्तिता॥ [भरत]

प्र०—दस दाळ रोट्टी मतेरी ई तन्न ता बीस रकाने वणवाके वडा खटराग कर दिया। जल्दी काम निपटै वोई ठीक है मन्नै खटराग करणा नी भाता।

खडखडी का साड होणा।

स्वय काय क्षम न होना तथा दूसरे को भी वह न करने देना। पुंसत्वहीन।

वि०—खडखडी मेरठ जिले का एक ग्राम। कहते हैं यहाँ एक साड था जो बूढा होने के कारण न तो गायो को स्वय गाभिन कर सकता था, तथा न किसी दूसरे साड को उनके पास आने देता था, और उनको लडकर भगा देता था। इसी घटना से यह मुहावरा प्रचलित हुआ है।

प्र०—खडखडी का साड सेएँ न सेग्रण दे।

खडे ऊँट की गांड चाटना।

बहुत लम्बा होना, मूख (पूर्ण वय और आकार प्राप्त।)

प्र०—तू इतणा बी नी जाणता भाई खडे ऊँट की गाड चाट्टण लम्बा होर तरा इब के बढैगा!

खाक चाटक बात कहणा।

सकोच-पूवक मत कथन विनम्रतासहित बात कहना।

प्र०—म्हारे पडोसी क सब बालका के मास्ता लिकडी, पर मैया खाक चाट के बात कहूँ अपणे तो सारो दिण याई घूमो करै।

खाट खडी करणा।

नाश करना ईर्ष्यावश किसी को हानि पहुचाने का प्रयत्न अशुभ कम। (लोकप्रथा)

वि०—हिदुग्रा मे मृतक की खाट घर के बाहर उल्टी खडी कर देते हैं।

खाल काढणा।

अतिशय शारीरिक कष्ट देना।

—बाल की खाल काढना, बहुत मीन मेष निकालना।

[रहस्य प्राप्ति प्रक्रिया]

तितली उड़ाना ।
उपहास करना । [मनोरंजन अथवा ईर्ष्यावश]

गुररी खाट प सोणा ।
उचित विश्राम न मिलने से उत्तेजित । सुख शय्या प्राप्त न होने पर दूसरों के ऊपर मन्ताप उतारना ।
प्र०—क्यूं भाई मुझ तैं क्यू दरभ रह्या है कहीं गुरली खाट प सोण आया ?

गूड काटणा —म करणा ।
गत जीतना अपनी ओर मिलाना सगठन करना ।

खून खौलना —उतरणा —करणा खराब्बा —पाणी होना —तैं भारी।
उत्तेजित होना क्रोध म आना रोष म आना (वीभत्स मुद्रा) अतिशय क्रोध देना वध करना ऐसा झगडा जिस म भारी चोट लग अथवा मृत्यु हो जाय, सहसा निर्बलता का अनुभव जो किसी घातक भय के कारण हो अधिक निर्दयता प्रकट करने वाला ।

खेत उजड़ना, —उजाड़ना —खाणा —रहणा।
कृषि नष्ट होना —करना सपूर्ण सपत्ति का अनधिकारी द्वारा उपभोग, परास्त होना ।

खेद मारणा
दौडा दौडा कर थका देना भगा देना ।

खोज मिटणा —लिकाड़ना ।
जड मूल स नष्ट करना शोध करना ।

खोपडा खाणा ।
देर तक बात करते रहना अथवा एक ही बात का पुनर्वार कथन, जिसस ऊब हो ।

खोटा रस्ता —आदमी —खोटी बात —रस्ता खोटा करना ।
कुपथ बुरा मनुष्य, बुराई विलम्ब करना ।

खार करणा ।
भूत प्रेत प्रभाव—जिसमे शारीरिक कष्ट यथा पट, दात, आंख आदि मे भारी पीडा हो ।

खोर करणा ।
किसी पशु अथवा आदमी का किसी एक स्थान पर बहुत उछल कूद करना, पर पटकना आदि ।

खोव्वा खिडावा ।
पतृक सपत्ति को नष्ट करन वाला । खिडाना=अश अश कर छितराना ।

ग

गगाजली उठाणा —हाथ में रखणा ।
शपथ लेना शपथ दिलाना ।
(गगा भारत की पावन पूज्य नदी है जिसकी शपथ सत्यता प्रमाणित करने करने के लिए ली जाती है । गगा की झूठी शपथ लेना भयकर पाप माना जाता है ।)

गगा मे जौ बोणा ।
पुण्यकाय करना किसी नेक काम मे सहायक होना परोपकारी व्यक्ति ।
प्र०—गरीब वेमार की मदद कर यू सिमझ तने गगा म जौ वो दिए ।
वि०—जौ के स्थान पर धान बोना भी प्रयोग किया जाता है ।

गऊ के जाए ।
सरल निष्कपट व्यक्ति । दीन दुबल, जो चालाक न हो । मूख ।

गऊ गार में फसणा ।
सीधे सच्चे व्यक्ति का विपम स्थिति में पडना ।

गज्झर गाणा ।
एक बात को पुनर्वार कहना । आवृत्ति, जिससे ऊब हो ।

गदवद मारणा ठोकणा ।
शीघ्रतापूवक भाग जाना ।

गधों पे हल चलाणा ।
दुर्भाग्य पूण काय विनष्ट कर घृणा प्रकट करना ।
वि०—प्रतिकार की यह रीति चगजखा और तमूर के समय म प्रचलित हुई थी ।
—एच० एम० इलियट

गल पुच्चे तोडना ।
स्त्रियो के प्रति असभ्य, वासना जनित व्यवहार । (कपोल एव स्तनो को खींचना ।) Eve Teasing

गला भरणा । पडना ।
—गद गद स्वर आवाज रुकना ।

गल्ले म हड्डी डालणा —भटकणा —पड़ना ।
किसी प्रलोभन बात का प्रदर्शन करना (निलज्जता), कठिनाई या बाधा जो न टाली जा सकती हो, किसी व्यक्ति अथवा झंझट का सिर लगना ।

गले चपेकणा —पड़णा, —घलणा ।
किसी व्यर्थ व्यक्ति, वस्तु या किसी को दायित्व सौंपना । चिपटना (अनिच्छित वस्तु व्यक्ति घटना) तंग करना ।
वि०—प्रथम प्रयोग कपट चतुराई तथा द्वितीय जिसके साथ लगा जाय उसके महत्त्व को देखकर कहा जाता है ।

गांड पटना —पाड़ना —लाल होणा —जलना —मे गिल्ली करणा (ठोकणा), —में गू (गोबर) होणा ।
भयभीत होना । आतंकित करना ईर्ष्या होना । परेशान करना । सामर्थ्य होना । (मलेर कलम, आयुर्वेद) ।

गांठ करणा —काटणा —खोलणा —मरणा, —डालना ।
धन-कमाना, सुरक्षा एवं स्मृति में कोई वस्तु अथवा बात रखना, धोखा देकर धन लेना किसी रहस्य अथवा झगड़े को सुलझाना बेईमानी अथवा छीनाझपटी से धन एकत्र करना वैमनस्य उत्पन्न करना ।

गाजरों मे गुठली रलाणा ।
मूल बात से क्षेपक को महत्व देना । स्थिति को नीरस बनाना । क्षेपक, अवान्तर प्रसंग ।

गाड्डी ते कटणा बाधणा ।
गति मंद करने का प्रयत्न करना (ऐसी स्थिति उत्पन्न होना ।)

गिल्ला करणा, —मानना ।
शिकायत करना, रखना ।

गुल चबाणा, चिचोड़ना ।
अन्य की उपभोग की हुई वस्तु को भोग करना । गुल=जला हुआ तम्बाकू ।
प्र०—रे चिलम ता रमुआ ठंडी कग्गया, तू के गुर चाब रह या है ।।

गुल्लड़ तपकरणा, —फोड़ना ।
जल्दी-जल्दी बात करना । अस्फुट वाणी । गदगी (बुराई) प्रकट करना ।
वि०—गूलड का फल तोड़ने पर बहुत से भिनगे निकल पड़ते हैं ।
[साम्यमूलक]

गुलजार करणा ।
आनन्द विस्तार । शोभनीय सरस एवं वैभव सम्पन्न बनाना ।

गुल्लक मे धरणा ।
किसी वस्तु को सुरक्षित (छिपाकर) रखना, सग्रह करना ।

गू करना, —खोरी करना, —बखेरना, —बटोरना (समेटना) ।
अपवित्र एव अस्वच्छ करना, खुशामद करना, अत्यधिक सेवा करना । गदा करना गदी बात फैलाना । मल उठाना (रोगी आदि की सेवा के समय) ।

गोला लाट्ठी देणा ।
कठिन दड । यवन बादशाहो के समय म दिया जाने वाला एक प्रकार का दड ।

घ

घडों पाणी पडना ।
अतिशय लज्जानुभव ।
प्र०—मुफ्त झुठ बोलग्या पिच्छे जिब मने दोणा का मुकालबा कराया फेर घडा पाणी पट गया ।

घर करणा, —जोडना, —बनाणा, बनावा ।
स्थान बनाना (मन म), प्रभाव डालना । गृहस्थी का सामान एकत्र करना । गृहस्थी को दृढ सपन्न रूप देना । सना घर को व्यवस्था एव सम्पन्नता प्रदान करने वाला व्यक्ति ।

घर की खाड किरकली ।
घर की अच्छी चीज भी बुरी लगना, उसको महत्व न देना । [निरादर भाव] अति परिचय से उपक्षा ।
घर की खाड किरकली मेरे राजा !
बाहेर का गुड मीठा ।
(घर की रूपवती नारी की उपेक्षा और परकीया असुन्दर का मान)

घर की घूस ।
सदव घर के भीतर रहने वाली स्त्री (पुरुष) । घर का सामान लजाकर अन्यत्र जमा करने वाला व्यक्ति । इधर का माल उधर करने वाला ।

घर घर होडणा ।
एक घर से दूसर घर निष्प्रयोजन घूमना ।
माहिण्डयन भटवीतेऽन्वी ।
घर घर होडण की पडी तर्भ बाण बण्वार ।
सेगे हारा माग्या, इब सज यो निनवाड ॥

घर घाट।

युतिया दावपेंच। घर और बाहर (स्थान सबधी) धोबी का कुत्ता घर का न घाट का।

घर बठणा।

कराव करना। पति के मरने के पश्चात् दूसरे व्यक्ति से सम्बन्ध कर लेना। व्यवसाय रहित होना।(ठाली) होना। कराव=हरिजनो एव जाटो म पति के निधन होने पर कराव (उपपति का वरण) करने का रिवाज है।

घूस लगणा।

घूस नाम के जानवर का घर म आने लगना। किसी ऐसे व्यक्ति का घर म आना जाना जो छिपाकर माल बाहर ले जाय। [सादृश्य] घूस—चूहे की जाति और उसी रूप का एक साधारण बिल्ली के बराबर जानवर जो एक घर से दूसरे घर मे माल (विशेषकर अन्नादि) पहुचा देता है।

च

चक्कू लगणा, देणा।

हानि उठाना हानि करना।

[आघात सादृश्य

चकर डड फिरणा।

निरन्तर चारो ओर घूमना। चक्रदड (कुभकार का)

[सादृश्यमूलक]

चकाचक।

भरपूर आकठपूर्ण।

चकिया चाळ।

अतिशय चर्चा। किसी अफवाह का चारो ओर फलना तथा उस पर आलोचना होना।

चबड चबड करणा।

अधिक बोलना अल्प वय व्यक्ति का अयुक्त बात करना। [अशिष्टता सूचक]

चमक चौदस बणना।

दृष्टि म खटकने वाला अधिक साज श्रृगार करना निज को अधिक सुदर प्रकट करने का प्रयास करना सौदय वृद्धि के लिए श्रृगार प्रसाधन।

[व्यग्यात्मक]

वि०—पूर्णिमा की तुलना म चतुर्दशी का कम उजियाली होने के कारण महत्व कम है। फिर भी वद्ध मान कला होन के कारण उसको मान दिया जाता है। मुसलमानी काव्य म चौदहवी के चाँद को बडा सुन्दर कहा जाता

है। कदाचित् उनका तात्पय चौदहवी से पूर्णिमा ही का है, क्योंकि उनके यहा गणना द्वितीया से ग्रारभ होती है।

चलती का ना गाड़ी।
उपयोगी वस्तु का मान। सम परिस्थिति का सामान्य दष्टि म महत्त्व।

चाई-माई करणा।
ग्रल्प व्यय से काय साधन। फेरे फेरना। विवाह। वृत्ताकार एक दूसरे का हाथ पकड कर उक्त शब्द कहते हुए घूमना। [बालका का एक खेल]

चाक्की मे कौळ।
ग्रति न्यून मात्रा। कौळ=कवल।

चार दिए की चमार चौदस।
ग्रल्पकाल का शोरगुल—उत्सव, थोडे दिन का हुडदग।
वि०—किसी स्थान पर एकत्र समूह का ग्रश्लील बातचीत एव व्यवहार का ढग, जिसमे हठवादिता दीख पडे।
प्र०—के चमार चौन्स लगा राखी है। इब चुप बी होज्जा, लोग सुणेंगे के कहेंग।

चारों राह मोक्ळे होणा।
सब माग खुले होना। कोई राक टोक न हाना। पूण स्वछदता। [व्यग्य]
प्र०—उस्नें कोई कहे क उस्णै तो ग्रपणी चारू राह मोक्ळी कर राखी हैं।

चार हात्त होणा।
ग्रतीव पराक्रम प्रकट करना। किसी काय म सहयोग प्राप्त होना।
प्र०—छुन्कणी ई घडा भरक लायगी, बस उसी के चार हात्त ग्रँ, ग्रोर कोइ यो काम नी कर सक्ना ?
—जिस काम मैं चार हात्त लगँ जळदी निमटैई है।

चालबाज्जी करणा।
धोखा दना।

चाळा होना, —काटणा।
ग्राश्चयजनक, दुखद घटना ग्रनहानी। द्विरागमन।
कष्ट पहुँचाना, कुकृत्य से दूसरा को मानसिक पीडा पहुचाना।
वि०—विवाहोपरान्त वधू की माइके से विदा। इसके बाद ससुराल माइके ग्राना-जाना सामान्य रूप म होने लगता है।

चिड़िया साक मे बठणा।
सुसम्बद्ध रूप म कार्यसिद्धि काम पूरा हाना।

वि०—गाडी की धुरी के कीला पर ढंग से कीला फँसाना जिससे पहिया यथा स्थान रहकर निरन्तर घूमा करे।

—योनि में लिंग का पूरी तरह फँसना जिससे रति काल में आनन्द एवं दम्पत्ति के जीवन में सामरस्य उत्पन्न होता है। [मनोवैज्ञानिक]

खिज्यो सगणो —खिसियाणो।

किसी बात को सुन देखकर उत्तेजित होना। बालकों का एक रोग जिसके कारण पेट में छोटे-छोटे सफेद डोर जैसे कृमि उत्पन्न हो जाते हैं। इनके कारण बालक बहुत रोता है।

उत्तेजनावश गला फाड़कर (अवरोधित बारीक स्वर) में ऊँचा तेज बोलना।

चित्तर विलाणो।

अतिनाभिनय। जो दशा न हो उसको आडम्बर-पूर्वक प्रकट करना। यथा अटी निकलना रोगादि का प्रदर्शन कर अन्य को प्रभावित करना।

[प्रभाव एवं सहानुभूति के हेतु]

प्र०—बोहडिया कू बुखार सुसार कुच्छ ना है, लो'डे कू चित्तर दिया रई है।

चिलम भरणो।

चाटुकारी करना लाभ के लिए सेवा। तेजोहीनता (अपौरुष) का प्रदर्शन।

चिल्ल-पौं मचाणो।

अनावश्यक शोर गुल विरोधी स्वर जिसमें किसी आततायी का विरोध प्रकट हो।

चीं बोलणो, —करणो।

किसी भी अतिशय भारस्वरूप निबलता का प्रकट होना परेशान हो उठना। विरोधी असंगत स्वर उठाना।

प्र०—सबते के आगे कोई चीं नई करता।

चीं चीं करणो।

आर्त पुकार। निर्बल स्वर में पीड़ा अथवा भार की अतिशयता का प्रदर्शन करना। दबे हुए स्वरों में विरोध करना। असंगत वचन।

चीकना घड़ा।

ऐसा व्यक्ति जिस पर मार और दुलार—किसी का प्रभाव न हो। पक्का बेशर्म।

वि०—चिकने घड़े पर पानी नहीं ठहरता। इसी भांति निलज्ज व्यक्ति पर भी कोई प्रभाव नहीं होता।

प्र०—म्हारे बालक तो चीकने घड़े हो रये हैं। इनपे मार पुचकार किसी का असर नई होत्ता।

चीळ म डा छोड़ु ।
भरी दोपहरी । अत्यधिक ताप का समय । मध्याह्न ।

चीळ घेसु म्रा मास ।
चील के घासलें म मास। किसी ऐसे स्थान पर वस्तु की कल्पना जहा उसकी सदव कमी अनुभव हाने के कारण वह न मिल सके । [अभाव की स्थिति]
वि०—चील मासाहारी पक्षी है अत मास होगा ता वह स्वय उस खा लेगी। इस कारण उसके घासले म उसकी खोज व्यथ है ।

घुत्तड पीटणा, —पिटवाणा ।
हष प्रकट करना । (Hip Hip Hurrah !) गुदा एव योनि छेदन कराना। किसब (पेशा) कमाना । [वेश्या वृत्ति] ।

घुळाये खुदाणा ।
असगत, अकीर्तिकर काय करना ।

चुल्हा न्यारा घरणा करणा ।
सम्मिलित परिवार से पथक होना । सबसे असम्पृक्त होना ।
प्र०—आजकाल तो असाई रवाज है बहू आई क चुल्हा अलग कर लिया ।

चु हे न्योत ।
किसी परिवार के समस्त सदस्या का भोज निमन्त्रण ।
वि०—इसी को चून न्योत' भी कहते हैं ।

चूमा चाट्टी करणा ।
अतिशय मोह, अथवा वासना का प्रदशन । [पशुवत]
प्र०—कल नानी क तें लौन्डा आया है जिबी मू मा ने चुम्माचाट्टी लगा राखी है ।

च च करणा ।
लगातार विरोध करना । [किसी असगत व्यक्ति अथवा काय को देखकर] ।

च मैं करणा ।
बालका का एक खेल जिसम वह एक दूसरे के दोना कान पकड कर आमने सामने बठे आगे-पीछे हिलते रहते हैं । विरोधी स्वर निकालना ।

चोखा काम चलणा ।
व्यवसाय में उन्नति । सपन्नता ।

चोर की माँ ।
दोषी, अपराधी के समथक ।

चोर चोर मुसेरे भाई ।
कुकर्मियो में मित्रता सहज । दूषित व्यक्तियो म निकटता स्वाभाविक ।

चोरी चोरी ।
छिपकर । पीठ पीछे । अनुपस्थिति म । बिना जताए बताए प्रयुक्त वाय ।
प्र०—सासू की चोरी चोरी जिज्जा तें मिलए गई ।

चौंडडा करणा ।
केशविन्यास । चौंडडा=चूडा ।

चौड़ा करणा ।
सवनाश करना । सवस्व अपहरण ।
प्र०=उसके घर म तो चोर चौडडाई कर ग्य कुच्छ नी छोडडा ।

छ

छप्पर उठाणा —गेरणा ।
भार ग्रहण करना दायित्व लेना, किसी विषय का विज्ञापन करना । भार दूर करना ।

छकडी भूलना —भुलाणा ।
सपन्नता का गव नष्ट होना ।
बडप्पन का अभिमान (बल का भी) चूर करना ।

छड़ा होना ।
अकेला होना । (अविवाहित के लिए भी उपयुक्त)

छलावा होणा ।
शीघ्रतापूवक दृष्टि से ओझल हो जाना ।
वि०—छलावा=प्रेत ।

छठी खाणा, —का दूध याद आणा ।
जन्म का ज्ञान निकट परिचय म होना ।
वि०—सम्बन्धी और निकट मित्र बालक के षष्ठी सस्कार म सम्मिलित होते है । अत उन्ही को उसके जन्म जीवन का परिचय होना स्वाभाविक है ।
निबलता का अनुभव होना ।

छमासा बणना ।
भोलापन प्रकट करना, अबोधता का प्रदशन क्रीडामय ।
प्र०—मोट्टे इबी छमासा बणे जाहै मरे यार हागी मूछ का होग्या ।
[प्रौढ होकर शिशुआ जसा व्यवहार]

छाह करणा ।
सुख देना ।

छाह छूणा ।
बराबरी करना [नकारात्मक रूप मे प्रयोग]
प्र०—रामदेई तो इत्ते रूप गुना कीरथी कै उसकी कोइ छाह बी नहीं छू सकै ।

छाह बठणा, —उठणा ।
आश्रय लेना, सुरक्षा सरक्षण समाप्ति ।

छाण प फूस न होणा ।
निबल धनस्थिति, अति दीनता ।

छाती पै दाल दलणा —निमक मलणा —स्याप लोटणा, —फटना, —ठोकणा —तानणा ।
साथ रह कर कठिनाई उत्पन्न करना, शाबाशी प्रोत्साहन, समथन द्वेष करना मोह अथवा ईर्ष्या का प्रदशन उत्साह अथवा साहस दिखाना, किसी काय के लिए बल सग्रह को तत्पर होना ।

छाती रहणा ।
छिपा या गुप्त रहना, रहस्य बना रहना ।

छाती होणा, —में बाल होणा, —मे दम होणा —कडी करणा —कूटणा ।
उदारता साहस तन बल, (धन बल भी) हिम्मत करना, साहस बटोरना, विलाप करना ।

छिकणा ।
तृप्त होना, भर पट खा लेना ।

छिमा होणा ।
दृष्टि स ओझल हो जाना, छिप जाना ।
प्र०—के बताऊ लोंडा असा सताग्ग है कै मैं काम बता बी नीं पाया को दखत २ छिमा होग्या ।
छिमा=प्राच्छन्न ।

छींकते ही नाक काटणा ।
कार्यारम्भ ही म रोक-टोक बाधा ।

छींट होणा ।
मान सौंदय नष्ट करने वाला, तनिक सी बात मे बिगड उठने वाला ।
प्र०—इस लमडी को देखो किसी छीट है मन्न कुच्छ कह्या बी कोन्या इसतें जु मेरे लत्ते पाडन लगी । [स्वभाव की आलोचना]

छुई मुई होणा।
कोमल। तनिक स्पर्श सहन करने में असमर्थ
वि०—छुइ मुइ का पौधा छूते ही कुम्हलाने लगता है। [सादृश्य]

ज

जजाळ लगाणा। —मे फसना —काटणा।
विषम झंझट में पड़ना। झंझट दूर करना किसी ऐसे व्यक्ति से दूरी कर लेना जो कठिनाइ मे फसा दे अथवा जिम्मदारी से बरी होना।

जड पाडना —काटना, —मे मट्ठा देणा।
उन्मूलन सवथा नष्ट करने का प्रयास हानि करना।

जणम मे थूकणा।
घृणा करना गरत दिलाना। गरत=लज्जा।

जनम देणिया सात्थी।
जीवन साथी सदा सहायक।

जहर घोलणा।
विद्वेषकारी वचन बोलना।

जाघ दिखा क रखणा।
लोलुप व्यक्ति को लालच देकर अपने साथ रखना, परन्तु उसको समपण न करना। [कामुक स्वभाव]

जागतों कू पायत गेरणा।
धोखा देना।

जाट जात गगा।
पवित्र सबको मिलाकर एक रूप दने वाली।
वि०—यह मुहावरा नाही वक्त स चला जब मुसलमान हिन्दू कन्याओं को अपने घर म डाल लेते थ। फिर जाटो ने भी मुसलमान एव अन्य ऊँच नीच स्त्रिया को रखना प्रारम्भ कर दिया। हूणो स इनका सम्बन्ध होने के कारण सम्भव है प्रारम्भ ही स इन आक्रामक जाति म स्त्रियों की कमी बनी रही हो।

जान गेरणा —झोकणा —क आणा —लेणा देणा —खपाणा (गमाणा) —प झेलणा।
जीवन डालना प्राण-पण से किसी काय म लगना पीछे पड़ना दुराग्रह करना वध करना आत्महत्या जीवन नष्ट करना दुखपूर्वक सहन करना।

ी सा ग्राग्या ।
आनन्द, प्रसन्नता रुचि, आश्वासन ।

जीव करणा, —काढना, चलाणा, —कतरणी होना, —काटणा पकडना
—लटकणा —काधे प होणा ।
कुतर्क करना, गाली देना बहुत बोलना, बात के बीच म बोलना, बोलने न देना, किसी की कही बात को टोकना, लालच प्रकट करना, अतीव लालची होना ।

जुगाड लगाणा ।
कार्य सिद्धि की युक्ति विचारना । चतुराई से काम बनना ।

जुगाली करणा ।
भोजनोपरात मुँह चलाना ।
वि०—पशु चारा खा लेन के पश्चात् उसे हज़म करन के लिए देर तक मुँह चलाया करते है । [सादृश्य मूलक]

जुलम गुजरणा, —गुजारणा ।
भारी दुघटना होना, अत्याचार करना ।
जुलम=जुल्म, कठोर व्यवहार ।
प्र०— होणी न जुलम गुजारे ।' होली ।

जूआ रखणा, गेरणा ।
किसी काय मे नियोजित करना हिम्मत हारणा दायित्व न समालना ।

जूत्ता रखना, —मारणा, —काढना ।
अहसान रखना, उपालम देना, निरादरपूवक बल प्रयोग करना ।

जेवडा तुडाना ।
सम्बन्ध उच्छेदन कर भागने का प्रयत्न ।

जेवडी बटणा ।
अतिकृश शुष्क हो जाना । [स्वास्थ्य विषयक]

जेवडी स्याँप दिखाणा —बताणा ।
धोखा देना, भ्रम उत्पन्न करना ।

ज बुलणा ।
सब कुछ समाप्त होना अन्त ।
वि०—किसी भी उत्सव अथवा कथा क अंत म भगवान् की ज बोलने की प्रथा है । [ध्वनित्व सपत्तिनाश सूचक]

भ

भणणा भोणा, —मुरझाणा।
भभट म पड़ना, झगड़ा निपटाना।

भमक दिखाणा।
दिग्दर्शन, थोड़े समय म प्रभाव प्रकाश कर अदृश्य हो जाना।

भाँई-माई।
भलक भर दिखाकर अन्तर्धान होना। छाया।

भांट कलाबत्तू होणा।
ईर्ष्या एवं डाह। मन ही मन किसी बात पर रुष्ट होकर ऐंठना।

भांट पाड़ना, —बराबर।
हानि पहुचाना (हानि करने की सामर्थ्य होना) नगण्य तुच्छ छोटा, घृणास्पद।

भांव की चिड़िया।
निराश्रित। व्यक्ति जिसका निजी निश्चित निवास न हो। भावा=पेड़ की सूखी शाखा।
प्र०—हम तो बाबल तेरे भाव की चिड़िया हाथ उठाए उड़ जाँय।
[विवाह गीत]
वि०—भाव पर फल फूल पत्ते न होने पर भी चिड़ियाँ कभी एक और कभी दूसरे पर बसेरा ले लेती हैं।

भाड़ फूक फेरे लेणा।
नियम विरुद्ध कार्य। छिपकर (शीघ्रता पूर्वक) विवाह कर लेना।

भोली भरणा।
अनियमित रूप से धन कमाना।
प्र०—इब तो कोई किसी बात का विचार नहीं करता, आजकाल सब अपणी भोली भरणे म लग हैं। [लपस्या=अधिकाधिक धन बटोरने की इच्छा का द्योतक]।

ट

टका सा ज्वाब, —सी जान ।
स्पष्ट दो टूक उत्तर, अकेली, छोटी जान ।
प्र०—घडा भरणे कू छोटटी ते कह्या टका सा ज्वाब थमा दिया ।
—मेरे प आर के धरया टका सी जान है उस्ने कोई लेल्ले ।

टाग देण, —लेणा, —मारणा, —खेंचणा, —लडाणा,
—तराज्जू होणा ।
काम में विलम्ब करना टाग पकडना—किसी के सामन आते ही भली-बुरी कहन लगना सिद्ध होते हुए काम मे बाधा उत्पन्न करना, किसी की स्थिति बिगाडन का यत्न । क्रीडा, किसी बात म विघ्न डालना, बराबर खडे या आते जाते रहना, जिसस टागें खिची रहे । चारा ओर की दौड भाग जिसमे विश्राम न मिले ।

टिड्डी होणा ।
टिड्डी=कृषि एव वनस्पति को हानि करन वाला एक उडने वाला कीडा, भाग जाना दृष्टि से ओझल होना ।
प्र०—जा जल्दी टिड्डी होज्जा । [तिरस्कार वाक्य]

टिम्मी दिखाणा —देना —छोडना ।
आग लगाना, आग, उत्तेजना देना, लडाइ कराना ।
टिम्मी=चिगारी ।
प्र०—आ ठहर मरे तुझ टिम्मी दयू । [गाली]

टुणटुणे सी जाण ।
एकाकी व्यक्ति फकत दम, करुणा योग्य जीव ।
प्र०—बोब्बो अब मुझ पै के धरया है एक टुणटुणे सी जाण है, उस्नू बी कोई लेल्ले ।
वि०—सब सम्पत्ति एव परिवार नष्ट होन के बाद की दयनीय स्थिति जिसम जीव अकेला हो रहता है ऐसी दशा मे यह प्रयोग व्यवहार म लात हैं ।

टुस्के बहाणा ।
मिथ्या शोक प्रदर्शन रोदन बनावटी आँसू निकालना ।
प्र०—उसकी अच्छी कही वो तो चाहे जिब टुस्के बहाण लगै ।

टूल जाणा ।
ऊँघना, आलस्य आना तद्रा ।
प्रयोग—वयू जी नम टूल ग्ये किया बात म हुंकारा बी नई दत्ते ।

टोकणीं नूर वरसणा।
प्रत्यधिक शोभाशाली दीखना। [प्रमुन्दर पर व्यंग्य]
प्र०—वोल्वो तु-फ़ प तो न्हई टावणा नूर वरसा तू होर सिंगार वक्क ने लग्गी।

ठ

ठंडा पड़ना, —होंणा।
रोष शांति मर जाना (शरीर ताप-समाप्ति जो मत्यु का चिह्न है।)
[पराजय भाव]

ठसक दिखाणा, —झेलणा।
गर्व प्रदर्शन, बल प्रदर्शन। गर्व सहन करना। प्रत्याचार हानि सहना।

ठुकरा देणा।
अवज्ञापूर्वक अस्वीकार कर देना। [अवांछित व्यक्ति वस्तु के लिए]

ठुड्डी तोड़ना।
मारपीट करना शक्ल बिगाड़ना, ठुडडी—ठोडी। [रोष वचन]

ठुमक ठुमक चलणा।
धीरे धीरे पाँव पटकते हुए अथवा थोड़ा कूद कर चलना। धीमी प्रगति।
[शिशुओं की चाल]

ठुमकणा।
थम थम कर इठलाते हुए रोना।
प्र०—हम अपणी कू ले चल तम काहे को ठुमकी (ठिमकी)। [छंद]

ठुमका लगाणा।
नृत्य करते हुए पृथ्वी पर विशेष ढंग से पैर मारना।
प्र०—देखो बंदरिया कस्सी ठुमका लगावे।

ठोसा दिखाणा, —प मारणा, प धरणा।
चिढ़ाने के लिए (वाग्युद्ध में) अंगूठा दिखाना। अवज्ञा उपेक्षा तिरस्कार करना।
वि०—स्त्रियां अवज्ञापूर्वक जब किसी को चिढ़ाना अथवा और उत्तेजित करना चाहती हैं, उस हाथ का अंगूठा खड़ा कर दिखाती हैं। यही लड़ाई का बीज बन जाता है।
प्र०—ले सोक्क् ठोसा लेल्ल आई बड़ी घर-घाट कराणहारी।

ड, ढ

डिस्सोटा देणा ।
देश निकाला ।
डिस्सोटा=दृष्टि ओर ।
प्र०—कैकयी ने राम कू चौदे वस का डिस्सोटा दिळाया ।

ढकी मुसलमानी ।
प्रच्छन्न आग्रह । जीवन म उन बाता का निर्वाह जिनको कोई दूसरो पर प्रकट नही करना चाहता । (अन्तर सम्मान की वस्तु ।)
प्र०—काग्रेस का चन्दा हमसू भलेई ले जाओ इसे उसे इसे बताणा की बात नइ । बस, म्हारी तो ढकी मुसलमानी है ।

ढके ढोल उघाडना ।
पोल खानना । रहस्यादघाटन । खोखलापन प्रकट करना । प्रकट प्रच्छा की बुराई जानना ।
प्र०—रहाणदे हम सब्ब जाणों उनके घर की ढके ढोल उघाडने तैं के फायदा ।

ढब करणा, —दीखणा ।
युक्ति अथवा व्यवस्था करना । समावना होना । [अनुकूलता भाव]

ढाऊ ढेरी ।
विनाशकारी व्यक्ति ।

ढाक के तीण पात ।
अपरिवतनीय स्थिति हठवाद ।

ढिल्ल मुताए होणा ।
आलसी । पुसत्वहीन । कायकारी जीवन म अतत्पर । [सादृश्य]

ढुंगे मारते फिरणा ।
निष्प्रयोजन इधर उधर घूमना ।
प्र०—साऊ तो सारा दिण ढुगे मारता फिरो जा इसे के काम हैं ।

ढुलमुल होणा ।
अनिश्चित थाली का बगन अस्थिर मति ।

ढूकणा ।
किसी वस्तु पर ललचाइ दृष्टि रखना । झुकना (अभिधाय) ।
प्र०—ब्या की मठाई जियतैं बणनी सरु हुई हैं बालक न देकण के ढूकते फिर ।

ढोल दमामे बजणा ।

प्रसन्नता सूचक वाद्य ध्वनि विजय घोष भारी विज्ञापन ।

ढोल पीटणा ।

विज्ञापन करना रहस्य को सब पर प्रकट करना गुप्त बात हर किसी को सुनाना ।

प्र०—रमला की तो ढोल पीटन की आदत है, इसके पेट म कोई बात छाणी नइ रहती ।

त

तत आणा । —होणा —की बात ।

उपयुक्त अवसर प्रकट होना । सही मौका । सार की बात मूल बात ।

तणक मणक ।

अति न्यून आवश्यकता से कम किंचित ।

तणतणा दिखाणा ।

सगव रोष प्रदशन स्वय को सबल सिद्ध करना ।

ततइयों होणा —का छत्ता ।

तनिक छेडन से पीछे पड जाने वाला, अतिशय क्रोधी जो प्रतिकार लिए बिना नही छोडता । झगडालू लोगो का समूह तनिक उत्तेजना पर हानि के लिए कटिबद्ध लोगो का समूह ।

तबाई मरणा —देणा ।

परशानी उठाना सकट मे डालना ।

तमाळा खाणा ।

आवेश अथवा अधिक गर्मी के कारण सज्ञाहीन होना ।

तळाबेल्ली होणा ।

उद्विग्नता व्यग्रता ।

तली उखाडना, —उपाडना ।

शीघ्रता करना शाति भग करना ।

ताक झाक ।

छिपकर किसी बात का रहस्य जानने का यत्न किसी उद्देश्य पूर्ति के लिए अवसर की तलाश मे रहना ।

तावड़ तोड़ ।
 शीघ्रतापूर्वक, अन्य किसी बात की चिन्ता न कर किसी काम में जल्दी दिखाना ।

तिकड़मी बराना ।
 युक्ति से (साम दाम, दंड, भेद) किसी भांति उद्देश्य पूर्ति करने वाला ।

तित्तर बित्तर ।
 अस्त व्यस्त, क्रमहीन ।

तिरछा होणा ।
 विमुख विरोधी वक्र, ऐंठना, अकड़ना ।
 [लाक्षणिक अर्थ में स्वभाव सम्बन्धी प्रयोग]

तिरिया की अचपळ जात ।
 नारी का चंचल स्वभाव चपल मति । [अचपल—अ स्वरागम]

तिला-तौर ।
 रंग-ढंग व्यवहार और मति ।
 तौर=ढंग ।
 वि०—तिल सामुद्रिक चिह्न जो शरीर के विभिन्न स्थानों पर प्रकट होकर विभिन्न स्वभाव एवं स्थिति का द्योतक होता है ।
 उक्त प्रयोग सहज एवं अर्जित—उभय प्रकार के स्वभाव का संकेत करता है ।

तीण सौ साठ, —तेरह ।
 असंख्य नगण्य महत्त्वहीन (बहुतायत) ।
 प्र०—जा तुज्झ से हमरो तीन सौ साठ देक्ने हैं ।
 छिन्न भिन्न, नष्ट ।

तुणक मिजाज ।
 किसी कार्य अथवा व्यक्ति में शीघ्र असंतुष्ट (क्रुद्ध) होने वाला व्यक्ति ।
 प्र०—ऐंस्सी तुणक मिजाजी देखाइया अपणी तुणाई कू मण बटिया तें ब्योहार ई नई जाणता ।

तुतुभा बजणा । —जोड़ना ।
 समाप्ति की सूचना, घोषणा विनाश-सूचना । किसी विषय में लोगों से विस्तार में चर्चा चलाना (बदनाम करने का यत्न) व्यर्थ चर्चा के लिए समाज जोड़ना ।

तेर-मेर करणा ।
 अपना पराया द्वैती भाव ।
 प्र०—हर बगत तेर मेर करणे तें भाइया में बी नई निभती ।

तेरा ताळी होणा।
भुल्सा बनना (जगह जगह का पानी पिए हुए)। तेरह भिन्न भिन्न तालों का जल पीकर विभिन्न गुण अनुभव प्राप्त। चालबाज चरित्रहीन स्त्री।

तोड़ा टूटण करना।
सम्बन्ध विच्छेद।

तोता पालणा।
किसी बात (आघात) को लेकर बैठ जाना। अनावश्यक सरण को अति महत्व देना।

थ

थाली का बैंगण होणा।
चंचल मति। अनिश्चित स्वभाव। ढुलमुल व्यक्ति जो एक बात पर अटल न रहे।
प्र०—थाली का बैंगण जो हो है उसकी बात की कोई किदर (सम्मान) नई करता।

थाली बजणा, —भरी म लात मारणा।
सर्प विष उतारने की एक भारतीय क्रिया। उपाधि का तिरस्कार।
वि०—किसी को सांप के काट लेने पर गोबर में दबाकर उसके पास बैठ कर कांसे की थाली कई दिन लगातार बजाने पर सर्प विष उतरने लगता है और रोगी होश में आने लगता है तथा जब तक उठकर बैठ नहीं जाता बराबर थाली बजती रहती है। यह सर्प दंशन की पुरानी लोक चिकित्सा है जिससे लाभ होता है। (ध्वनि प्रभाव से विष उतारने का यत्न।)
प्र०—भरी थाली मे लात मारणा अच्छी बात नीं है। इससे रामजी भी नराज हो हैं।

थूकके कू चाटणा।
बात कह कर मुकरना। परित्यक्त को अपनाना।

थूकना, —थुकाणा —थूक हथली म लेणा —थुकथुकी लगणा।
तिरस्कार उपेक्षा परित्याग अपवाद। लज्जास्पद काम कर बदनामी लेना। चाटुकारी। जी मिचलना।
वि०—बार बार मुह म थूक आना प्रथम गर्भ-लक्षण है। विशेषकर 'थुकथुकी लगना' प्रयोग इसी संदर्भ म बोला जाता है।

धू धू करणा, —होणा।
बदनामी करना लोकापवाद होना। [घृणा का प्रदर्शन]

धूधड़ी फेरणा, —मसलणा, रगडणा, —सीधो करणा, —सीधी न होणा।
मारपीट करना। किसी काय द्वारा प्रतिद्वन्द्वी को परास्त करना। मारपीट अथवा अन्य युक्ति से अनुकूल बनाना। सानुकूलता न होना।

ध्यावस करणा, —रखणा।
धैर्य रखना जल्दबाजी न करना। तसल्ली संतोष।
प्र०—ध्यावस रक्ख तो यादमी बुरा वखत वी लिकाड दे है, सब दिण एक से नइ हात्ते।

द

दलेल करणा, —देणा, बोलणा।
कठिन शारीरिक श्रम करना। दड-स्वरूप किया गया काय (बेगार)। कठिन काय मे लगाना, दड देना।
प्र०—सिपाइया की आए दिण दलेल बुलती रहै। दलेल=ड्रिल। (व्यायाम)

दलमल होणा, —करणा।
किसी बात को ज्या त्या दबा देना। किसी भाति काय-पूर्ति होना। कठिनाई से किसी काय को सम्पन्न करना।
प्र०—ज्या वे करया जी सब याई दलैमल होग्या।

दस सिर की होना।
उद्दड गर्वीली चचल मति होना।
विशेष—रावण के दस सिर के सादृश्य पर यह प्रयोग चलता है।
प्र०—मन्न बी देखणा है वो कौंण सी दस सिर की अ जु म्हारी बात लाघ क यहाँ रह लेगी।

दाब चलाणा, —देणा।
पीसना, नष्ट करने का यत्न। कोई काम किसी से कराने के लिए दबाव डालना बराबर चक्कर लगाना।

दांत काटी रोटी होणा, —काढना (दिखाणा), —निपोरणा, —पाडना, तोडना, —मारणा, —राखणा।
प्रगाढता निकटता, दिखाना, दीनता दिखाना चाटुकारी दीनता का प्रदर्शन। जोर से हसना दाँत उखाडना हानिकर अग निकाल दे[illegible]

विचार में किसी काम में बाधा देना। अशुभ विचारना। किसी वस्तु को अधिकृत करने की लालसा करना।

दिट्ठ लागणा, —काढना, —दिट्ठे धादे बरण रहणा।

किसी काम में मन लगना ध्यान होना। रोप प्रदर्शन, आगे तरसना। आशीष। [स्वास्थ्य विषयक]

दिमाग होणा, (चढ़ना), —बिगाड़ना, —खोणा —सुधारणा, —स खाल्ली होणा।

गर्व होना गर्व करना। क्रोध करना कुप्रवृत्ति होना अविवेकी सरोष। बल पूर्वक औचित्य दिखाना। मूर्ख अविवेकी होना।

दुहाग देणा।

वैधव्य, दुख देना। दुहाग=दुर्भाग्य।

देह धरे के डंड।

शरीर धारण करने की यातना तन के भोग।

वि०—"शरीर व्याधि मन्दिरम्"—मनुष्य शरीर में अनेक रोग भरे पड़े हैं, ऐसा कहा ही जाता है। इसके अतिरिक्त प्रचलित प्रयोग अर्थ यह भी है कि शरीर पूर्व कर्मानुसार भोग प्राप्ति के लिए ही मिलता है इसलिए जब शरीर धारण करने की यही शर्त है तो शरीर के रोग उसके साथ मिलते ही हैं। डंड=दंड।

प्र०—हारी बमारी तो भाइ सब देह धरे के डंड हैं इनसे कोण बच पावे, कदी ना कदी कुछ ना कुछ होता ई रहै है।

दो हाथ करणा।

लड़ाई झगड़ा करना।

प्र०—तू अपणे कू बड़ा बलधारी समझता हो तो आज्जा दो हाथ कर ले।

द्रोपती का चीर होणा।

लम्बा काम। बड़ी कभी न समाप्त होने वाली कहानी, अथवा कोई वस्तु।

प्र०—दक्खो तो तणक दाल धोण कू कही लाडिया कब की उस्मे चिपट रई है—दाल ना हुई कोई द्रोपती का चीर हो ग्या।

वि०—कौरव सभा में जब द्रौपदी को निर्वसना करने के लिए दुःशासन ने उसका चीर खींचना प्रारम्भ किया तो भगवान् कृष्ण उसे ऐसा बढ़ाते चले गए जो कभी समाप्त न हो। [—महाभारत]

ध

धज्जी उडाना —उखाडना ।
बुरी तरह मारपीट करना ।
प्र०—पहले मुदस बालका की धज्जी उडादे हे, आजकल की तरचा ना त्था के कोई काण बी ना छू सक हैगा ।

धमाचौक्डी मचणा ।
मारपीट शोरगुल होना ।
प्रा०—इनकै तो सासू बहू म रोज धमा चौक्डी मचै ।

धमया मचाणा ।
शोरगुल करना । काय म बाधा व्याघात उत्पन्न करना ।
प्र०—वालका की पर छोड यो इत्ता बडा होकै असा धमया मचाव्व है ।

धरती का डका ।
अधिक नटखट होना । डका=ढोल वजाने की एक सिरे पर मुडी हुई छोटी लकडी या बेत ।
प्र०—अनारो की लमडी बडी डका है सभी जाणैं ।

धरती सिर प धरणा ।
अधिक रौल मचाना घोर प्रयत्न करना ।
प्र०—देखो तो वालका नै कसी धरती सिर प ठा रक्खी ह ।

धबल धोरी ।
साहसी एव बलधारी असहाय का दढ अवलम्ब ।
प्र०—यो लाट तू ठा दे तो जाणैं, बडा धवल धोरी बणै । [व्यग्यात्मक]

धाय देणा ।
जोर-जोर से दर तक रोना मतक के लिए रोदन ।
प्र०—अर कस्सी हा गयी क्यू धाय देत्ती चली आई ।

धिगताणा करणा ।
जबरदस्ती करना बल प्रयोग करना । हठ करके अपनी बात मनवाना ।
प्र०—गरीब प सब धिगताणा चलाले है ।

धूप मे धर करणा ।
दड दना । [अभिशाप]

धोक देणा ।
दवता के समक्ष नमन सम्मा मुह के बल गिरना ।
प्र०—मात्ता धोकण सारा गाँ जा है ।

धोळ पोस होणा ।
 श्वेत वस्त्र धारी, महत्वपूर्ण व्यक्ति, धनीमानी होना ।
 प्र०—जित धोळ पोस फिरैं जो सब मूं निरणै कर राखी ।

धोळे आणा ।
 बाल पकना अधिक आयु होना ।
 प्र०—धोळे आग पर इसी तरी व टट्टे वाळी बात ना गई ।

ध्यान डिगाणा ।
 कामनासिक्त होना ।
 प्र०—साहूकार का राणी पै ध्यान डिग ग्या ।

न

नगा होणा ।
 यथार्थ रूप में प्रकट होना, अवांछनीय व्यवहार करने वाला व्यक्ति । वस्त्रहीन । (अभिधा) [सादृश्य]
 प्र०—जो बडी डीग मार है, सब इस मौके पै नगे होंग्य ।

न्याव चुकाणा ।
 फैसला करना, न्याय करना ।

नकेल गेरणा ।
 वश में करना कठिन प्रतिबन्ध लगाना ।
 प्र०—पुलस ने बदमास्सों क नकेल गेर राक्खी है ।

नजर देणा, —उतारणा । —करणा । —फेरणा । —मारणा । —भरणा ।
 भेंट करना, कुदृष्टि दूर करना । ध्यान देना, परवाह करना । उदासीन होना । कुदृष्टि लगाना । ध्यानपूर्वक देखना ।
 वि०—नजर उतारने के लिए चूल्हे में मिर्च झोंकते अथवा बालक पर राई नोन तीन बार उतारते है ।

नथने फुलाणा ।
 रोष प्रकट करना । [मुखमुद्रा]

नथली उतरणा ।
 सतीत्व भंग होना । विरूप होना ।

नपसेल होणा, —करणा ।
 अधिक परेशान होना, —करना ।

नरम गरम होणा।

कभी कठोर एव कभी अधीनता का व्यवहार करना। नीति प्रदशन।
(कायसिद्धि हेतु समयोचित व्यवहार)

नरेड तरेड दिखाणा।

गव प्रदशन, ऐंठना क्रोध प्रकट करना।

नाक कटणा, —काटणा, —रखणा, —चने चबाणा, —मे दम आणा। —का बाळ होणा।

लोकापवाद होना, वदनामी करना। सम्मान रक्षा। काय म बाधा डालना। अच्छी चीज को बुरी बताना। अस्वीकृति प्रकट करना। परेशान करना। कठिनाई म डालना। तग होना। अधिक कठिनाई का अनुभव करना। अतिशय प्रिय तथा सिर चढा होना।

नाक मे दम होणा —करणा।

परेशान होना —करना।

नाम धरणा।

भली बुरी सुनाना गाली गुफ्तार करना।

नारे स सारा घिसणा।

किसी के साथ विवशता पूवक निर्वाह करना।

प्र०—दुखी रखे या सुखी बीबी हमकू तो उस्के साथ ही नारे से सारा घिसणा अ।

नाल काटणा —गडा होणा।

प्रसव के उपरात नाल छेदन करना—जम से ही किसी से परिचित होना। किसी स्थान पर जम सिद्ध अधिकार प्रकट करना।

प्र०—म्हारा य्हाँ कोई नाल गडा है किराए का मक्कान है जब चाहे छोड दो।

वि०—आँवळ नाल गाडने की प्रथा रही है। जम-स्थान मे इसी आधार पर उक्त प्रयोग प्रचलित है।

निच्ची गदन पडना।

लज्जायुक्त होना, शम उठाना, अपमान अनुभव होना, किसी के समक्ष लज्जित होना।

निदरक होणा —सोणा, —करणा।

काय-समाप्त कर निश्चिन्त होना। मुक्त भाव से विश्राम करना। चिन्ता रहित करना, माया, मोह मुक्त होना।

प्र०—नमडी के फरे फेर कँ वा तो निदरव होग्या ।
—काम काज कू निपटा कँ निदरव सो ।
—म्हारे तो दो वत्तन हे, उन वी कोइ ठावे हम तो निदरव कर ग्या ।

निमार मु डी होणा ।

आवारा । गुरुजनो के आदेश, आचरण की अवना करन वाली स्त्री । समाज सम्मत व्यवहार न करने वाली । [अवना सूचक]
वि०—बौद्ध साधक-साधिकाओ के प्रति घृणा सूचक अभिव्यक्ति का सामान्य प्रयोग ।
मुडा मुडी=(गाली है) मु डित साधु साध्वी अपने से भिन्न धम वालो के प्रति उपेक्षा अनादर भाव । इसी सादृश्य पर किसी भी सामान्य आचरण की उपेक्षा कर इधर उधर घूमने वाल व्यक्ति के प्रति इस उक्ति का प्रयोग होता है ।

निरी आग होणा ।

अतीव क्रोधी होना । अधिक चिडचिडा होना । स्वाद म कटु (लाल मिच की भाति ।)

नीत डोगणा ।

मन म बेईमानी आना । (नीत=नीयत) अथवा नीति पाप भावना उत्पन्न होना ।

नीम बिणा मीत ।

निराधार बात । नीम=नींव आधार ।
प्र०—लोक इतणी चरचा करमे हैं तो काई बात तो होगी । भला नीम बिणा कइ भीत हा है ।

नैण मुताणा । —मटकाणा । —मटक्को होणा ।

बनावटी आसू निकालना । रोना । कुचेष्टा प्रकट करना । (नैन मटकाणा=इंगित म बात चीत करना ।) चचल स्त्री । (छिनाल=छिना नारि ।) आचरण भ्रष्टा ।
प्र०—तणक कुच्छ इस्त कह्या के नैण मुताण बैठ गई ।

नैण लगाना लडाणा ।

एकाग्र चित्त होना किसी के प्रति प्रेम प्रदर्शन करना वासना जनित कुचेष्टा दिखाना ।
आजकल किस्म तैं नैण लड रये हैं थारी तो आदत ही खराब छ ।

नयला मे हुक्का ।

के लोगा द्वारा अतिथि सत्कार—असभव ! असामाजिक व्यवहार । जातीय श्रेष्ठता का गव ।

वि०—नैयला, बुनदशहर क निक्ट नहर पार एक सडक किनारे ब्राह्मणो का ग्राम । यहा के लाग अपरिचित यात्रिया म यदि कोई हुक्का पीने के लिए कहे तो अपना हुक्का भी नहा दते । कदाचित् अपन जातीय गव के कारण अथवा असामाजिक प्रवृत्ति के कारण उनका ऐसा व्यवहार है ।

[किसी स्थान एव व्यक्ति से उदासीन अथवा अभद्र व्यवहार प्राप्ति पर आलोचना]

प

पके पाए होणा ।

बूढ़ा होना पीला पडना, तनिक आघात से टूटकर बिखरने वाला, मरणा सन ।

प्र०—ताऊ तो इब पक्के पाए हो रए हैं ।

पतग होणा, —उडाना ।

शीघ्रता-पूवक भागना, अदृष्ट होना । यथा आकाश म पतग । हवाई (निराधार) बात करना, खल करना ।

प्र०—वो किसी की सुणताई नई कुच्छ कहणे-सुणने के पहळे ही पतग होज्जा ।

परचा देणा, मागणा ।

किसी देवी देवता का फल प्रदान करना, परचा=परिचय (महिमा व शक्ति का) ।

प्र०—देव्वी दिग काट्टै पडा परचा माग ।

परण पुगाणा ।

वचन-पूर्ति । [दृढ चरित्र वणन]

परवा-पछ्वा लगणा, —न जाणना ।

विभिन्न अनुभव न होना अबोधता । अनुभवहीनता —अच्छा बुरा अनुभव न होना । (सासारिक विषया म अनभिज्ञता)

पल्ला लेना, —डालना, —पकडना, —छुडाना ।

मृतक शोक म रुदन करना, आश्रय लेना मुक्ति ।

पाँ काटणा, —छलणी होणा, —रगड़ना, —फरणा, —लिकडणा, —मे चक्कर होणा, —स पुराळ बाधणा, —फिरकणी होणा ।

आधार नष्ट करना किसी काय म आलस्य विलम्ब करना कठिनाई दिखाना एक स्थान मे दूसरे पर कुछ काल के लिए जाना (एक लोक प्रथा जिससे आने-जाने पर प्रतिब ध खुल जाता है सूक—शुक्र तारा डूबने अथवा किसी की मत्यु होने पर स्त्रियाँ जहा उस समय थी, वहा दोबारा कुछ समय के लिए जाती हैं ।) आवारा होना । घर स बाहर रहने का स्वभाव बन जाना । अधिक घूमना । व्यथ घूमना, दुगति कठिनाई म मरना । कफन नसीब न होना अधिक तथा शीघ्रतापूवक चलना । घूमते घूमते पाव मे छाले होना ।

पुराळ=पलाल (स०)

प्र०—उणके पाम इव के धरया ? म व कुच्छ उडा दिया । पाँ त पुराळ बाध कई जागे ।

पाँ पाणी गेरणा ।

पूज्य भाव प्रकट करना, आश्रित होना, निभर होना ।

पाद्दा फड़वाणा ।

सकट म फसना । अनाचार अत्याचार सहन करना ।

पाद्दा=गुदा (गुप्त भजन) ।

पाणी कु पप्पा कहणा —ते पहळे पाळ बाँधना ।

अबोध बनना समय (आवश्यकता) स पूव प्रबन्ध करना ।

पाणी तैं पतळा —पाणी होणा, —काढना —करणा, — मरणा, —मरणा, —से प फिरणा —देणा, —मागणा ।

कमनाय कोमल । युद्ध लड़ाई झगड़ा लज्जित होना । वीय स्खलन । अप मानित करना । युद्ध करना । निबलताकारी दुष्प्रभाव (जिसस भवन की नीव कमजोर होती है) । दीन होकर रहना । चाटुकारी करना । तरल गति । मृत्यु मुख । पाणी सा फिरणा=लज्जित होना । पितृ-तपण । पुसत्व नाश । रज अथवा वीय-पतन । अति दीनता हीनता दिखाना । पराजय प्रकट करना ।

पाद पाद कूडवारे भरणा ।

कठिनाई म काय-पूर्ति । किसी काम का अनिच्छापूवक कजूसी के साथ करना । स्त्रिया देवी-देवताओं का प्रसाद करने के लिए कुडवार भरती हैं । (मिट्टी के कुण्डा म खान पान रखना है किन्तु प्राय वह न्यून मात्रा म होता है ।)

पार गेरणा, —बाधणा, —करणा, —जाणा, —पारणा, —थाना, —प बठणा।
समाप्त पूण होना। कठिनता से पूरा करना। सहायता करना, अवलम्ब देना। चुरा ले जाना। मरना। (परलोक-गमन)। सहायता-कर काय-पूर्ति कराना। रहस्य जानना। तटस्थ रहना।
प्र०—यो पार पै बठणे तें काम नी चलेगा तमैं तो इस्की पूरी खबरदारी करणी है।

पासग बराबर न होना।
तुलना म अति नगण्य अति हीन, तुच्छ।

पिटा सा मू।
कान्ति हीन चेहरा, उनास मुख [लज्जा भाव]

पीठ पाछे, —फेरणा, —ठोकणा, —मे पेट लगणा।
अनुपस्थिति म। प्रस्थान करना। किसी स्थान मे जाना। मरना। [मरयू-परात।] समथन देना। अति क्षीणकायता, अति क्षुधित।

पीर करना, —होणा।
दूसरे के कष्ट का अनुभव कर सहायक होना परानुभूति प्रसव पीडा साधारण दद, दूसर के दद से दुखी हाना।
प्र०—म्हारा नुस्कान होया तो तुज्झ के पीर हुई।

पीसाब पीणा।
अनुचित खुशामद जघय आचरण करना लाभाथ क्रिया।
वि०—मद्यपान के प्रति घृणा होन से लोग मद्यपान करने को भी 'पिसाब पीणा' कहते हैं। मूत्र चिकित्सा।

पुवाडा रचणा।
व्यथ बडा झझट खडा करना महत्वहीन बात को अनावश्यक विस्तार देना।
वि०—'पुवाडे' अथवा, साखे' कौरवी प्रदेश के लोक-गायको द्वारा वर्णित विस्तृत प्रशस्तिया हैं। इनको जोगी लोग सारगी पर गाते हैं।

पूंछ पाडना।
बिगाड हानि करना बलहीन अवश बनाना।
प्र०—वो कै मेरी पूछ पाड लेगा।
वि०—पूछ पशुओं को अवश, निबल बनाने वाला अवयव। इसके पकडे जाने पर वह अवश हो जाते हैं।

पेट में दाढ़ी होना, —बड़ा होना, —द्रोण होना, —पोसना ।

कम आयु ही में बड़ा अनुभव । अधिक आवश्यकताएँ होना । अधिक सालच । कम आवश्यकता । थोड़े में संतुष्टि । पोसना छिपाना । सब कुछ होने पर भी कम कहना ।

पेट पाड़ना, —भरना, —गिरना, —पड़ना, —पकड़ना ममोसना, —करना, —पतलाना, —चलना, —में न रहना, —पर लात मारना, —पट्टी बाँधना, —के आँत न टूटना, पट्टू होना, —दिखाना दना ।

मोहमाया प्रकट करना । उपस्थित करना । गर्भपात करना । गर्भ रहना । हाथ मारना । कंजूसी से निर्वाह करना । अपने नाम को दाग करना । जान बूझ कर किसी बात से अनभिज्ञता प्रकट करना । दीन दशा प्रकट करना जो यथार्थ न हो । दस्त होना । बात न छिपा सकना । रोजी छीनना । अत्यन्त मितव्ययता कंजूसपन । पेट की शिकायतें न सुनना । भर पेट भोजन न मिलना । अधिक भोजन करने वाला व्यक्ति होना मोटी तोंदवाला । आवश्यकताएँ न्यून करना । सम्पन्न होने पर इतराना

कुटल=उदारता [व्यंग्य]

वि०—अनियमित गर्भ का आयाम पात करना ।

खाली मकान में जिस तरह जाले लग जाते हैं उसी प्रकार खाली पेट में आँतें सूख कर ऐंठने बटने लगती हैं । [उपमावाचक]

पेलना, बात पेलना ।

परेशान करना । अधिक परिश्रम कराना । अपनी चलाना । बातूनी होना । बातूनी=वातुल । वायु प्रकोप होने से पागलपन होता है जिसमें आदमी बहुत बोलने लगता है ।

पेळे हाथ करना ।

कन्या का विवाह करना । फेरे फरना ।

प्र०—इनके जाड़ड़ा में लमड़ी के हाथ पेळे करने हैं ।

वि०—विवाह में फेरों के समय पिता के द्वारा कन्या के दोनो हाथों पर हल्दी का गाढ़ा घोल लगाने की प्रथा है ।

पेड़ा छुड़ाना ।

कठिनाई में मुक्ति पाना ।

प्र०—बड़ी मुश्किल से पेड़ा न पैंडा छोड़ा ।

पर पीटना, —भारी होना, —में पलड़ा पड़ना, —का धोवन न होना ।

आलस्यकर विलम्ब करना । किसी कार्य के न करने की इच्छा प्रकट करना ।

स्त्रियों का एक रोग जिसमें मासिक धर्म का स्राव बहुत समय और अधिक मात्रा में चलता है। प्रगति में बाधा। सौन्दर्य अथवा गुण में किसी की तुलना में नगण्य होना।
वि०—पखडा=डंडा जो पशुओं के पिछले एव पैर में इसलिए बाधा जाता है कि वह भाग न सके।

पोंछा फेर।
नाश केत। किसी कार्य को सर्वथा असफल बनाने वाला सर्वनाश करने वाला।

पोइयों पडना।
तेज चाल से जाना।
वि०—पोइया=घोडे की चार चालों (कदम पोइया, ढक्दुट, सरपट) में से एक।

पोई देणा।
किसी वस्तु का अति न्यून अंश प्रदान करना।
पोई=गन्ने की एक गाठ से दूसरी तक का भाग।

पोत पूरा पडना।
गुजर होना आवश्यकता पूर्ति, जीवन निर्वाह।

पोरी-पोरी मटकणा।
अतिशय चचलता का प्रदर्शन। शरीरावयवों का (कुरुचि पूर्ण) सचालन।
प्र०—मजी नाच्च मे के उसकी तो वैसई पोरी-पोरी मटकैं।

पौरख थकणा।
बल क्षीण होना बुढापा आना प्रभाव घटना।
प्र०—अब कुच्छ काम-काज होता नी भाई म्हारे तो पौरख थक ग्या।
वि०—आयु वृद्धि ही नही परिस्थिति के परिवर्त्तन से भी बलक्षीण होने पर उक्त प्रयोग व्यवहार में आता है।
उ०—जबतें भाई मरग्या, तबतें तो उस्के पौरख ही थाक ग्ए।

पोहड्डा रखणा।
ऐसा स्थान जहा किसी का अपना प्रभाव हो अधिकार-क्षेत्र।

प्र०—दगढू से जाओ तो थारा काम बण जागा इणका तो व्हा पर में पोहड्डा है।

प्रम की नाग लडना ।
वासना-ज्वर की अनुभूति । वासना का प्रदर्शन करना ।

फ

फटणा ।
सहसा उत्तेजित हो उठना । अनायास प्रकट होना ।
प्र०—मुझकू देखतइ वो तो फट पड्या ।
—राम जाणे इतणी माया कहाँ त फट पडी ।

फटे ढोल उघाडना ।
बुराई, दुश्चरित्रता का प्रचार करना । भटिया निकालना । खोखलापन जाहिर करना ।

फटे मे पाँ दणा ।
दूसरो के व्यथ झझट म पडना ।
प्र०—चल तू अपणे घरो चल । तुझे इणके फटे मे पाँ देणे स के मतलब ।

फडकना ।
अतिशय विरह अथवा अन्य शारीरिक पीडा से उत्पन्न व्याकुलता ।
[अभिशाप विषयक]
प्र०—जसे मे फडक रई ऊ राम कर वो बी अपणी कू एसई फडकती छाडडे
[वध्य पीडा प्रस्त]

फन्ने खाँ होणा ।
रोब-दाब वाल व्यक्ति आतककारी व्यक्तित्व ।
प्र०—आए बडे फन्ने खा बण क । बडे हाग ता अपणे घर के ।
[गव प्रति अवज्ञाभाव सूचक व्यग्य ।]

फलणा ।
परिणाम निकालना । सुफल्नइ होना दुफल होना ।
वि०—कुकृत्य का दुष्परिणाम होन के सम्बध म भी न रणा म यह प्रयोग चलता है । अभिधा म फोडे फुसी निकलन पर भी ।
प्र०—उसकू तो नाठ का माठ फल रया है । नाठ=मरन (जिस परिवार म उत्तराधिकारी न बचा हो ।)

फसो न फोडना ।
तनिक भी परिश्रम न करना आलसी स्वभाव ।

फाट्टे खा होना ।

दीन दशन व्यक्ति । आर्थिक निवलता मे रहन वाला व्यक्ति ।

प्र०—कवी कुच्छ कमाया न घमाया यो तो सदाके फाट्टे खा है ।

फासा काटरगा ।

पडा छुडाना झझट दूर करना ।

फुल्ली-फुल्ली चुगणा ।

सुख म रहना । बिना परिश्रम आनद लाभ करना, अथवा जीवन-निर्वाह करना ।

प्र०—इवी के है बाप बठ्ठा अ, खूब फुल्ली फुल्ली चुग जा पिच्छे मालुम पडगी ।

फूक लिकगना, सरकणा, —भरणा, —मारणा ।

मरना, अथवा नष्ट होना । भयभीत होना किसी को उत्तेजना दिलाने के लिए कुछ कहना । गव होना—(वायु भरने से चीजे फलती हैं) गुप्त समथन, पिशुनता ।

प्र०—लुगाई नई कुछ फूक मार दई होगी, जो एसा बिखर रह्या है । इबी वो किस्सी की सुणेगा नई भोत फूक भर रई है, मुफत के माळ मे एससाई हो है ।

फूटी आंख न देखणा ।

किसी स अति घृणा प्रदशन की भावना । सहन न करना ।

फूल क गडगज होणा ।

अति प्रसन्नता हष का प्रदशन गडगज=मचान, जो मेलो म भीड को देखने (नियत्रण करन) के लिए बनाया जाता है ।

वि०—मेरठ-मवाना सडक पर स्थित सणी ग्राम मे इट चूने का एक पुराना स्तभ बना हुआ है । इसको कोई लोग पेशवाओ के समय का बतलाते हैं । इसी का नाम गडगज(=गरडध्वज) है । गरड आकाश म बहुत ऊँचाई पर उडता हुआ वहा से पथ्वी पर की चीज दखने की शक्ति रखता है ।

फल फूट के ।

बडे विस्तार एव बलपूर्वक चारा ओर को फला कर ।

प्र०—न्हा जब की बे तगी है अच्छे फल-फूट के सोओ ।

फसणा —फस मरणा ।

अति विस्तार पाना । रोना धोना अथवा रोष म आना । बनावटी रदन ।

प्र०—नो उमक लगी ना हैं मार्ई फन भर रया है ।

पोच होणा —बेला।
ऊपर से स्वस्थ किन्तु भीतर से खिन्न मानसिक दुःख हुआ मानना। किसी व्यक्ति को दुःख पहुँचाना मन की व्यर्थ झूठी बात करना, ऐसी मारना जो पर्याप्त नहीं लगती वगैरह।

फोड़ मे धरणा।
नष्ट करना गोली मारना।
प्र०—जा सामणे से चल्या जा, नहीं फोड़ मे धर द्यूंगो
[व्यंजना में मतारोप अग करने के संदर्भ में]

ब

बकरी की तीण टांग।
अपनी ही हट रखना।
प्र०—कितणा कोई उसे सिमझामो पर वो तो अपणी बकरी की तीण टांग ही रक्खे। [हठ विचार कठिनाई से बदल पाते हैं]

बछड़ी के दांत जाणना।
यथार्थ ज्ञान परिचय शक्ति सामर्थ्य का सही अनुमान होना।

बधिया के ताऊ होणा।
महामूर्ख अजान।
वि०—गाय का सरत (मूर्ख) पशु कहा जाता है तथा उसका मादीन किन्तु अबोध होने के कारण और अधिक मूर्ख।
ताऊ—मेरठ के जाटो में जिस किसी को अधिक सम्मान देना हो उसे ताऊ पुकारते हैं। ताऊ रिश्ते में सबसे बड़ा होता है। इसी सादृश्य पर बधिया के ताऊ का अर्थ महामूर्ख होगा।

बटळे करणा।
इकट्ठा करना संयत करना।

बणिया की छोरी होणा।
पस्त हिम्मत, डरपोक कष्ट साध्य कार्य के लिए असमर्थ।

बधिया होणा। —बठणा। —बठाणा। —करणा।
बल एवं पुंसत्व हीन होना सर्वनाश हानि करना, शक्तिहीन करना।

बन मे पूणी होणा।
अनुपात में नगण्य होना। [तुलनात्मक]

बन्दर बाट करणा।

दूसरा के मान का उनम वटवारा करते समय अपने लिए विशेष भाग रख लेना। [बईमानी, छीना झपटी]

बलींडे स्याप दिखाणा।

भ्रम उत्पन्न करना अकारण भय दिखाना, बहाना करना।

प्र०—उडाहार वहू वलींडे स्याप दिखाव। (लोकोक्ति)

उडनहार=भागने वाली।

बांस चढ़ना, —तोडना। —गेरणा। —मारणा।

निलज्जता का प्रदशन, रीढ की हड्डी तोडना, (आधार नष्ट करना)। अत्यधिक पीडा पहुँचाना (अत्याचारी दस्यु स्त्रियों की भग एव गुदा माग से बास डालकर उनको मार देत थे)। कपाल क्रिया।

वि०—हिन्दुओं म मतक दाह के अवसर पर पुत्र द्वारा बास से सिर की हडडी तोडना, कपाल क्रिया कहलाती है।

बात काटणा —काढणा —मारणा, —बनाणा, —उडाना, —चोदना —गुठलाणा।

किसी अन्य व्यक्ति के बात करत समय बीच मे बोलना। रहस्य (गुप्त भेद) बात करना। शेखी जताना। काय सिद्धि का यत्न करना। टाल करना मसखरी म दूसरे की बात को महत्त्व न दना अफवाह फलाना। व्यथ बातें करत रहना किसी को कोई काम करने के लिए देर तक समझाना। सब कुछ जानत-बूझते अनजान बनने का प्रयत्न।

चोदना=प्रेरित करना।

बाबा के मोल।

बहुत महगी अधिक दाम म आने वाली वस्तु।

प्र०—मरठ म लो मट्टी बी बाब्बा के मोल बिकै।

[महाग की अतिशयता पर]

बिखरणा।

क्रोध म आपे से बाहर होना समान म न आना फलना।

बिजण बोलणा।

बिनाघोषणपूर्वक आक्रमण कठिन काय हेतु सन्नद्ध होना विरोधी पर कठिन आघात करना।

वि०—सेना म आक्रमण के पूव बिगुल बजाकर आघात करने के लिए साव धान होने की सूचना दी जाती थी। उसी सादश्य पर यह प्रयोग चला है।

बिणा बात ।
 निष्प्रयोजन अकारण ।
बिराग लागणा । —मैं फिरणा ।
 चिंता लगना उदासीनता एवं विमुखता उत्पन्न होना चिन्ता में घूमना ।
बिराणा ।
 मुह चिढ़ाना, अन्य का अपरिचित ।
 प्र०— अपना नहि दस बिराणा है ।

बुडक मारणा ।
 तेजी से मुह भर लेना, काटना ।

बेट्टी बाप क होणा ।
 अपने अधिकार की बात, काम-स्वतन्त्रता की स्थिति परवशता से मुक्ति ।

बेट्टी रोट्टी करणा,   —एक होणा ।
 गाली सुनाना व्यवसाय एव सबंध एक होना ।

बेपढों मे चिट्टी आणा ।
 अबोध को आमंत्रण । (कोई जब जान न पाए कि संकेत किसके लिए है ।)
 [अनिश्चय की स्थिति]

बेपन्दी का ।
 आधारहीन, अस्थिर मति जिसकी सास न हो ऐसा व्यक्ति ।
बेरा पटणा । —काढणा ।
 ब्यौरा प्राप्त होना खबर लगना रहस्य ज्ञात करना ।
 प्र०—आज्ज यादमी का के बेरा पटै, सिबी बढ़िया लत्ते पहर फिर ।
 —हरगुलाल का उसी गां का हैं यो बेरा काढगा भला कैसा बात हुई ।
बेरुआ बेरराण होणा ।
 नितात नष्ट होना ।

बेन्ह बांधणा ।
 पीडा के कारण हाथ पर पटकना हाथ, पैर बाध कर डालना ।
बल का मू होणा ।
 मूख व्यक्ति का सबोधन, कोई बिगाड करे उस समय का सबोधन ।

बळ के दात —दीहे, —ब्याहा ।
 यथाथ का ज्ञान, बडी-बडी आखें, महा कजूस व्यक्ति का कुछ उदारता दिखाना ।
 [असभव घटना]

बोक होणा।
फूल कर बहुत मोटा होना।
प्र०—मुफ्त के माळ खा-खाक बोक हो रया है।

बोल मारणा।
ताना देना उपालभ जली-कटी सुनाना।

भ

भगौणियां (निरा)।
अति सरल व्यक्ति अबोध मूर्ख।
वि०—कुरना मटौना बुलन्दशहर जिले म गुलावठी के निकट जाटो के दो गाव हैं। पुराने समय म अशिक्षा और कृषि-कर्म मे रत वहा के लोग अति सरल रहे हैं जिनको अबोधता के कारण मूर्ख तक की सज्ञा दी गई। भगौणिया कहने स एसे सरल व्यक्ति का बोध होता है। किन्तु अब वह स्थिति नहीं है।
निरा=नितात पूर्णत ।

भरपाई होणा।
किसी वस्तु के विनिमय म यथोचित धन प्राप्त हानि पूर्ति।
प्र०—ठोक्कर लगके तेरा खोमचा गिर ग्या तो भाई हम सै उस्की भरपाई कर ने और के कहै।

भरा बठणा।
सरोष होना मन म कुपित करने वाली बात धारण करना कुपित होना द्वेषपूर्ण आक्रोश।

भरे पेट की बुक्कळ या।
समृद्धता के कारण इतराना क्षुधा-पूर्ति होने पर खाद्य सुस्वादु चीजो मे दोष निकालना।

भसरा टेढ़ा करणा। —बिखेरणा।
मारपीट कर तिरछा मुह करना हानि करना मारधाड कर दुर्दशा कर देना।
भसरा=मुह ।

भाइया खाणी।
गाली (सास ननद अथवा कोई भी वधू अथवा अन्य को भी चिन्तन के लिए यह गाली देती हैं। भाई बहिन को अति प्रिय होता है। उसके सम्बन्ध म एसी भावना अवाछनीय तथा रोषप्रद ह।)

भाग जगरणा।
तकदीर सवरना, उत्तरकाल।

भुम्बळ में धँसता बेरा।
अधिक उतावली दिखाना।
वि०—भूवत म मोटी रोटी नही गिर सकता। यह जानत हुए भी कि इस भाँति काम सिद्ध न होगा जल्दी मे कारण वही करना।

भुस म सोपणा —में नाज।
दोष दुराने का यत्न, किसी से हानि हो जाने पर उसको बचाने के लिए कुछ बात कहना ऊपरी सहानुभूति दिखाना। हानि होना, सकट उत्पन्न होना।
(भुस से नाज पृथक करने की कष्ट-साध्य प्रक्रिया के सादृश्य पर।)

भूस में लठ मारणा।
हानि करना, किसी वस्तु को छितराना।
[यथार्थ कहने पर जब कोई कुपित हो तब कहा जाता है]

भूड बाटणा, बटारणा।
मुक्त हस्तदान।
वि—वधू की विदा अथवा किसी धार्मिक आयोजन की समाप्ति पर ग्राम सीमा पर पहुंच कर जो भी सामने आए उसको समुचित दान देना हिन्दुओ की एक लोकप्रथा रही है। अनायास प्राप्त धन बटोरना।

भूत कुत्ते लगाना।
कलकित कर हानि पहुचाना, दोषारोपण कर उस सबध म बहुत कहना सुनना।

भूत लगाना, —बनाना।
दोषारोपण। पागल करना।

भेड का फुपका, —भया होना।
मूरख मनुष्य। [दोनो समानार्थी]

भेस मरणा।
रूप बदलना छद्मवेष धारण करना।

भौहो त मच्छर मारणा।
रूप एव कमनीयता का आतक उत्पन्न करना अधिक इतराना, नखरा दिखाना। [रूपगर्विता का लक्षण]
प्र०—ए बोब्बो, चिराक दिल्ली की तो भौहों तै मच्छर मारैं। (अपने रूप के घमड मे किसी को महत्त्व नहीं देती)

वि०—भौहों त मच्छर मारणा=रूप-शलभ बनाना ।
(कटाक्ष से घायल करना ।)

म

मक्खी मारणा ।
अलमाना, ठाली रहना ।
प्र०—मुख्त्यार तसीळ म मक्खी मारें ।
मचोर लगाणा ।
बहुत लोगा का किसी एक स्त्री के पीछे वासना तुष्टि के लिए लगना ।
मचोर=नजीबाबाद (बिजनौर) मे कत्था बनाने वाले मजदूरो का गिरोह ।
मटिआल्ले चुल्हे ।
सबकी समान दशा । एक सी आर्थिक स्थिति ।
वि०—धनाभाव से उत्पन्न असामर्थ्य प्रकट करने के लिए प्रयुक्त ।
मडक मारणा ।
अनसुनी करना । आलस्य दिखाना । टालना ।
मजा मारणा ।
आनन्द करना । [अवना-सूचक]
मढे बेळ चढना ।
काय सफल होना ।
प्र० हमें दीख रया है यो बळ मढे नी चढै चाहे कुच्छा करलो ।
मणके पिरोना ।
माला के छोट दाने पिरोना । धीरे धीरे किसी के कान म कोई बात डालना । बडी सावधानी का प्रदशन कर कोई काय करना ।
प्र०—रातो बहू मणके से पिरोव्है । [पिशुनता]
—ऐस्से तू के मणके पिरो रई है ।
मणौतो मणाना ।
किसी देवी देवता का प्रसन्न करन के लिए विनय । चाटुकारी ।
वि०—मणौती किसी काय विशेष की सिद्धि के लिए मानी जाती है, तथा उसकी पूर्ति पर भेट-पूजा का विधान किया जाता है ।
मणौती=मिन्नत मान्यता ।
मथन करणा ।
षडयन्त्र रचना । [illegible]

मथन=मिथुन (जोड़ा बनाना) भ्रमणा।

मन गावळा होणा।
मन में दुर्भावना होना। उत्पात होना। [विरक्ति सूचक।]

मन गुन की।
आंतरिक। अभिन्न।
वि०—बात, एक व्यक्ति दोनों के लिए कहा जाता है।
प्र०—दो घड़ा बहुँ तो मन गुन की सुणाऊ।
—इसते तो बडा प्यार है तेरा वह मन गुन की जो मिल गी है।
[समान रुचि, स्वभाव]

मन मोयना, —मारी होणा —मोल लणा, —बेधणा,
आसक्त होना। रीझना। रिझवार। वनेप होना, दुखी होना। वशीभूत करना। हृदय दुखी करना।

मरखणा।
मारने वाली (सींग चलाकर) पशु। झगड़ी झगडालू।

मल्हाणा।
प्रसन्न करना। र र करके कुछ गाना। [शिशु को सुलाते समय]

मसाण लगना मसाणी लेज्जा।
प्रेत बाधा होना। मौत उठाल। मसाणी=श्मशान दवी (मृत्यु)।

माडे माडे।
विशालकाय, लम्बे-चौड़े।

माथा पचणा, —पच्ची, —ठोकणा, माथे मारणा, सिरमाथे रखणा, —फोड़ना।
सिर दर्द। बहुत कुछ कहने-सुनने से होने वाली मानसिक थकान। समझाने का भारी प्रयत्न (असफल)। भाग्य को दोष देना। निज को भाग्यहीन स्वीकारना। जताकर सौंपना (अनिच्छापूर्वक)। कृतज्ञतापूर्वक ग्रहण करना। सिर पीटना। पश्चाताप। आघात पहुँचाना।

माह मथ ककोडडे।
बिना अवसर की बात।
प्र० कुछ सुण्या छियाछट बस का ताऊ इब क्या करने चल्या है,—माह मैंथ ककोड्डे और के ?

मार मुळक के।
अधिक संख्या में।

प्र०—व्हा मार मुळक्के लोग हैं।

मितमिनाणा।

नाक म अथवा गला दबाकर बोलना जो समझ न पडे।

मिळी भगत होणा।

महमति, षड्यंत्र।

मूह मे क दात।

रोक टोक। असुरक्षा।

प्र०—मलकाजाद्दी के राज म सोणा उछालते चले जाग्रो—कोई या बी ना पुच्छे हा क मुह म क दात हैं।

मलका जाद्दी=मल्का विक्टोरिया।

[१८५७ गदर के बाद की सुव्यवस्था का वर्णन]

मुह बाणा, —लटकाणा, —छितवाणा, —करणा —भरणा, —बिचकाना, —मसलणा, —जोरी करणा, —जोडना। —मोडना, —माणा, —मिठियाणा, —पकडना —लाल पीला करणा,

लालच दिखाना। बाणा=फैलाना। मोह प्रकट करना। सुस्त होना। चिढाना। जबान जोरी दिखाना, बहस करना। काटना। घूस देना। चिढाना। किसी वस्तु को बितराना (अरुचि दिखाकर बुरी सिद्ध करना) मारना-पीटना। कुतर्क। हठवादिता। (कम आयु के व्यक्ति का गुरुजन के प्रति) अभद्र व्यवहार बुराई करने के लिए लोगों को इकठा करना। परास्त करना विरक्त होना। वाछित। चाटुकारी। बात टोकना। क्रोध प्रदर्शन।

मुकरणा —मुकरणी।

किसी बात को कह कर नाट जाना इकार करना।

पहेलिका। बलाने की कहानी।

मुद्दा देणा, —मिलणा।

किसी अपराध की साक्ष्य म कोइ वस्तु प्रस्तुत करना। अपराध साक्ष्य कोई ऐसी वस्तु प्राप्त होना जिससे अपराध सिद्ध हो।

मुस्से कू हळदी की गाठ मिलणा।

अनोखी अनहोनी प्राप्ति पर तुच्छ व्यक्ति का गर्व दिखाना किसी उपलब्धि पर स्वय को महत्वपूर्ण मान बैठना।

मूत मूत क कुडवारे भरणा।

कठिनाई सहित कजूसपन से कोई काम करना लालच के कारण थोडी थोडी मात्रा मे दानपुण्य के लिए वस्तु रखना किसी कार्य को लापरवाही के साथ करना।

मेल ठोकरणा।

खूटा गाडना। कोई विशिष्ट काय कर उदाहरण बनाना।

मोडा मारणा।

निष्फल शुष्क होना। मोडा=कल्लर खेत।

प्र०—रामफळ कुच्छ दरण कहे था वो बी मोग मार ग्या।

र

रपट लेणा।

कायसिद्धि कर चुपके से चल देना। बे रोक टोक जाना।

वि०—काई पर फिसलने से शीघ्रता से।

रकम बनाणा —करना।

धन कमाना कोई चीज बेच कर पैसा बनाना रकम=नक्दी।

रगरूट।

नया सीखतड। नया भरती किया गया फौजी जवान।

रड रोवणा।

बार बार किया जाने वाला एक ही किस्सा। अरुचिकर। [अनुभवी

रांद काटणा।

जजाल दूर करना। झगडा समाप्त करना। बेगार टालना।

प्र०—बेच्चे भी इस गा क दूध की न मूत की —राद काट इस्की यार। [लापरवाही से काय]

—कई दिण से वो मेरे कगे पड रह्या हा आज म ने फटकार दिया राद

कट ग्यी।

राड का जमाई होना।

जिसका भरपूर सत्कार न हो। हिस्सा बाट म घाटे मे रहने वाला व्यक्ति।

प्र०—ओ भाई तन्ने सारा माळ हथिया लिया हमनू बी— दे यार हम

कोई राड के जमाई हैं।

राड का सांड होना।

उद्दड अनुशासनहीन पितृविहीन स्वछद युवा होना। [अभिभावकहीन]

रास आणा।

अनुकूल पडना। लाभकर सिद्ध होना।

प्र०—हमें तो दल्ली भई रास नी आई। कमाई धमाई तो दूर उल्टे व्हा

लुट ग्ये, जब और व्हई रकम बना रए हैं।

राम दुहाई देना ।

ईश्वर साक्ष्य । शपय । (किसी काय से विरति दिखाने अथवा अतिशय अत्याचार सहन करने पर यह प्रयोग व्यवहार मे आता है ।)

प्र०—इब खाई सो खाई आगे खाऊ तो राम दुहाई ।

रेख मे मेख मारणा ।

लक्ष्य वध । कठिन काय सिद्धि । [नारि प्रसग के सदभ माद्दस्य मे]

रेंट मेंट करणा ।

सब कुछ समाप्त करना । चिह्न न छोडना । आभार स्वीकार न करना । [अकृतज्ञता]

प्र०—उसणे तो म्हारा सारा गुन अस्सान रेंट मट कर दिया ।

रेत मे मूतणा ।

अनुपयोगी काय । (जिसका कोई आभार न माने) [कृतघ्न के प्रति उपकार]

प्र०—उस्के लियो कुछ करो, सब ऐस्सा अ जैसे रेत मे मूतणा ।

रोट माणी करणा ।

अधिक लाभ के लिए खीच तान । बेइमानी । छीना झपटी । (क्रीडा अथवा काय म कोई स्थिति एव वस्तु बलपूवक या कौशल से प्राप्त करने का यत्न)

प्र०—राटमाणी करणा भले यादमी का काम ना है । दूसरा का माळ जबर-दस्ती हत्याणा के भली बात्त है ।

रौंट मचाणा रौंदल करणा ।

शोर मचाना । कोलाहल । गडबड । जान बूझ कर कोई बात छिपाने के यत्न म अन्य बात आरभ कर देना ।

रोग पालणा, —धारणा —भरणा, —लगाणा,

जान-बूझ किसी झझट म पडना । अथवा झझट दूर करना । बीमार रहना । असह्य को सहन करना । दुखदाई वस्तु व्यक्ति को साथ रखना ।

रोज मरणा ।

दिखावे के लिए किसी के सामने रोना । मिथ्या शोक प्रदशन । रोज=रोदन ।

प्र०—पहळे तो बालक की गेहत न करी अब मरग्या तो रोज भरण बट्ठो है ।

राम कू प्यारा होणा ।

मृत्यु को प्राप्त होना । (कम वय मे निधन पर ही विशेष रूप से कहा जाता है) ।

प्र० — के कहू इस भाग की बात । गाडी भरा कुणवा हा । एक एक करके सब राम कू प्यार हाग्ये । मैं ई दुतिया बच रई ऊ ।

रीढ कू पचणा, ।
विवशता म परम्परा निर्वाह । असमथ होते पर भी कोई काम करने का साहस करना ।
प्र० — इब उनके पास पल्ले तो ऐसा कुछ ना है फिर बी रीढ पचे जा हैं ।
वि० — जिस भाति रीढ मनुष्य को सीधा खडा रखती है वस ही किसी काय द्वारा कुल-परम्परा का बलपूवक निर्वाह नकनामी के लिए किया जाता है ।

रग पटठे जाणना ।
पुरुष परीक्षा । आयुबल का अनुमान । चाल को पहचानना (लक्षणा) ।
प्र० — मैं तेरें सब रग पट्ठे पिछाणू हूँ मर सामन भोत बात न बनाया कर।
वि० — शालिहोत्र शास्त्र में पशुओ की परीक्षा उनके गुण अगुण का अनुमान रग न पुट्ठ देखकर किया जाता है । [उपमा मूलक]

ल

लकारी होणा ।
झूठ-सच बात बनाकर कहने वाला । नमक मिच लगाने वाला (बात को रुचिकर बनान का प्रयास)
वि० — ऐसे स्वभाव वाली स्त्री को लका कहत हैं ।
प्र० — यो रमडी बडी लका है, अपणी आर ते बात गढ ।

लबा होणा, लबी ताणना ।
चले जाना प्रस्थान करना । किसी बात को बढाना आराम से मोढ़ कर सोना (चिंता रहित स्वभाव दशा) ।

लबे पर पसरणा — पसारणा ।
जल्दी-जल्दी चलना मरना (मतक क हाथ-पाव कड होन म पहिले सीधे कर दिए जाते हैं)

लय लगणा ।
बराबर एक बात हा कहे जाना जल्पना रट लगना ।

लचपन झाडना झडना ।
मूखता प्रकट करना काय अथवा व्यवहार म मूखता प्रकट होना । कुरूप होना ।

लक्डी देणा —फेरणा, —उल्टू की।
शव जलाना। (लकडी देना—शव दाह के समय की एक प्रथा जिसके कारण मतक के निकट सम्बन्धी उसकी चिता पर अपने हाथ से पाच या सात लकडी डालते हैं) वश में करना। वह युक्ति जिससे कोई वशीभूत हो। [तान्त्रिक]

लगा लूतरी —करणा।
पिशुन स्त्री। इधर उधर की लगाने बुझाने वाली (लडाई झगडा करा देने वाली स्त्री) जिस तिस की बुराई करना, लूत=कुत्ते की खाज।
वि०—ग्राम्मियों को यह रोग हो जाने पर कठिनाइ से छूटता है।
प्र०—कुछ यार्म्मिया कू लगा लूतरी करणे मे आनन्द आव्वै।

लटटू घूमणा।
किसी की सर्वोपरि शान रहना आतक छाना।
प्र०—आजकल तो गाम मे दिमाणा का लटट्ठ घूम रया हैं।

लहणी फागणी।
सौभाग्यवती, परिवार के लिए सुखकारी।
प्र०—नई बहू आई है भगवान् तमै लैणी फागणी करै।

लहर पटणा।
आनन्द सुख होना, अनायास उपलब्धि।
प्र०—भुग्रा का माळ पा क, तेरी लहर पटगी। [कामना पूर्ति]

लहलोट होणा।
किसी वस्तु लेकर वापस न करने वाला दूसरा का माल लेकर बराबर होने वाला।

लाख का घर खाक होणा।
सम्पत्ति का विपत्ति म परिवतन। विनाश होना, सकल्मय दशा वभव नाश।
प्र०—माइयाँ के मरते ई उगका तो लाख का घर खाक होग्या, सब उसी की कमाई म था।

लाठी उठा क धरहूँ रखणा।
अतिथि का अतिशय सत्कार और अधिक रुकने का आग्रह।
वि०—यदि किसी अतिथि की लाठी उठाकर घर म छिपा दी जाती है तो इसका अर्थ उनसे अधिक दिन रुकने के आग्रह होता है क्योंकि पहले लाठी यात्रा की आवश्यक वस्तु थी जिसके बिना कोई कहीं जा न सकता था यथा।

लाठी म गुन बहुत हैं सदा राखिए सग।
गहरी नदी नाला जहा तहा बचावे अग॥

वहा बचान भ्रग भपट कुत्ता कू मार।
दुस्मन दावागीर होय ताहू को भारे॥
कह गिरधर कविराय सुनो ह धूर के बाटी।
सब हथियारन छाडि हाथ म लीजै लाठी॥'

लाठी उसांल।

बिना दखे माल (पशु का) सौदा कर देना।

वि०—पशु विक्रय के समय जब खरीदार लाठी उलास कर उसका मूल्य घोषित कर देता है तो सौदा पक्का हो जाता है।

लारे लगाएा, —लारों श्राएा।

मिथ्या दोषारोपण साथ श्राना (यथा, 'अधा मौत दा जरो भाव)

प्र०—मेरेइ लारो श्रा रया हा जाणों वहा बिचळ ग्या।

—कुच्छ लुगाइया म लारे लाएो की श्रादत्त हो।

लीतर काढना।

जूता निकालना श्रपमानपूर्वक धमकाना। लीतर—फटा जूता।

प्र०—मेल्ले म किसी न छेड़ैगा तो लीतर काढ क ना जडेगी। (जूता निकाल कर न मार देगी)। [श्रपमानजनक दड]

लुगाइयो का छोलएा।

जिस सामग्री से विधाता ने स्त्रियो का निर्माण किया उसी का श्रवशिष्ट एव निकृष्ट भाग—जनानिया। स्त्रियों की सोहबत व बाता मे रस लेने वाला उनका श्रनुकरण करने वाला।

छोलएा—किसी वस्तु पर मे उतारा गया छिलका। लुगाइया का मैल, धोवए—(श्रर्थात् उनस भी गया बीता)

प्र०—रमचदा तो पूरा लुगाइया का छालए है इसप कूटना पीसएा सबी श्रावै, वहो नाच्च बी दिखादे।

लुटिया डूबएा।

कुख्याति होना व्यवसाय श्रथवा किसी काम म श्रसफलता, हानि, श्रनुचित काय-व्यवहार के कारए निन्दा। बलहीनता का प्रदशन।

प्र०—श्ररै डुब्बा डरी तने तो लुटिया डबोदी, यो तएाक सा गडा तुझ से ना उठ्या। लुगाई बो डढ मए का भराट्टा सिर प धल्ल जा (डेढ मन बोझ सिर पर उठा कर चली जाती है।)

लोटटे निमक।

सब सम्मति। सभी की सहमति, किसी काय क लिए सभी का एक मत होना।

वि०—नमक सब को गला कर एक कर देता है । उसी भांति विभिन मतो का एक मे विलय होना, इस प्रयोग का तात्पय है ।
एक फारसी कहावत है—
'हर न कि दरकाने नमक रफत, नमक शुद ।'

स

सटकणा ।
शीघ्रतापूवक गले के नीचे उतारना । पूवत आत्मसात करना । चुपके ही चत देना ।
प्र०—खा पी के वो चुपकई सटक ग्या । ग्रौर वे 'मुलफियाई यार किस्के, दम लगाया खिस्के' ।

सब ! साक्का करणा ।
प्रसिद्धि का, महान् काय । झझट करना ।
प्र०—मेरठ म रखीरसिंग का साक्का जोग्गी सरगी पै गात्ते फिरैं ।

सबर लोल होणा ।
श्रवर भक्खी (अपर भक्षी) भी इसी सदभ म, सब कुछ (समस्त) सटक जाने वाला, सबको खा जानवाला । (व्यग्य म परिवार क सभी व्यक्तियो के मरने के पश्चात् बच रहने वाला एक)
प्र०—इतणा दूध हा सभी गटकग्या वे कहणे हैं तेरे सवरलीन होरया ग्र । मिटा सबरलील जो ठहरा सबी भाई बहणा मा बाप तक कू सटक गया । (दूसरे ग्रथ म सटकना मे लग्णा है ।)
[भोजन भट्ट ग्रथवा ग्रभागे एकाकी पर व्यग्य]

सरम की कोयळी ।
ग्रति लज्जाशील । सकोची । कोयळी=गठरी,
प्र०—ऐसी सरम की कोयळी ही, तो घर तें क्यू निक्ळी ।

सांग भरणा ।
छद्म-वेष बनाना ग्राडम्बर करना । धोखे म डालने के लिए कोई सज्जा ग्रथवा क्रिया धारण करना ।
प्र०—कस्से साग भर भर कै ग्रब ग्राव्व उमर बीत गई जिब तो पुच्छी ना कस्स दिए कटटे ।

सिगल डौन होणा ।
ग्रवनति की ग्रोर । हीन दशा । रतिपूर्ति के पूव वीय स्खलन । पतन-सूचना, रेलगाडी ग्राने की सूचना ।

प्र०—पहले वडा तनतणा हा अव मुच्छ न्नि तें गिगल-डीन है उन्वा

सिखर चढा क गेरणा । [आदृश्य मूत्रक]

ऊचा उठाकर गिराना । सिर चढाने के पश्चात् अपमानित करना । उपेक्षा ।
शिखर=पवत की चोटी । मनुष्य की खोपडी का ऊपरी भाग । (लक्षणा)

सिर प का धरणा —चढाना ।

स्वामी पति रक्षक । बहुत सम्मान व स्नेह करना जिसस दूसरे व्यक्ति का स्वभाव बिगड जाय ।

प्र०—पहल तमी नें बहू का सिर चढाया अब वेट्टा तमी भुगतो ।

सिर प हाथ धरणा ।

रक्षक समथक सहायक बनना । शपथ लेना ।

प्र०—जिब सिर प हात्थ धरण हारा कोई नड होत्ता तो दुणिया दुखी करण लागै ।

सिर स बटठा करणा ।

भारी अहसान करना सहारा देना कठिन समय म काम आना (रोग-दशा म सिर को सहारा देकर रोगी को बठाया जाता है)

सींग मारणा ।

दुर्व्यवहार करना । आघात पहुचाना । हानि करना (व्यग्य)
पशुता का व्यवहार ।

प्र०—मन्ने कोई इस्के सीग मार दिए योई तो कह र्या हू क उट्ठक न्हा धो काम पै जा ।

सिर मारणा । —फोडना —गेरणा, —बचाणा —चक्कराणा —समाणा —उठाना —फुट वल —पडना ।

जल्पना करना । किसी स बहुत बातचीत करना । कुछ समझाने का सविस्तर यत्न । झगडा । मारपीट । जिम्म लगाना । सिर धरना । आत्मरक्षा । चक्कर आना । अक्ल म बठना बुद्धि ग्राह्य हाना । विनोह करना । लडाई झगडा । पीद लगना । जिम्म होना ।

सुतेमण बनणा —होणा ।

चतुर । कुशाग्र बुद्धि । वाग्कुशल (पु० लि० सुतमणा)

प्र०—आज तो रोट्टी पाणी बडा जल्दी निमटा क सुतेमण बनगी ।

वि०—सुनेमन एक वन्कि आचाय जो अपनी कुशाग्र बुद्धि के लिए प्रसिद्ध

थ। लोक व्यवहार में लक्षणा से इसका अर्थ व्याजस्तुति में प्राय किया जाता है, अथवा कभी शुद्ध अभिधा में। [चतुराई प्रकट करने पर व्यग्य]

सुथरी ढाळ।
सफाई के साथ भले प्रकार।
प्र०—अपणी आदत्त ही है, कोई यादमी काम सुथरी ढाळ कर कोई वेगार ई टाल्ल।

सूघणा।
टोह लेना। अनुमान करना।
प्र०—बाळक घर में के बणा है यो सूघते चळे आयें।

सूक की सी बाट देखणा —बलाणा —चिडी, —सूका।
गहन प्रतीक्षा। शुक्र देवता को प्रसन्न सतुष्ट करना।
वि०—शुक्रास्त के समय नव वधू ससुराल माइके नहीं आती जाती। यदि कारण विशेष से ऐसा करना पडे तो शुक्रोदय से दो एक दिन पूर्व उनको फिर उसी जगह जाना होता है, जहा शुक्रास्त के समय थी। इसी प्रथा को सूक बनाणा कहा जाता है।

सेई का काटा धरणा।
पारस्परिक कलह का बीज बोना।
वि०—लोक विश्वास है कि सेही नाम के जन्तु का काटा किसी के घर में रख देने से उस परिवार में कलह आरभ हो जाता है।
प्र०—इनके यहा की कभी बुझती ई ना, जणे एसा कौन सेई का काटा धर ग्या। काटा=कलहमूल (लक्षणा)।

सैना-बेनी।
आँखो आखो में बात करना। सकेत भाषा। गुप्त मत्रणा।
प्र०—कहो ! नणद भाब्बज में के सेणा-बेणी हो रई हैं।

सम्रूप करणा।
सब के सामने उजागर। प्रत्यक्ष रूप में कुछ करना अथवा कहना।

सोरणा काया।
स्वस्थ्य सुन्दर शरीर। कचन तन।

सोहले गुणाना।
प्रशसा में बुराई (व्याज स्तुति)। भली बुरी सुनाना। अप्रिय बातें। [व्यग्य वचन]
प्र०—बऊ यो सोहळे गुनाण में के कसर राख।

सौर का सा सौंडा ।
यह वस्तु, या व्यक्ति जिसके प्रति अनुराग न हो । [उपेक्षा भाव]
प्र०—क्यों रे भाई यो म्हारी सौड ता'न सौर का सा सौंडा सिमझ कै निच्चे क्या गर दी ।

सौकण धून की बुरी ।
सपत्नी की मूर्ति भी दुखद । सपत्नी डाह । प्रतिद्वन्द्वी निर्बल हो तो भी अवाछनीय ।
वि०—भारतीय नारी अन्य स्त्री को पति प्रेम साझेदारी नहीं चाहती ।

स्यांप की बामणी ।
देखने म सरल सुदर किन्तु भयकर हानिकर ।
वि०—एक छोटा साप जसा रेंगने वाला कीडा, बहुत यह प्राय काटता नहीं । किन्तु, कभी ऐसा हो तो मनुष्य तत्काल मर जाता है ।

स्यांप सूघणा ।
निरुत्तर, निश्चेष्ट । मौन रह जाना ।
प्र०—रे लाल्ला बोळता क्यू नइ, ऐसा के स्याप सूघ ग्या ।

स्वाद खोणा ।
आनन्द म विघ्न मजा किरकिरा होना ।

ह

हसी में खस ।
हास परिहास मे ही वमनस्य भी । (प्राय लोग परिहास म व्यग्य पर उतर आते है और तभी झगडा खडा हो जाता है ।)
प्र०—तणक-सी बात मे हसी म खसी होज्या है, किसी कू इतना छेडना ठीक नइ ।

हगे मूते की जडना ।
तनिक तनिक बात की सूचना देना साधारण बात भी शिकायत के रूप म किसी के सामने रखना, किसी क व्यवहार पर भरपूर दृष्टि रखकर उसकी आलोचना करना ।

हट्टा भरणा ।
विभिन्न प्रकार का सामान एकत्र कर उसका प्रदशन करना ।
हट्टा=दुकान का सामान ।
(हाट=दुकान से हट्टा शब्द का निर्माण हुआ है)

हटोटी फेरणा।

मारपीट कर दूर भगा देना, जो फिर सूरत न दिखा सके मुहँ छिपाना।

प्र०—जा चना जा नइ थप्पड मार क हटोटी फेर द्यूगा।

हडबौंग का राज होना।

सवथा अव्यवस्था शोरगुल, मनमानी जिसकी जो समझ म आए वही करना, स्वच्छता उच्छ खलता।

वि०—हडबौंग इलाहाबाद के निकट हरभूम नामक एक ग्राम है जो पुराण युग म प्रतिष्ठान एव आजकल झूसी नाम से प्रसिद्ध है। बईमानी और अव्यवस्था के लिए इसकी बडी कुख्याति है।

'अधेर नगरी चौपट राजा।

टका सेर भाजी टका सेर खाजा॥

की लोकोक्ति भी यही के लिए कही जाती है।

प्र०—रामदेई के घर म तो पूरा हडबौंग का राज है फूहडपन इतणा बी अच्छा नइ।

हडडे-गुडडे तोडना।

मारपीट कर हडडी-पसली तोडना, अधिक मार देना।

गुडडे=गोड, घुटने।

(घुटना टूटने पर व्यक्ति खडा नही हो सकता।)

प्र०—वो तो कसाई के ढब मार काल लौंडे के हडडे गुड्डे तोड के रख दिए।

हड्डे पेलणा।

कठिन परिश्रम करना, शक्ति न रहते भी कठिन काम करना।

प्र०—इती उमर हो गई तो बी होया हम तो हडडे पेलेई जाँ हैं।

हथ सेकवा।

स्वार्थी, दूसरो के सहारे अपना काम चलाने वाला, अपनी स्वाथ-पूर्ति कर विमुख होन वाला व्यक्ति।

वि०—जाडा म आग जलान पर हाथ सेंकन (गरमाई लेन) के लिए कोइ भी चलता जाता, कुछ दर के लिए आ बठता और चल देता है। उस यह प्रयो जन भी नहीं रहता कि उसके बाद आग रहेगी भी या नहीं। इस प्रकार वह जब अपनी आवश्यकता रहती है तभी तक वस्त्र म रुचि रखता है।

प्र०—अरी जा हथ-सेका तन्न के पडी है जो फिर दखन बी क काम रहया क बिगडा—बस तन्न तो अपणा काम तें काम।

हुर मे फूटणा।

बहुतायत म लापरवाही सम्पन्नता का अनुभव कर हानिकारक काय करना। (विवक से यथाथ का नान प्राप्त कर हानिकारक काय करना रीति अपनाना।

प्र०—तरी क्यू हुरे म फूट रयी हैं सब दिण एक से ना हुआ करते—पैसा बर्बाद करके बैठण नें दुख ही निकलै हैगा।

हलुए-मांडे उडाना।

सुस्वादु भोजन करना पुष्टिकर खाद्य लेना।

माडे=गेहूँ की मोटी पूरी।

प्र०—देखभाल करण हारा आजकाल कोई ना है जिवी ए हलुए माडे उड रए है।

हळदी लगे न फिटकरी।

मुफ्त म बिना व्यय क काय होना।

प्र०—कुछ जोग यो ही चाह्या कर क।

हळदी लगै न फिटकरी रग चोक्खा हो जा।

(बिना पसे के काम बन जाए)

हल्की जुबान का।

उचित अनुचित का विचार न कर जा मुह म आए कह देने वाला। गाली गुफ्तार करन वाला।

प्र०—र तू बडा हलकी जुबान का है, देखता भी नइ किस स के बात कहणी अनकहणी है।

हल्के जी का।

कोमल स्वभाव। सकुचित मनोवृत्ति। ओछा। कायर। डरपोक।

प्र०—एसा हळके जी का बणजान ते क दुनिया म काम चल।

हाडते फिरणा।

निष्प्रयोजन इधर उधर आना जाना। व्यथ घूमना।

प्र०—बीर बाणिया क लिया हाडते फिरणा' के अच्छी बात है।

हाड काटणा।

अत्यधिक शारीरिक दड दना।

प्र०—पहले मौलवी उस्ताज लोर बालकाँ क हाड काट्ट क धर दे ह फिर बी का' च्चू ना कर था।

हाथ धरणा फेरणा, —देणा, —पकडना —मारणा —चलाणा।
बहकाना। प्रभाव म लाना। वशीभूत करना। शीतला ढलना। (जब रोग का प्रकोप कम होने लगता है तब कहते हैं 'माता हाथ दे गई'।) सहारा देना। प्रतिरूप म ग्रहण करना। शपथ लेना। मारपीट करना शीघ्रता पूर्वक काय करना। किसी काय मे विघ्न डालना। अथवा कुचेष्टापूर्वक किसी का अग स्पश करना।

हाथ पीळे करणा।
विवाह करना। (कन्या के विवाह के फेरो के समय जब कन्यादान लेते हैं तो उसके दोना हाथा पर हल्दी का घोल लगाते हैं। इसी प्रथा के कारण यह प्रयोग चला है।)

हाम्बी भरणा।
वादा करना। स्वीकारोक्ति। किसी काय म सहायता देने का वचन।
प्र०—पहळे तो उन हाम्बी भर ली फेर अपणी बात्त ते पलट गया।

हींग हगणा।
अधिक निबल, दुबल होना। कजूसी के साथ कुछ व्यय करना।
[आर्थिक एव शारीरिक असामर्थ्य अयोग्यता सूचक]
प्र०—अब उण के बस का कुछ ना है, वो आप्पी हीग हगणा लाग रये हैं।
वि०—इतनी निबलता की गुदा मे से मल भी कठिनाई से थोडा थोडा बाहर निकालन की शक्ति-मात्र शेष हो।

लोकोक्तिया

अ—इ

अगिया फटी के देख बेट्टी तो दुराळे की।

निधन होकर भी कुलशील का अनुभव। दीनावस्था म भी सम्मानपूर्ण जीवन। फटे हाल होने पर भी रईसी की बू। [व्यंग्य]

(ग्राम कल्लर हेडी (जि० सहारनपुर) के निकट ग्रामा के लोग इस लोकोक्ति का व्यंग्य में भी प्रयोग करते हैं जो इसका वास्तविक तात्पय नही है।)

वि०—अग्रेजा की काबुल पर चढाई के समय दौराला एक बडा और सपन्न ग्राम था, जहाँ के यशस्वी धनवान जाट कुवर प्रधान की कन्या का मेरठ के किसी प्रसिद्ध जाट परिवार म विवाह हुआ था। कालगति स उसको निधनता का मुह देखना पडा। उन्ही दिना जब वह एक बार अपने जजर वस्त्रो म गगा स्नान के लिए गई, वहाँ किसी व्यक्ति ने स्तनो तक ढकने म असमथ उसकी अगिया देखकर उसका तिरस्कार किया। किन्तु तभी अपनी पत्नी, जो साथ ही थी, के द्वारा उसके परिवार का परिचय प्राप्त कर, उससे क्षमा मागी। लोकोक्ति वाक्य वस्तुत पुरुष के अज्ञान पर व्यंग्य था, न कि स्त्री की हीन दशा पर। कहते लोकोक्ति के मूल मे यही घटना है। इसमे तिरस्कार भाव रखन वाले की आलोचना है और निधन कुलीन क प्रति सहानुभूति। [किसी प्रकट निधन को सम्मान देने की वृत्ति। कुछ शेष न रहने पर भी अतीत पर गव करने वाले के प्रति व्यंग्य]।

अधा बाटे रेवडी फेर फेर अपनों कूई दे।

अधा=नेत्रहीन, अज्ञान।

अज्ञान नेत्रहीना मे भी निजी लागा को ढूढ कर (पुनर्वार) लाभ पहुँचाने की प्रवृत्ति होती है।

[मानव की सहज अनुदार वृत्ति पर व्यंग्य]

वि०—पतित स्वार्थिया मे मरा-तेरा करने का स्वभाव पाया जाता है—ज्ञानियो के लिए मनुष्यमात्र बधु हैं अत सभी के साथ समान व्यवहार अपेक्षित है। लोकोक्ति म केवल नेत्राध के व्यवहार पर ही टिप्पणी नही है, अपितु ज्ञानाध पर भी है क्याकि उनमे भी अपेक्षित उदारता का अभाव देखा जाता है।

रेवडी—जाडे की ऋतु म तिल और गुड के योग से बनने वाली सुस्वादु पौष्टिक वस्तु।

इस लोकोक्ति पर टिप्पणी स्वरूप एक और पक्ति कही जाती है— तेरी क्या फूट गई हात् बन्ना क्यू ना ले। तात्पय, यदि कही स्वाय का साम्राज्य

है तो अपनी अधिकार रक्षा की चिन्ता स्वयं करनी चाहिए। पतित अपमानियों के साथ स्वयं भी उदासीन बन रहने की आवश्यकता नहीं है।

[स्वावृत्ति पर व्यंग्य]

अभी तेरा भइया आया—मेरी गोदी मे आञ्जा खिल जाँए।

असहाय की कोई सहायता कर दे तो जाना जाय स्वयं उसका ढवा पीटने से क्या लाभ।

सहायता का भ्रम देने वाले तो बहुत हैं, सहायता करने वाले कम ही होते हैं।

'गोदी मे आञ्जा' की लक्षणा यही है कि सहायता मिल सके, तभी उल्लेख के योग्य है।

वि०—प्राय देखा जाता है कि पारिवारिक और निज जन ही कठिनाई के समय आँख चुरा जाते हैं। भाई से कठिनाई में सहायता की अपेक्षा तो की जा सकती है परन्तु वह सहायता कर दे तब न ?

'कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक।'
मरते दम आँख को देखा है कि फिर जाती है—

[असहाय दशा में अप्रत्याशित लाभ के प्रति]

अभी दाई गाड मे हात्य।

कार्य मे अक्षमता अकार्यकुशल होने के कारण हानिकर अवांछित प्रयत्न (जिससे सिद्धि असंभव हो।) कार्यसिद्धि के लिए कुस्थान में अनियमित प्रयास।

[अवांछनीय प्रयास पर व्यंग्य]

अधे आगे रोवे अपनो नैण खोवे।

अज्ञानी अथवा स्वार्थी के प्रति आत्मनिवेदन मे हानि की संभावना होती है।

नैण=नेत्र, ज्योति तेज।

अगर राज दिली कहकर जलीलोख्वार होता है।
निकल जाती है जब खुशबू तो गुल बेकार होता है—

[उदासीन एवं अज्ञानी के प्रति आत्मनिवेदन निषिद्ध]

अगास का थूकचा मु मे आय।

भारी गर्व का अपमानपूर्ण पतन होता है।

दूसरो के प्रति दुर्व्यवहार करने वाले स्वयं दुर्व्यवहार के भागी होते हैं।

[अतिशय गर्व एवं दुर्व्यवहार-वृत्ति निषेध]

अपणा रतन गमाके, घर घर मागी भीक।

अपनी सपत्ति नष्ट कर परमुखापेक्षी होना। अदूरदर्शिता का परिणाम, अति व्यय का फल।

अपने की अपेक्षा दूसरे के प्रति आकर्षण। [नीति]

अणदेखे राजा चोर।

अनान में किसी को भी लाछित किया जा सकता है।

अचिह्नित रह जाने के विश्वास में महान व्यक्तियों में भी दुर्वृत्ति उत्पन्न हो सकती है। [अनपेक्षित लाछन लगाने के समय]

अल्ला, मेरे बाब्बा कु रिजक ना मिलियो, नइ कडों कु भेजगा।

प्रमाद की चरम सीमा का निदर्शन। निज सुख म व्याघात न हो, चाहे परिवार की दुर्दशा होती रहे।

वि०—यह लोकोक्ति विशेषकर बुलदशहर जिले मे कही जाती है। उपला कडा, करसी (स० कारीष) शब्द वहीं बोले जाते हैं। मेरठ मे उपले को गोस्सा कहते हैं।

अपणा घर, हग भर।

जिसका स्वामित्व अपना है ऐसे स्थान म स्वतन्त्रतापूर्वक कैसे ही रहा जा सकता है। निज स्थान म काय की स्वतन्त्रता रहती है।

वि०—इसके विपरीत दूसरा कथन है—'दूसरे का घर थूकणे का डर' अन्य किसी की जगह म कोई छोटी बात करने म भी भय रहता है। हगने और थूकन की तुलना से स्वतन्त्रता के महत्व पर बल दिया गया है।

महाराज युधिष्ठिर ने धर्म के अनेक प्रश्नो म एक का उत्तर देते हुए कहा था—'ससार म सुखी वही है जो एक समय आधा पेट भोजन पाकर रह जाता है परन्तु किसी दूसरे की भूमि म नही रहता।' —महाभारत

[वाणी एव काय की स्वतन्त्रता अनुभव न होने के समय]

अपणे मरे बिणा किया सुरग दिखे।

दूसरो के बल पर कोई सिद्धि नही हो सकती। सुख-लाभ अपने परिश्रम ही से सभव है। [काय दायित्व दूसरे को सौंपने और उसकी पूर्ति न होने पर]

अपणा मार छाह गेरे।

निज जनो की कठोरता म भी सहानुभूति का अश रहता है। परिचितो द्वारा *मिले दड म भी सुख।* *[अज्ञात सहानुभूति की आशा में]*

अपणी अपणी तूमडी अपणे अपणे राग।

सबके स्वार्थ भिन्न भिन्न होते हैं। व्यक्ति की अभिव्यक्ति उसकी भावनानुसार ही होती है।

पाठान्तर—तूमडी के स्थान पर ढपली भी बोला जाता है।

[यति के स्वाश्रय होने पर]

आऊ न जाऊ घरू बेटठी मगळ गाऊ।

आलसी निजमयता म सुखी मगल=शुभ गीत।

[आलसी के आचरण पर टिप्पणी]

आधी के आम।

अप्रत्याशित लाभ।

वि०—यह उस काल की लोकोक्ति है जब मौसम का अनुमान लोग ठीक-ठीक नही लगा पाते थे जो आज क विज्ञान न सभव कर दिया है।

[अनायास उपलब्धि पर]

आग नाथ, न पीछे पगहा।

उन्मुक्त जीवन असम्बद्ध दायित्व मुक्त एकाकीपन।

[स्वच्छन्द व्यक्ति के आचरण पर टिप्पणी के समय]

आ पडोसरण मुझ सी हो।

अन्य को अपने समान (दुखी) देखने म सतोष दूसरो को अपनी भाति का देखने की कामना। [क्रूर अन्य के लिए अहितकर स्वभाव की आलोचना]

वि०—यथा, कोई स्त्री विधवा हो जाय तो वह अन्य को भी वसा ही चाहने लगे। लोकोक्ति म दुख म समान देखने की इच्छा का सकेत है सुख म नही।

आ बळ मन्ने मार।

व्यथ झझट म पडकर हानि उठाना किसी को हानि पहुचाने के लिए अवसर देना। [दूसरे को उत्तेजित कर व्यथ हानि उठाने की सम्भावना पर]

आत-दात बह गई मेरी काणी बहू रह गई।

आडम्बर समाप्ति पर कठोर यथाथ का उन्य माया व भ्रम म दुख एव पश्चाताप प्राप्ति। काणी=एकाक्षी।

वि०—विवाह म प्राप्त दान दहेज तो अल्प काल म समाप्त हो जाता है और तब बहू—जो चिरकाल साथ, रहने को आती है—क गुण दोषो पर दृष्टि जाती है। सामान्य लोग वस्तुस्थिति विचार नहीं करत पर बाद को पछताते हैं। (तात्पय है कि व्यक्ति क गुण ही आकषण क उचित कारण हो सकते हैं उसके साथ प्राप्त होने वाला धन नही।)

[यथाथ पर दृष्टि जाने के समय पश्चाताप]

आदमी के पाँ पेट मे हाते हैं।

सामाजिक स्थायित्व लोक विश्वास पर निभर होता है। (जितना गहरा

कोई पेट म उतर जाता—विश्वास योग्य बन जाता है—उतना ही लोकमान प्राप्त करता है।) जितना ही गम्भीर व्यक्ति होगा, उतना ही सम्मान प्राप्त करेगा। [मनुष्य के आचरण एव स्वभाव पर टिप्पणी]

आध पा का भात लाई, भूडों प सू गाती आई।

स्वल्प कृतित्व का महान् विज्ञापन। भूडा=रेत का टीला, (बस्ती से बाहर, दूर से)

वि०—भाइ एव भावज द्वारा नन्द (पति की बहिन) के लडके लडकी के विवाह म उपहार देने की हिन्दू प्रथा है। मामा के द्वारा भानजे भानजी के पोषण की प्रथा आदिम जातियो तक मे है (नृवश शास्त्र—द०—'द फोक कलच आव मूकेटन, ले० आर० रेडफीरड, १६५०, तथा 'मध्य प्रदेश के आदिवासियो पर शोध—डा डी० एन० मजूमदार तथा प्रा० श्यामाचरण दुबे, लखनऊ वि० वि०)

आध पा की लोमडी ढाई पा की पूछ।

नगण्य छोटे व्यक्ति का भारी सभार। किसी के द्वारा अनावश्यक (हानिकर) उपादान का भारी सग्रह।

वि०—पशु की पूछ इसका अनावश्यक तथा कभी कभी भारी सकट म फसा देने वाला भार है। लोमडी आकार की छोटी होती है, किन्तु उसकी पूछ भारी होती है। [हीन व्यक्ति के निज को सम्पन्न प्रदर्शित करने पर]

आध पा चून, पुल प रसोई।

थोडी वस्तु का अधिक प्रदशन, अशोभन विज्ञापन।

[आत्म प्रदशन की प्रवृत्ति पर व्यग्य]

आपा वस मे, जापा वस मे नहीं।

व्यक्ति अपन पर नियन्त्रण करले सतान पर करना कठिन होता है। (व्यक्ति स्वभाव की भिन्नता तथा स्वतन्त्र वृत्ति की ओर सकेत।)

जापा=प्रजनन।

सयम और सतित दोना अपन अधिकार की बात नही विवश अन्य की इच्छा पूर्ति का परिणाम भी तो सन्तानोत्पत्ति होता है।

वि०—भारतवप मे सन्तान भगवान की देन मानी जाती है, वह जिसको जितनी दे न दे। आजकल गभ निरोध के अनेक उपाय किए जाते हैं किन्तु फिर भी अभी उसम पूण सफलता प्राप्त नही हो सकी। प्रकृति के इस क्रम को उलटने का तात्पय क्या कारण और काय की परम्परा का विच्छेद न होगा?

[उद्दड सतति के आचरण पर पश्चात्ताप]

आलसी कुनबा, खाट तळे मिज्ज ।

आलस्य की चरमसीमा जिसके कारण उचित प्रबंध के अभाव में हानि की भी चिंता नहीं की जाती ।
प्र०—बाना की की बुनी खाट उसके नीचे बचाव के लिए जानेवालों की रक्षा वर्षा से नहीं कर सकती । लोकोक्ति में सुरक्षा के लिए किये जाने वाले स्वल्प प्रयत्न की ओर संकेत है । [परिश्रम के अभाव में प्राप्त हानि पर]
वि०—इस लोकोक्ति का विस्तार बहुत है और यह मेरठ—बुलंदशहर जिला के अधिकांश व्यक्तियों द्वारा बोली जाती है ।

इतणे की ना हुई जितणे का लेहगा फाट ग्या ।

इतनी प्राप्ति नहीं हुई जितना घर से दे दिया, लाभ के अनुपात में अधिक हानि ।
प्र०—हरसहा कुछ बणज कराणे दल्ली लग्या हा बड़ा घर का होर दे आए कमाई धमाई तो दूर रही ।
वि०—लोकोक्ति में दूसरे की वासनासक्ति का दुष्परिणाम भोगने की ओर संकेत किया गया है ।
[अनियमितता पूर्वक लाभ प्राप्ति के बदले हानि होने के अवसर पर]

उ—ऊ

उघड़ी बहू बिटौड़ा सी, (ढकी बहू गिन्दौड़ा सी) ।

निर्लज्ज (मुंह को अवगुंठन से बाहर रखने वाली) स्त्री अपना रूप नष्ट कर लेती है । तात्पर्य है लज्जा स्त्रियों का भूषण है । इसके समर्थन में विपरीत लोकोक्ति अवगुंठनमयी लज्जाशीला को खाँड सी उजली रूपवती बतलाती है ।
बिटौड़ा=गोबर के उपला को रखने का स्थान जिसे उपला के ऊपर गोबर थाप कर ही बनाया जाता है । (यह देखने में असुंदर खुरदरा वाला होता है ।)
गिंदौड़ा=खाँड की चाशनी से तैयार किया हुआ खाँड का श्वेत गोल टुकड़ा ।
वि०—लोकोक्ति के उत्तरार्ध में लावण्य रहनेवाली स्त्री की रूपवती एवं मधुर तथा सुंदर आकृति वाली कहा गया है । भारतवर्ष में स्त्रियों का गोल चेहरा सुंदर माना जाता है ।

उड़ती चिड़िया के पर पिछाणना ।

दूर ही से व्यक्ति के गुण कर्म का आभास कर लेना । [पुरुष-परीक्षा]

वि०—सामुद्रिक विज्ञान द्वारा लोग चेहरा देखकर चरित्र बतला देते हैं।

उड़नहार बहू बलीण्डे स्याप दिखाव।

भागनवाली औरत धोखा देकर चली जाती है। जिसे कहीं ठहरना नहीं होता, वह सौ बहाने (अनेक भय) बतला कर, अन्य को भ्रम में डाल प्रस्थान कर जाता है। बुलन्द शहर—मेरठ।

बलीण्डा—(देशज) छप्पर के नीचे बाँस पर फूस लपेट कर लगाया जानेवाली शहतीर की भाँति की वस्तु। कोई-कोई इसके स्थान पर बल्ली अथवा दूसरी कोई लम्बी लकड़ी भी लगाते हैं।

ऊत नपूते मर गए किस्को देंगे पूत।

जो स्वयं किसी योग्य (समर्थ) नहीं हो सका, वह दूसरों का क्या भला (संतति) देगा। जिनको स्वयं अपने जीवन में कोई उपलब्धि नहीं हुई वह दूसरों को क्या दे दिला सकता है।

ऊत=निसंतान मर जाने वाला (प्रेत-योनि)।

नपूते=संतान विहीन निवंश।

वि०—लोकोक्ति का अभिप्राय है कि जब ऊत स्वयं अपनी वंश बेलि न चला पाए तो मरकर (प्रेतयोनि) अन्य को संतति कैसे दे सकेंगे। इसमें यथार्थ भावना पर बल दिया गया है।

[असमर्थ व्यक्ति से सहायता की अपेक्षा किए जाने पर]

ऊधो का लेणा, न माधो का देणा।

किसी से कोई व्यवहार न रखना। निस्संगता। विनिमय का नितांत निषेध, संबंध, समाप्ति, अलग रहना न अपना देना न और का लेना।

वि०—यह लोकोक्ति उद्धव-गोपी संवाद (श्री मद् भा० १० स्क०) के आधार पर बनी जान पड़ती है। उद्धव अपने सखा कृष्ण के कहने पर गोपियों को निर्गुण ज्ञान देने और उनकी सगुण भावना लेने (कृष्ण प्रेम से उनको वंचित करने) के लिए मथुरा से गोकुल गए थे। परन्तु कृष्ण प्रेमिका गोपिकाओं ने यह विनिमय करना सर्वथा अस्वीकार किया, और उद्धव को भली-बुरी सुनाकर लौटा दिया। (भक्त कवि सूर ने 'भ्रमर गीत' और श्री जगन्नाथ दास रत्नाकर ने 'उद्धव शतक' काव्य में इस आख्यान का मार्मिक वर्णन किया है।)

[संबंधों से विरक्ति प्रदर्शन के समय, अथवा विनिमय की अनिच्छा दिखाते हुए।]

ए—ऐ

एक ओर लगी रोट्टी बी जळ जा।
रोटी सेंकते समय उसे फेरा न जाय तो वह भी जल जाती है। अर्थात् एक स्थान और दशा मे व्यक्ति सुखी अनुभव नहीं करता।
वि०—लडकियां का माइके ससुराल म आना जाना बना रहता है जिससे उनके जीवन म सरसता एव सुरुचि बनी रहती है। ऐसा न हो तो वे ऊब जाती है ऐसी स्थिति म इस लोकोक्ति का प्रयोग चलता है।

एक गा माग तो चदिया रोट्टी सौ गां माग तो चदिया रोट्टी।
एक काम करो या हजार जो भाग्य का है वही मिलेगा अधिक परिश्रम से सपत्ति एकत्र नही होती। मनुष्य का आवश्यकताए बडी न्यून हैं—भरपेट रोटी मिल जाय यही तो उसको चाहिए। अधिक धन कमाने से वह उस सभी का उपभोग तो न कर लेगा।
वि०—इस सबध म किसी का कथन है—
मुझे क्या दरिया अगर लबरेज मयखान म है
मैं तो इतनी जानता हूँ जितनी पैमाने म है—
[असतोषी परिश्रमशील को उपदेश]

एक तो कडवी और नीम प चढगी।
स्वभाव से कटु और व्यवहार भी वैसा ही करके और अधिक अरुचिकर।
वि०—गिलोय नाम की बल कडवी होती है और प्राय लोग उसे फलन के लिए नीम की कडवाहट पाकर वह और अधिक कडवी हो जाती है।
[वाणी स्वभाव एव कम पर व्यग्य]

एक तो मलूक घणी और दिल्ली ब्याह दी।
किसी कुरूप गुणहीन का सुस्कृत व्यक्तिया म जाने पर अनादर होता है। चतोरे लागा म असुन्दर व्यक्ति को और भी कठिनाई होती है। निष्कर्ष—सबध स्थिति क अनुकूल व्यक्तिया म होना चाहिए। रूप गुण वभव की समानता होन पर ही सबध निर्वाह ठीक होता है।
पहिले से सकट म पड व्यक्तियां को और सकट म डालना—(कुरूपता विशेषकर स्त्रिया क लिए दैवी सकट है।) [व्यग्य।]

एक दिरा हर हमने वेस मूं धोव मा हाय।
अब तो काह हुए प्रमचारी सौ-सौ बिरिया हाय॥
किसी एस व्यक्ति पर उक्ति जिसका जीवन पहल बडा अव्यवस्थित और

खराब रह चुका हो तथा जो अब बड़ी पवित्रता एव व्यवस्था का ढोल पीटता हो।
वि०—गोपिया से दूर मथुरा जाकर कृष्ण उनको पावनता एव आत्मा की निस्सगता का उपदेश भेजन लग। जबकि इन्ही गोपिया ने उनको आपाद चूड स्नेह मग्न देखा था। अत उन पर वह ऐसा व्यग्य करती है।
[धर्माडम्बर करने वाले व्यक्ति के प्रति।]

एक पथ दो काज सवारे, हगन गई और डीगर मारे।
काय कुशलता का विज्ञापन। एक ढेले म दो पक्षी। थोडे समय म कई काम निमटा लेना। [अति चातुरी दिखाने पर व्यग्य।]
वि०—डीगर शब्द जू के लिए ब्रज प्रदेश म प्रयुक्त होता है। यह लोकोक्ति भी वही की जान पडती है जो खुरजा एव उसके निकट ग्रामा के प्रभाव से बुलदशहर म भी कही जाती है। अन्यथा बृज की सीमारेखा बुलदशहर जिले मे खुरजा डिबाई होकर निकल जाती है।

ऐसे सिकारपुर बस।
मूर्खों का निवास यहा नही, (वे तो शिकारपुर में रहते हैं।)
वि०—शिकारपुर (जि० बुलदशहर का) एक कस्बा जहा के लोग मूख कहे जाते हैं। लोकोक्ति का आधार यही ख्याति है। पूरब म ग्राड टक रोड पर स्थित एक और स्थान भोगाव भी है जहा के लोग मूख कह जाते हैं।
[अपमान हेतुक।]

ऐसे हात, तो घर के ना चुगाते।
अनुपयोगी होते तो सम्बन्धी भी पोषण की चिंता न करत।
उपयोगी सिद्ध होते तो क्या घर म सम्मान न होता। (दुधारू पशु की सेवा सभी करते हैं।) [उपयोगी अनुपयोगी उभय भाति के लोगो पर व्यग्य परन्तु प्रचलन दूसरे अथ म अधिक।]

ऐसे चल रे कागा, जसे चले तेरे भाई बाब्बा।
कुलशील का त्याग न करो। नया ढग अपनाने म हानि की आशका मिथ्या प्रदशन अशोभनीय। [पपरम्परा पर बल]

ओ

ओखली में सिर दिया तो मूसलों का के डर।
आपत्ति ओटली तो भय कसा? कायसन्नद्धता के पश्चात् विनाश का भय क्या? जानबूझ कर कोइ (भयावह) हानिकर काय आरभ कर ही

न्ह्या, तो उससे भयभीत होकर पग हटाना क्या ?

[निश्चय की दृढता का प्रदर्शन।]

ओच्छी सिमधण काच बरौल्ला।

अनुदार व्यक्ति का अयोग्य उपहार। ओच्छी=अनुदार सकुचित काच बरौल्ला=कच्चे बडे। सिमधण=पुत्रवधू की मा। बडे=उद की पिष्ठी से गोल बनाकर तले हुए नमकीन राई के पानी अथवा दही म डाल कर खाने के बडे। कच्चे रह जाने पर ये अस्वादु एव पेट के लिए हानिकर होते है।)

वि०—बहू के परिवार से पति गृह को अनेक उत्सवो के अवसरो पर खाद्य पदार्थ भेजे जाने की हिन्दुओ म प्रथा है। अपेक्षा की जाती है कि वह सामग्री सुस्वादु पुष्टिकर होगी परन्तु पुत्रवधू की मा यदि सकुचित मनोवृत्ति की स्त्री हो तो अधिक व्यय के भय से कच्चा पक्का सामान भी भेज सकती है। लोकोक्ति, ऐसी ही किसी घटना पर व्यग्य है। अर्थात सकुचित व्यक्ति यह नही देखते कि उपहार किसके लिए है अपितु अपनी मनोवृत्ति का प्रदर्शन अनुपयोगी वस्तु उपहार मे देकर कर देते हैं।

[अवाछनीय उपहार प्राप्ति पर।]

ओच्छे कू मिल्या कटोडा पाणी पीत्ते पीत्ते मर ग्या।

हीन व्यक्ति सपत्ति प्राप्त होने पर उसका प्रदर्शन करता नही थकता।

[आत्म प्रदर्शन की प्रवृत्ति।]

प्र०—इा दिग ने एक साइकिळ उन लिया लली, दिन रात उसे सबकू दिखाणे कू चढया फिर चाहे हाथ पा टूट जा। जिबी तो कहैं आच्छे कू मिल्या

औरता (लुगाइयाँ) की चुटिया पिच्छे अकळ।

महिलाए कार्य पूर्ति के पूर्व उसका परिणाम सोच पाने म असमर्थ होती हैं। काम बिगडने के बाद स्त्रियो को बुद्धि आती है। स्त्रिया विलम्ब से बात समझ पाती हैं।

वि०—मस्तिष्क का स्थान खोपडी का अग्रभाग है। अत अनुमान किया जाता है कि कार्य करने के पूर्व ही कोई मनुष्य उसके औचित्य पर विचार कर सकता है। जो नही कर पाता वह मद-बुद्धि है और इसीलिए कल्पना कर ली गई कि उसका मस्तिष्क यथास्थान न होकर चुटिया (औरता की पीठ पर लटकने वाला केश गुच्छ) के पाछे होना है, जिस कारण उसम देर से चेतना उत्पन्न होती है। लोकोक्ति म जिस अग्र और पश्च स्थिति के आधार

पर ही स्त्रियो को मदबुद्धि ठहराया गया है वास्तव म वसी उनकी शरीर-रचना म होती नही है ।

[स्त्री-स्वभाव की प्रतिकूल आलोचना ।]

ओस तें क्या प्यास बुझै ।

अपयाप्त साधना से तप्ति असभव, मनुष्य की पिपासा ओस कणा से (किंचित् तप्ति साधन) क्या शात होगी ? कृषि के लिए ओस जल नितात अपर्याप्त है । स्वल्प दान स तुष्टि सभव नही । वासनासिक्त व्यक्ति आनद भोग के लिए भटकता कभी क्षणिक आनन्द भी ले सके, तो इसस क्या आत्म तुष्टि सभव है । (यथा पर नारी के प्रेम से सतुष्टि कैसी ?)

'ओस सा प्यास बुझ नहि मोहन,
पानी भनौ घर ही के घडा कौ ।'

वि०—पिपासा शात उदार दानी द्वारा ही सम्भव—

देत जा भू भाजन भरत लेत जो घूटक पानि ।' —तुलसी ।

[क्षणिक आनद । स्वल्प प्राप्ति से सुख-लाभ नही ।]

क

कढी होट्टों, चढी कोठ्ठों ।

मुह से निकली हुई पराई बात । मुह से निकली बात शीघ्र सवत्र फैल जाती है । कही सुनी बात का लोग खूब विज्ञापन करते हैं ।

कढी=निकली, कही गई ।

काठा=छता पर से । (दूसरा को सुना सुना कर)

वि०—इसी कारण नीति यह है कि—

'मनसा चिन्तित कम वचमा न प्रकाशयत ।— चाणक्य' [नीति उपदेश]

कवाडी को छाण प फूस का टोट्टा ।

सम्पन्नता म विपन्नता का प्रदशन । व्यापारी भरे भण्डार हाते हुए भी वस्तुआ को अपन उपयाग म नही लाते । लापरवाही का व्यवहार ।

कवाडी=बास बान फूस एव इमारती लकडी का व्यापारी ।

[मनोवज्ञानिक]

करम दलिद्री नाम धन सुख ।

भारम वचना क कारण दुर्भाग्य हान पर भी महानता का प्रदशन यथायत दुखी कहने भर को सुखी ।

वि०— आख के अन्धे नाम नयनसुख । लोकोक्ति के साथ ही यह भी प्रयोग

लक्षण एव उदाहरण की शैली पर चलता है।
दिलद्री=दरिद्री। [स्थिति पर व्यग्य]

करमहीन खेती कर, बळद मर सूखा पड़।
दुर्भाग्य से लोगो के काय म दवी विपत्तिया आती हैं।
वि०—बल और सामयिक वर्षा खेती के दो आवश्यक उपादान हैं, इनका काय काल म नष्ट होना, दैवी विपत्ति है। [दुर्भाग्य पर टिप्पणी]

करया तो बुरा करया, करक छोडया और बुरा करया।
करना कराव=पति की मत्यु के उपरान्त अन्य से सम्बन्ध स्थापित करना।
जाट एव अन्य कुछ जातियो म ऐसी प्रथा है।
वार वार प्रीति जोडना-तोडना अच्छा नहीं।
वि०—लोग कहते हैं चाह मुश्किल है
मव गलत है निवाह मुश्किल है।
अस्थिर मति वाला का लोकापवाद होता है। [चचलमति की आलोचना]

कल की जोगण बटोडाँ म धुना।
नए (अनुभवहीन, असिद्ध) व्यक्ति प्रभाव उत्पन्न करने क लिए भारी आडम्बर रचते हैं।
वि०—योगी पचानल तप करत और धूनी लगात हैं। परन्तु जितना ही बडा धूना होगा उतना ही बडा सिद्ध समझा जायगा, ऐसा मानकर नए जोगी बिटोडे म आग लगा बठत है।
[आत्म प्रदशन की प्रवृत्ति एव लाकपण पर व्यग्य]

कल्ल फिर थी गोस्से चुगती, आज हो बट्ठी घरबारण।
निधनता एव सम्पन्नता की स्थिति की तुलना जन्म के निधन व्यक्ति का अनायास सौभाग्य प्राप्त होने पर परिवर्तित व्यवहार।
वि०—अनायास सम्पत्ति मिलन पर लोग अपने पुराने दिनों को भूलकर बडा गव प्रदशन करने लगते हैं। लाकोक्ति म इसी मनोवृत्ति की आलोचना की गई है। [व्यग्य]

कहाँ राजा भोज कहाँ गगू तेल्ली।
वभवशाली एव निधना की क्या बराबरी। छोटे बडा का मल सम्भव नहीं दोना म तुलना असभव। [असमान परिस्थिति के व्यक्तियों पर टिप्पणी]
वि०—गगू तल्ली (गागय तलङ्ग)।

कहारों की मूत्रा वॉव।
कहारों (धींवरों) की मूत्र भी ग्राह्य, पवित्र।

वि०—सूग्रा (तोता) की कुतरी हुई वस्तु (फलादि) लोग खाने मे सकोच नहीं करते, इसी भाति कहारा की झूठन भी अग्राह्य न होनी चाहिए।
[जाति-गव]

कहार शब्द उत्तर प्रदेश के सभी नगरो म प्रचलित है। इसके लिए बज प्रदेश के ग्रामो म धीवर तथा कुरु जनपद मे झीवर शब्द कहा जाता है।

कहीं की ईट कहीं का रोडा, भानमती ने कुनबा जोडा।
अनमेल वस्तुओ का भडार, जिनको व्यथ होने पर भी उपयोगी मानकर इकट्ठा किया गया हो। अमिल स्वभाव की वस्तुओ (व्यक्तियो) का समूह, आडम्बररत व्यक्ति का प्रदशन हेतु विशाल-सग्रह।
भानमती=एक लोक प्रसिद्ध बाजीगरनी।
(बाजीगर लोग अपने झोले म अनेक भाति की वस्तुएँ अपना कौशल दिखाने के लिए रखते हैं)।
[अनमेल व्यक्ति अथवा वस्तुओ का सग्रह करने वाले पर व्यग्य]

कहे तें कुम्हार गधे प ना चढ।
कहने सुनने से हठी लोग कोई काम (जिसका उनको अभ्यास भी हो) नही करते।
वि०—कुम्हार लोग प्राय बोझा ढोने अथवा सवारी के लिए गदहे पालते हैं।
[जिद्दी लोगो के आचरण पर व्यग्य]

कहै खेत की सुणै खलिहान की।
कहा कुछ जाय, समझा कुछ जाय।
[मन्द बुद्धि पर व्यग्य]

काठ की हँडिया कब लों चाळेगी।
कच्चे आधार शीघ्र नष्ट हो जाते हैं। सकेत है धोखा बहुत बार नही चलता उसका भेद स्वयमेव खुल जाता है। वचना का व्यापार स्थायी नही हो सकता।
[प्रवचना व्यापार पर व्यग्य]

काणी काणी कह सकूँ ना काणी बिना रह सकूँ।
निर्वाह की अनिवार्यता प्रेम विवशता (प्रेम का स्वभाव है कि वह दोष दशन नही करता। इसी से निर्वाह सभव होता है।)
बुरा जानते हुए भी सम्पक बनाए रखने की विवशता।
[अविच्छेद्य सबध पर टिप्पणी]

काणी के ब्या कूँ सौ जोक्खो।
प्रकृत हीनता के कारण सफलता म बाधा।
जोक्खो=जोखिम आपत्ति।

काणा=एकाक्षी।   [किसी न हारने वाले की असफलता पर]

वि०—कुम्भ कन्या के विवाह में अनेक कठिनाइयाँ आती हैं। इसी प्रकार प्रकृत दोष से युक्त व्यक्ति भी अपने कार्यों में सफल नहीं होते। उनको अनेक बाधाओं का सामना करना होता है।

कातक कुत्ता, माह बिलाई, चैत चिड़ी, बैसाख लुगाई।

विभिन्न प्राणियों में गर्भाधान काल का उल्लेख कर इस लोकोक्ति में कहा गया है कि स्त्री के गर्भाधान का कोई समय निश्चित नहीं होता। वह कभी भी गर्भवती हो सकती है।

बैसाख अर्थात् सास्त्रहीन। अनिश्चित का अर्थ न ग्रहण कर बसाख (वैशाख) मास का अर्थ लिया जाए तो समझना चाहिए कि स्त्री के गर्भाधान का सर्वोत्तम समय बसन्त ऋतु ही है। बसन्त माघ चैत्र आदि वैशाख तक माना जाता है और इसी को मधुमास कहा गया है।

बसन्त में हुए गर्भ से उत्पन्न बालक बड़े मेधावी और प्रसन्नचित्त होते हैं।

[मनुष्य जाति की काम प्रवृत्ति पर व्यंग्य]

काली हो या सेत, दोनों मारो एकहि खेत।

हानिकर जीव कोई क्यों न हो उसका वध करना योग्य है।

वि०—यह लोकोक्ति बुलन्दशहर जिले की है। राजा लक्ष्मणसिंह ने अपने मिमोयर्स आव बुलन्दशहर पुस्तक में इस सम्बन्ध में एक किंवदंती का उल्लेख किया है। किसी स्त्री की दो सौतिनें थीं जिनका निधन होने पर उनको काली और श्वेत चाल की योनि मिली और वे दोनों उसको कष्ट पहुँचाने लगीं। जब यह पता लगा कि वे उसकी सपत्नियाँ हैं तो यह निश्चय किया गया कि उनका वध किया जाय।

इस्लाम का आदेश है कि 'कत्लुल मूजी कब्लुल ईजा'—कष्टकारी का वध कष्ट पाने के पूर्व ही कर देना चाहिए तथा जिससे कष्ट प्राप्त हुआ हो उसके साथ तो यह व्यवहार और भी उचित है।

काले काने राम के, भूरे भूरे हराम के।

श्वेत वर्णों का तिरस्कार। सामाजिक व्यंग्य।

वि०—काला वस्तुतः कोई रंग नहीं होता—रंग का अभाव ही श्यामता है, इसीलिये भगवान को रंग हीन बतलाया एवं श्याम कहा गया है। जब कि श्वेत रंग सप्त वर्णों का संकर है। अतः लोकोक्ति में संकेत है कि श्वेत वर्ण-संकर होते हैं।

लोक में श्वेत वर्ण को सुन्दर मानकर उसकी प्रशंसा की जाती है इस मनोवृत्ति पर प्रहार करना ही लोकोक्ति का उद्देश्य है।

[श्वेत वर्ण की अवज्ञा]

कुए के कुए हडा लावे फेर बी तिसाया ।

शांति सुख के निमित्त कितना ही सग्रह क्या न करे फिर भी अतृप्त । इन्द्रियार्थ की सिद्धि से सुख नहीं होता । मानवी लोलुपता और असतोष वृत्ति ।

वि०—मानव का भाग्य चिर असतुष्ट रहना है । वस्तुसग्रह (धनोपाजन) कितना ही क्या न किया जाय, उससे सुख नहीं मिलता । गा० तुलसीदास ने कहा ही है डासत ही गई बीत निसा' सुख की व्यवस्था करते ही जीवात हो जाता है, किन्तु सुख लाभ नहीं होता ।

'न वित्त तपर्णीयो मनुष्य ' —ऋग्वेद

तिसाया=तृष्णाकुल । [मनुष्य की लोलुप, असतोष-वृत्ति पर व्यग्य]

कुछ तो काणी कुछ कुणाक ढ पडया ।

पूर्व ही से निर्बल अगहीन होते रोग ग्रस्त होना । सकट पर सकट उदय होना । स्वय की कठिनाइया के साथ अन्य द्वारा प्रदत्त कठिनाइया का योग होना । [परिस्थिति पर टिप्पणी]

कुछ बावळी कुछ भूत्तों खदेडी ।

प्रथमत निर्बल और उस पर दूसरा का सताया ।

वि०—प्रेत-व्याधा के प्रभावस्वरूप मनुष्य पागल जैसा व्यवहार करता है और यदि वह पहिले से पागल हो तो वह प्रभाव द्विगुणित ही हो जायगा । [सरल व्यक्ति को दूसरा के परेशान करने पर]

कुत्ते का गू लीपणा न पायणा ।

सर्वथा अनुपयोगी, घृणास्पद ।

वि०—गऊ की विष्टा से हिन्दू लोग चौका लगाते, (लिपाई करते) हैं । वह उसको पवित्र एव कृमिनाशक मानते हैं परन्तु कुत्ता सहज अपावन है तथा उसका विष्ठा और अधिक । अत उसका कोई उपयोग नहीं ।

[वस्तु एव व्यक्ति की व्यर्थता अपावनता की आलोचना]

कुत्तो मे सलूक हो तो गगा न्हा लें ।

कुत्ते (लक्षणा—स्वार्थी झगडने वाले) यदि एक मत हो जाएँ तो उनका उद्धार हो जाय ।

वि०—पुरानी लोकोक्ति है—

बाह्मन कुत्ता, हाथी
य नहिं जात क साथी ।

सघ शक्ति का महत्त्व वर्णन ।

सामरस्य स मुक्ति की परपरा तथा उसके अभाव म दुर्ग का सकेत ।

गगा न्हाना=पवित्र मुक्त होना । [लोलुप व्यक्तियो के आचरण पर व्यग्य]

कस्ते (अकस) पूत का सपूत्ता, काणे जसी मांत।

एक पुत्र म पिता का निरल अवलम्ब, एकाकी पुत्र का पिता पूणत उसी पर निभर।

एक पुत्र होने पर उसी के सद् असद् व्यवहार पर आश्रित विवश।

[स्थिति विशेष पर टिप्पणी]

के न्हुवाय दाई, क न्हुयाव्यें धार माई।

मलिन (गदे) व्यक्ति जो शरीर की स्वच्छता नहीं रखत जल से भयातुर।

वि०—जन्म एव मरण दोना समय स्नान कराया जाता है। लोकोक्ति म इन दो के अतिरिक्त और समय जल शरीर से न लगान वाला के स्वभाव का वणन है। [मलिनता पर व्यग्य]

कौमों के कोसते किया ढोर मर।

दुर्भावना से क्या किसी को हानि होती है ? किसी के अभिशाप से क्या कोई नष्ट हाता है ?

स्वार्थी व्यक्तिया के चाहन पर क्या दूसरा की हानि उनका लाभ बन सकती है ? नही।

दुवृ त्त लोगो की कुभावना से क्या कोई नष्ट हो जाता है।

[दुवृ त्त लोगा की कुभावना की निरथकता]

कोठ्ठी कुठळे ते हात्थ न लाइए, घर-बार तेरा है।

सपत्ति के उपभोग से वचित कर उसके अधिकार का विश्वास दिलाना। छलपूण आश्वासन।

कुठला=अन्न-सग्रह के लिए बनाया गया मिट्टी गारे का छोटे कमरे जमा अथवा गोलाकार कुएँ की भाँति का स्थान।

घर बार तेरा=सपूण सपत्ति का सत्व तुम्हारा।

[अन्य के सपत्ति पर अधिकार की घोषणा के साथ ही उसके उपभोग से वचित करने पर।]

कोस चली, बाब्बा पिसाई।

अपरिश्रमी एव कष्ट सहन न करने का स्वभाव। शीघ्र क्लाति का अनुभव। पिसाई=पिपासु।

थोडा चलने के कारण हलक सूखना बतलाना। अथवा, परिश्रम करत थोडी थोडी देर म विश्राम के लिए ठहरना।

[कामचोर व्यक्तियो का आचार वणन]

ख

खडखडो का साड, साहे न साहण दे ।

काय करने मे स्वय असमथ होते हुए भी किसी दूसरे को उसका अवसर न दना । एकाधिकार भावना ।

वि० —खडखडी मरठ का एक ग्राम । यहा पहले कभी एक बूटा साड था जो स्वय गाया का सेचन करने मे असमथ था । वह दूसरे साडो को भी ऐसा न करने देता और उनसे लडता था । इसी घटना पर यह लोकोक्ति बनी ।

[बूढे असमर्थो की एकाधिकार भावना का निदशन]

खडा डराव्वा खेत्त का, खाय न खावण दे ।

भयावह जड व्यक्ति न स्वय भोग करत न दूसरा को करने दते हैं।

डराव्वा=काग भगोडा । बिजूका (बृज) ।

यह दूर से खडा हुआ आदमी जैसा जान पडता है । इसके भय से पशु खेत मे घुस कर *हानि नही कर पाते ।*

[ऐसे व्यक्ति की आलोचना जो सपत्ति का न तो स्वय उपभोग करता और न करन देता है]

खत्री दाता लाख मे, कायथ सौ मे सूम ।
बनिया बूम हजार मे । बामन बूमा बूम ।

(जातीय विशेपताओं का विवरण, खत्री जाति उदार कम, कायस्थ कोई ही कजूस, वनिये मूख कम और ब्राह्मण सभी सरल होते हैं ।)

सूम=कजूस ।

बूम=उल्लू, मूख, बुद्धिहीन । [जाति लक्षण]

खाओ तो बूर के लडडू, न खाओ तो बूर के लडडू ।

करो तो बुराई न करो तो बुराई । *अकमण्यता और कायशीलता दोना ही* मे हानि (बुराई, अपवाद) ।

बूर के लडडू=अखाद्य पदाथ स्वाद रहित । [चेतावनी]

खानपान कू मोती का कुनबा, इस काम कू हम ।

लाभ के समय प्रियजनो का स्मरण और काम के समय हमारा । द्विविध व्यवहार । निज-पर की भावना ।

मोती=नाम विशेष, स्नहपूण स्मरण । [भेद दृष्टि पर व्यग्य]

खाया खत गिलहरी न, पडया नौल के सिर ।

कोई करे कोई भर । हानि कोई करे, दड कोई भोग ।

सिर पड़ना=दाय लगना ।

[अज्ञान में किसी को व्यर्थ ही दोषी ठहराने पर]

खाय निबोली, बताय टपका ।

डींगें मारना अपने को सम्पन्न सुरुचिपूर्ण बतलाना अयथार्थ का सुन्दर विज्ञापन । [मनोवैज्ञानिक आत्म प्रदर्शन पर व्यंग्य]

खाला खसम करादे, खाला खुद तलाश में है ।

सबल समर्थक अपने लिए न मिलने (ढूंढ पाने) पर दूसरों के लिए खोज कैसी ? स्वयं सफल न हो तो अन्य को सफलता कैसे दिलाए ।

[असामर्थ्य की शोचनीय दशा]

खाली घड़े में चूहा छोड़ना ।

निराधार अशन वसन विहीन ।

वि०—खाली घड़े में चूहा खाने पीने को तो कुछ नहीं पाता अपितु बराबर गोल चक्कर काटता रहता है ।

[खाने पीने की सभी वस्तु समाप्त कर खाली घर में किसी को छोड़ना । दुर्व्यवहार पर व्यंग्य]

खाली बहू का नौंनके में हाथ ।

कोई काम न हो तो लोग उत्पात करते हैं । ठलवार में बिगाड़ होता है । परिश्रमशील होने का व्यर्थ हानिकर प्रदर्शन ।

नौंनका=नमक रखने की हांडी ।

[उपयोगी काम न करे तो शांत बैठना चाहिए]

खाली बैठा बणिया आड़ तोल ।

अभ्यास का अनावश्यक रूप स्वभावगत स्वचालित क्रिया, व्यर्थ कार्य ।

वि०—चीजों को दिन भर तौलते रहने के बढ़े हुए अभ्यास के कारण जब तौलने का काम न भी हो तो बणिए अपने अंडकोष की माप ही करते हैं ।

[स्वभाव बल एवं व्यर्थ काम पर टिप्पणी]

खाली बैठी नायण पटड़ा मूंडइ ।

और कुछ काम न होने पर अपनी ही सफाई ।

मूंडना=निर्लोम करना बाल उतारना नाई जाति का व्यवसाय ।

पटड़ा=लकड़ी का बना आसन यह साफ चिकना हो जाता है ।

[मनोयोगपूर्वक किसी व्यर्थ काम करने पर]

खाव कमाव गोपड़ो मलवा मर जाट ।

सुख-लाभ किसी को हो और हानि कोई और उठाए ।

[दूसरो को हानि पहुँचाकर स्वय लाभान्वित होने की मनोवृत्ति पर व्यग्य]
मलवा=टूटी हुई इमारत का इट रोडा, कूडा ककट।

खिसियाई कुतिया भुस मे ब्याई, टुकडा दिया काटने आई।
खीज का स्वभाव होन पर उपकारी के प्रति कृतघ्नता।
सहानुभूति की उपमा परिस्थितियो मे सुखी व्यक्ति का हितू अनहितू म भेद न कर पाना। [कृतघ्न व्यक्ति के प्रति]
पुण्य परीक्षा म अक्षम क प्रति।

खीर की थाळी मे लात मारणा।
सुख सौभाग्य की उपमा, अनुकूल परिस्थिति, वस्तु की उपेक्षा।
प्र०—अरे जा बी तन्ने खीर की थाळी म आच्छी लात मारदी और नइ लो डे का या अच्छी जगो होग्या त्था, बीसेक हज्जार का माळ मिळजात्ता।
[मूर्खतापूर्ण काय सौभाग्य, उलट देने पर]

खीर खाय बाम्हणी सूली चढ सेठ।
लाभ किसी को हो, और दुख कोई और भरे।
वि०—लोकोक्ति म किसी व्यक्ति के द्विभाति व्यवहार पर व्यग्य है कि कृपा किसी पर और क्रूरता किसी और के साथ। [व्यवहार क अनौचित्य पर]

खू टा ते फडवा लेगी, पर जेठ कू ना देगी।
असम्बधित चाहे कोई सपत्ति सुख भाग (दुरुपयोग) करे पर अपना के लिए नहीं।
वि० —सपत्ति के अनियमित उपभोग की आलोचना जिससे पारिवारिको को वचित किया गया हो।
जेठ—पति का बडा भाई जिसके साथ अनुज वधू का रति प्रसग निषेध है। परतु भ्रष्टा स्त्री जेठ के बटा होन का वहाना कर उसे अलग रख कर वाहर वालों के साथ सम्बन्ध रखे तो और भी अनुचित है।
[अधिकारी को सपत्ति-लाभ न हाने देने की दशा म]

ग

गजी गुरसल, काख मे कघी।
कुरूपा की शृगार रचि।
सुन्दर न होते हुए भी सुदर दीखन के साधन बटोरना। अनभिप्रेत वस्तु-सग्रह।
वि०—गजे के सिर पर बाल ही नहा होते, फिर उसे हर समय अपने पास कघी रखने की कहाँ आवश्यकता है?

गुरसल=एक पक्षी। इसके सिर के बाल छोटे किन्तु सदा खड़े हुए से दिखाई देते हैं जैसे किसी ने तुरन्त कघी की हो।
इस लोकोक्ति का क्षेत्र विस्तार जि० सहारनपुर से बुलन्दशहर तथा और भी आगे तक है।
[अनावश्यक रूप में सुन्दरता प्रदर्शन के साधना पर टिप्पणी।]

गदी सत्ती, ऊत पुजारी।
जसा साध्य, वैसा साधक। सम स्वभाव का मेल।
वि—सती पूजा भारतीय ग्रामो में मातृपूजा का एक अग है।
[अरुचिकर स्थिति पर व्यग्य]

गढ स चली बदरखे आई मेरठ कितणी दूर।
बदरखा मेरठ जि० में प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान गढमुक्तेश्वर के निकट २–३ मील पर एक ग्राम। मेरठ और गढ की दूरी ३० मील से भी अधिक है।
दो पग चलकर ही लम्बी यात्रा का अन्त ढूढना।
कार्य की कठिनता एव व्यक्ति की कमनीयता का प्रदर्शन। मार्ग-क्लाति की अतिशयता। कठिनाइयो के आरभ में ही घबरा जाना।
वि०—घटना इस प्रकार बतलाई जाती है कि कोई पिता पुत्री गढ से मेरठ की पदयात्रा पर चले और दो तीन मील चलकर ही कन्या पिता से पूछने लगी अभी और कितना चलना शेष है। इसी पर पिता ने उत्तर दिया वाह गढसे चली अर्थात् अभी से यात्रा का अन्त खोजने लगी।
[कठिनताओ से ऊबने वालो के प्रति]

गधा तैं पार न बसावे गधइया के काण ऐंटठ।
सबल प्रतिद्वन्द्वी का बदला निर्बल से। बलवान् के आगे बिल्ली और निर्बल के सामने शेर।
काण ऐंठु=कान ऐंठना (दड देना)
वि०—यथा, कुछ स्त्रिया पति से कुपित होकर बालको को पीट देती हैं। निर्दोष को दड। [क्रिया के अनौचित्य पर]

गधी मर कुम्हार की, धोबण सत्ती हो।
क्रिया की अनुपयुक्त प्रतिक्रिया। कार्य कारण परम्परा में व्याघात।
किसी गुह्य कारण से अनभीष्ट सहानुभूति का प्रदर्शन।
वि०—कुम्हार की गधी यदि धोबन के काम आती हो तो उसको ऐसा करना योग्य है। किन्तु प्राय ऐसा होता नहीं कि अकारण कोई अपनी संपत्ति दूसरे के व्यवहार में दे।
सत्ती होना=आत्म दाह करना। [रहस्य पर टिप्पणी]

गरीब की बछड़ी कू रामना कौय ।

कौय=(कुत्र) कहाँ, अर्थात् इसका भी उसको अधिकार नहीं ।

निघन निवल को मुह स शब्द निकालने की भी आज्ञा नहीं । नितांत विवशता का अनुभव ।

वि०—कहा गया है 'धनवान् बलवान् लोके' तथा इस अर्थव्यवस्था पर आधारित समाज म निधन का तो अपनी दशा पर दुख प्रकट करने की अनुमति भी नहीं— मुर्गे दिल मत रो, यहा आँसू बहाना है मना । लोकोक्ति को विशेष अर्थ भगिमा प्रदान करने वाले शब्द 'बछडी'=गोवत्सा, तथा राभना=रम्भाना हैं । रभाना गाय के बच्चे की स्वाभाविक क्रिया है । किन्तु, गरीब (सरल) गोवत्सा को इसकी भी अनुमति नहीं ।

[विवश निधन के दमन की आलोचना]

गहना कू क्या जीन ।

दो पग की यात्रा के लिए क्या घोडा कसना अशक्त पर विजय प्राप्ति के लिए अश्वारोहियो की क्या अपेक्षा ।

साधारण काय के लिए किसी बडे प्रबध की क्या आवश्यकता ।

वि०—जहाँगीराबाद जि० बुलन्दशहर के निकटवर्ती ग्राम गहना (गँना) से आस-पास के ग्रामवासियो का मुसलमानी राज्य काल से अब तक अफसरा के आते जाते रहन व अदालत करने के कारण बडा सबध रहा है इसीलिए रास्ता पैर लगने के कारण उनको वह दूर नहीं जान पडता जिसके लिए सवारी की आवश्यकता हो ।

[सामान्य काय हेतु बडा प्रबध देखकर]

माँ की बेट्टी तो हूँ, पर बहुओं ते अच्छी पड रहूँ ।

अवसर न होने पर भी भोग म न्यूनता न होना । *अननुकूल परिस्थिति में भी अतिरिक्त लाभ ।*

वि०—माइके मे कन्या के लिए रतिप्रसग का अवसर नहीं होता किन्तु पतिता कन्याए उसकी भी ससुराल म रहने वाली बहुओ से कहीं अधिक योजना रखती हैं ।

[चरित्र पर टिप्पणी, अवाछनीय लाभ की आलोचना]

गाजरों मे गुठली रलाणा ।

बात टालना । मूल बात म क्षेपक का सविस्तार योग करना । यथाथ छिपा कर अन्य कुछ कहने लगना ।

रलाणा=मिलाना—इस भाँति कि कठिनाई से पृथक किया जा सके ।

गाड़ी कू देखत लाडी के पां पूल ।
सुविधा दिखाई देने पर परिश्रम के लिए अनुत्साह होना । अपने ऊपर अधिक काम भार न लेकर सहायक पर टालना ।
[कामचोर स्वभाव पर व्यंग्य]

गादड की मौत आव, तो गां की ओर भग ।
मृत्यु अपनी ओर स्वयं खींच लेती है । मौत आने पर मनुष्य उसी के अनुकूल कार्य करने लगता हैं ।
मौत की जगह पुकारती है । यथा
जसी हो होतव्यता वसी मिले सहाय ।
आप न आवे ताहि पर ताहि तहा ले जाय ।।'
(मौत के वसे ही कारक बन जाते हैं । अनुभूति वर्णन)

गाय की भस तळे ।
निर्धनता में जसे-तैसे काम चलाना । युक्तिपूर्वक कार्य सिद्धि ।
[कार्य व्यवस्था पर टिप्पणी]

गाय न बच्छी, नींद आव अच्छी ।
दायित्व न होने पर सुख ही सुख । किसी के भरण पोषण का भार न हो तो चिन्ता कसी । परिवार विहीन को निश्चिन्तता ।
वि०—पशुपालन परिश्रम की अपेक्षा रखता है । उनकी सौ चिन्ताएं करनी पडती है । यही अन्य किसी भी दायित्व के संबंध में सत्य है ।
[एकाकी स्थिति पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी]

गाल गाढ, सासू राड ।
मुख सामुद्रिक के अनुसार जिस लडके लडकी के कपोल में बातचीत करते गड्ढा पडता है कहते हैं वे श्वसुर विहीन होते है ।
राड=विधवा । [मुख सामुद्रिक फल वर्णन]

गुड खायगी, तो अंधेरे में आयगी ।
लाभ लेगें तो कठिनाई भी उठावेंगे । प्राप्ति होगी तो आंख बचाकर काम करेगी ।
वि०—लोकोक्ति का संकेत वेश्यावृत्ति की ओर है । जहां धन लेकर काम तुष्टि के लिए शरीरार्पण किया जाता है । विवशता में ऐसा आचरण करने वाली स्त्रियां लोकलाजवश छिपकर ऐसा करती हैं । इसी से व्यंजना हुई कि जो लोभ में फँसेगा उसे छिपकर भी अकार्य करना होगा ।
[लालची मनोवृत्ति पर व्यंग्य]

ढ खावें गुडियानी की श्राए ।
सयम का भूठा विज्ञापन ।
गुडियानी=गुड म पगा ग्रन्न, (गुड, एव गुडियानी) म भेद नही, क्योकि तत्त्वत दोना एक हैं। ग्रत दोना मे किसी को भी ग्रग्राह्य कैसे बतलाया जा सकता है । [ग्राडम्बरकारी लोगो पर टिप्पणी]

ड से मीट्ठे के श्रगार हैं ।
गुड से मीठा ग्रौर कुछ नही निज जन से निकट दूसरा कोई नही ।
वि०—ग्रगार खाने की वस्तु नही—ग्रत लोकोक्ति म संकेत किया गया है गुड से ग्रधिक मीठा (प्रिय) ग्रौर कुछ नही शेष से तो हानि ही की समावना हो सकती है । 'ग्रत ग्रगार ह' की ध्वनि यही है कि ग्रौर काई वस्तु नही है । [ग्रपना पर प्रत्यय की ग्रभिव्यक्ति]

गुड होगा तो मक्खी ग्राप ग्रावगी ।
लाभ होगा तो लोग स्वयमेव घेरे रहेंगे, उपलब्धि का ग्रवसर होने पर लालची बिना बुलाए टूटेंगे ।
[लोभ-लाभ की खोज म रहने वाला का स्वभाव]
गुड=लाभकर वस्तु-लक्षणा ।

गूदडिया मरकोले मार, हुरमत मर जिडाई ।
गरीब ग्रपनी गुन्डी म सुखी रहते हैं जब कि ऐश्वर्यशाली शेखी म जाडे मरते हैं ।
ग्राडम्बर विहीनता म सुख है ।
मरकोल=लौट पलट करना (गरमाई का सुख लेना)
हुरमत=एश्वर्य वान् । [धनिका पर व्यग्य]

गूदड मे गिदोडा पाक रह्या स ।
गरीब घर म सुन्दरी का युवा होना ।
गिन्दोडा=खाड का श्वेत गोल टुकडा ।
[निधन की सुन्दर कन्या की ग्रार सकेत]
वि०—सुन्दरता पर किसी का एकाधिकार तो नही किन्तु निधन परिवार म सौंदय लोक चर्चा का कारण बन जाता है । लोकोक्ति म इसी लोकवृत्ति का निदशन हुग्रा है।

गोस्सा न दे, बिटोडा दे ।
तनिक सी वस्तु का लोभ दिखावे ग्रौर बहु परिमाण म दे डाले ।
[विडम्बना म]

गाड़ी बू देखल, लाडी ये पाँ फूल ।
सुविधा दिखाई देने पर परिश्रम के लिए अनुत्साह होना । अपने उपर अधिक काम भार न लेकर, सहायक पर टालना ।
[कामचोर स्वभाव पर व्यंग्य]

गादड़ की मौत आय तो गाँ की ओर भग ।
मृत्यु अपनी ओर स्वयं खींच लेती है । मौत आने पर मनुष्य उसी के अनुकूल काय करने लगते हैं ।
मौत की जगह पुकारती है । यथा
जसी हो होतव्यता वसी मिल सहाय ।
आप न आवै ताहि पर ताहि तहां ले जाय ॥'
(मौत के वश ही यानक बन जाते हैं । अनुभूति वर्णन)

गाय की भस तळे ।
निर्धनता में जसे-तसे काम चलाना । युक्तिपूवक काय सिद्धि ।
[काय व्यवस्था पर टिप्पणी]

गाय न बच्छी, नींद आव अच्छी ।
दायित्व न होने पर सुख ही सुख । किसी के भरण पोषण का भार न हो तो चिन्ता कसी । परिवार विहीन को निश्चिन्तता ।
वि०—पशुपालन परिश्रम की अपेक्षा रखता है । उनकी सौ चिन्ताएं करनी पडती है । यही अन्य किसी भी दायित्व के संबंध में सत्य है ।
[एकाकी स्थिति पर व्यंग्यात्मक टिप्पणी]

गाल गाढ सास राड ।
मुख सामुद्रिक के अनुसार जिस लडके लडकी के कपोल में बातचीत करते गड्ढा पडता है कहते हैं वे श्वसुर विहीन होते है ।
राड=विधवा ।
[मुख सामुद्रिक फल वर्णन]

गुड खायगी, तो अंधेरे में आयगी ।
लाभ लेगें तो कठिनाई भी उठावेंगे । प्राप्ति होगी तो आख बचाकर काम करेगी ।
वि०—लोकोक्ति का संकेत वेश्यावृत्ति की ओर है । जहां धन लेकर काम तुष्टि के लिए शरीरार्पण किया जाता है । विवशता में ऐसा आचरण करने वाली स्त्रियां लोकलाजवश छिपकर ऐसा करती हैं । इसी से व्यंजना हुई कि जो लोभ में फंसेगा उसे छिपकर भी अकाय करना होगा ।
[लालची मनोवृत्ति पर व्यंग्य]

गुड खावें गुडियानी की श्राण ।

सयम का भूठा विनापन ।

गुडियानी=गुड म पगा अन (गुड एव गुडियानी) म भेद नही, क्योकि तत्वत दोनो एक हैं। अत दोना म किसी को भी अग्राह्य कसे बतलाया जा सकता है। [आडम्बरकारी लोगो पर टिप्पणी]

गुड से मीट्ठे के अगार हैं।

गुड से मीठा और कुछ नही, निज जन से निकट दूसरा कोई नहीं।

वि०—अगार खान की वस्तु नही—अत लोकोक्ति म सकेत किया गया है गुड से अधिक मीठा (प्रिय) और कुछ नही शेष से तो हानि ही की सभावना हो सकती है। अत अगार है की ध्वनि यही है कि और कोई वस्तु नहीं है। [अपना पर प्रत्यय की अभिव्यक्ति]

गुड होगा तो मक्खी आप आवगी ।

लाभ होगा तो लोग स्वयमव घेर रहेग, उपलब्धि का अवसर होन पर लालची विना बुलाए टूटेंग ।

[लोभ-लाभ की खोज मे रहन वाला का स्वभाव]

गुड=लाभकर वस्तु-लभ्यता ।

गूदडिया मरकोले मार हुरमत मर जिडाई ।

गरीब अपनी गुदडी म सुखी रहत हैं जब कि ऐश्वर्यशाली शेखी मे जाडे मरत हैं ।

आडम्बर विहीनता म सुख है ।

मरकोल=लौट पलट करना (गरमाई का सुख लेना)

हुरमत=ऐश्वर्य वान् । [धनिका पर व्यग्य]

गूदड मे गिदौडा पाक रह या स ।

गरीब घर म सुदरी का युवा होना ।

गिदौडा=खाड का श्वत गोल टुकडा ।

[निधन की सुदर कन्या की ओर सकेत]

वि०—सुन्दरता पर किसी का एकाधिकार तो नही किन्तु निधन परिवार म सौंदय लोक चर्चा का कारण बन जाता है। लोकोक्ति म इसी लोकवृत्ति का निदशन हुआ है।

गोस्सा न दे, बिटौडा दे ।

तनिक सी वस्तु का लोभ दिखावें और बहु परिमाण म दे डाले ।

[विवाता म]

वि०—इसी के समान अन्य लोकोक्ति है 'गमार गाढ़ा न दे, भेल्ली दे।' तात्पर्य है उदारता से कुछ न देने वाले भी विवश होकर सब कुछ दे देते हैं।

रहिमन चाक कुम्हार को, मांगे दिया न देय।
छेद में डंडा डारिके नाद तनक ले लेउ॥'

बिटोड़ा=विष्ट+उड्ड (स०) ∠ विट्उड्ड ∠ बिटोड़ा।

[अदूरदर्शी लोभी व्यक्ति के व्यवहार पर टिप्पणी]

गौरा बिना पकौड़ा कौन तोड़।

कार्य सामर्थ्य का विज्ञापन, एक को छोड़ शेष अकुशल।

आत्मश्लाघा।

पकौड़ा=बेसन घोलकर उसमें कटी हुई सब्जी को लपेटकर तली हुई खाने की वस्तु पकौड़ी इसी को आकारान्त बनाकर महत्त्व प्रदर्शन के लिए पकौड़ा, इस शब्द का परिवर्तन कर विशेष अर्थ भंगिमा दी गई है।

[आत्म प्रशंसा]

घ

घर आए मेहमान, बहू कंडों को निकली।

असमय का कार्य गृहस्थ की असफल व्यवस्था।

अदूरदर्शिता।

मेहमान—अतिथि।

वि०—अतिथि के स्वागत सत्कार का प्रबंध कुशल गृहस्थ में सदा ही रहना चाहिए तथा जब खाने-पकाने के लिए आवश्यक ईंधन की खोज अतिथि के आगमन पर आतिथ्य के समय हो तो वह असफल गृहस्थ ही कहा जायगा। पहिले कंडों की बिक्री हाट में नहीं होती थी जंगल में जाकर लोग इनको एकत्र कर लाते थे जो निसन्देह समय-साध्य कार्य था इसलिए भी लोकोक्ति भी सफलता पर व्यंग्य करती है।

[अव्यवस्थित गृहस्थ एवं व्यक्ति की कार्यनीति की आलोचना]

घर खीर, तो बाहर खीर।

अपने यहाँ सुख सम्पन्नता और आदर है तो बाहर भी वैसा ही प्राप्त।

घर में सत्कार तो बाहर भी जितनी घर में कद्र उतनी ही बाहर।

[सुसम्पन्न की आवभगत]

घर घर मटियाढे चूल्हे (राजा भोज मरम के भून।)

सभी गृहस्थों की समस्याएं समान (इसमें छोटे-बड़े के अन्तर का भ्रम नहीं करना चाहिए)

[गृहस्थों की दशा पर समतात्मक टिप्पणी]

घर की मुरगी, दाल बराबर ।

अधिकार पडी वस्तु का उचित मूल्याकन नही, निजी वस्तु को अन्य की से न्यून मान, अपनी वस्तु के उपयोग मे लापरवाही । (उपेक्षा भाव)

[मनोविज्ञान]

घर मे नहीं दाने, अम्मा चली भुनाने ।

दीनता-हीनता म वभव का मिथ्या सगव प्रदशन ।

[मूखतापूण काय अथवा मिथ्या प्रदशन पर व्यग्य]

घर ते साग दे अर फूअड कुहाव ।

अपना माल दकर मूख कहलाए ।

वि०—ससारी लोग प्राय दूसरा को लूटते और साथ ही उनको मूख भी बतलाते हैं, तथा इस कृतघ्नता को वह चातुरी कहते हैं ।

[सरल व्यक्ति की वचना होने पर]

घास न दाना, खुररा छ छ बार ।

वाता से पेट भरना, प्रवचना बिना सहाय करे स्नेह का प्रदशन ।

खुररा=घोडो के शरीर पर धूल मिट्टी झाडन के लिए फेरी जाने वाली लोहे की कघी-खुररा करन से पशु स्वच्छ और प्रसन्न ता होता है किन्तु पुष्ट नही ।

[मीठी बातें बनाकर आवश्यकता की उपेक्षा]

घी न खाया, कुप्पा बजाया ।

उपभोग न सही, प्रदशन ही सही । कल्पना से सतोप ।

वि०—कुप्पा बजाने से पुष्टिवधक घी खान की कमी तो पूरी नही होती किंतु आत्मतोष के लिए कभी-कभी लोग उसकी चर्चा ही म सुख मानते हैं । तरद मान अप्राप्य हो तो गिरा पडा ही सही ।

वि०—वासनासिक्त लोगा का ऐसा विचार रहता है । उनका कथन है Old is Gold' [वस्तु प्राप्त होने पर अन्य हीन वस्तु की उपलब्धि पर]

'घी बनावे तोरई, नाम बहू का होय ।

सम्पन्नता म सभी चतुर बन जाते हैं । उपयुक्त सामग्री सुन्दर कायपूर्ति म *सहायक होती है ।* *(व्यक्ति स वस्तु का महत्त्व)*

घी का लड्डू टेढा भला ।

स्वास्थ्यकर हो तो कुरूप वस्तु भी ग्राह्य । गुणकारी की असुन्दर होन पर उपेक्षा अनुचित । [रूप से गुण का महत्व दर्शाने के लिए]

कठिनाइयों में सहसा वृद्धि।
भूत—ऐसी योनि जिसका दूषित प्रभाव उसके पारिवारिक जन को सहन करना पड़ता है। प्राय भूत पर पानी को ही बताते हैं किन्तु कभी-कभी उनके साथ चोरों के लग जाने पर भयंकर पीड़ा का उदय होता है।
दहेज—विवाह में प्राप्त वस्तुएँ जो बिना माँगें ही दी जाती हैं।
[संकट में अवांछनीय योग]

चिकने मुह बिल्ली चाट।
जिनसे लाभ की आशा हो लोग उनकी खुशामद करते हैं सामान्य लोगों को यह आदमियों की चाटुकारी भाती है।
जिनसे कुछ प्राप्ति की आशा रहती है लोग उन्हीं को पूछते हैं।
वि०—बिल्ली एक चालाक जानवर है जिसे रूखा-सूखा नहीं भाता और सदा दूध मलाई की ताक में लगी रहती है।
[लालची, चालाक, चाटुकारों पर व्यंग्य]

चिड़िया की मे चुथाई का हिस्सा।
विभाजन के अयोग्य वस्तु में से भी बँटवारा थोड़े में से थोड़ा।
हिस्सा बाँट के योग्य न होना।
चुथाई—चतुर्थांश चौथाई। [विभाजन के अनौचित्य पर]

चिड़िया की चेटुओं जाय।
छोटे बल हीन व्यक्तियों से कोई बड़ी उपलब्धि सम्भव नहीं (यथा चिडिया छोटे बच्चे को ही जन्म दे सकती है।)
थोड़ी वस्तु थोड़ी थोड़ी करके बट जाने से ही नष्ट हो जाती है। अथवा कोमल वस्तु अधिक आघात नहीं सह सकती।
चेटुआ—चिड़िया का बच्चा।
चेंटुआ—अँगूठे और उँगली के बीच में दबा कर खाल खींचना।
जाय—नष्ट हो। (फारसी 'जाया') जन्म दे।
वि०—इस लोकोक्ति का प्रयोग अधिकतर ब्रज और खड़ी बोली की सीमा के ग्रामों में किया जाता है।
[अन्य लोगों की वासना पूर्ति के कारण किसी वस्तु का विघटन होने पर]

चिड़िया की में हाथी की घिसाई।
व्यर्थ परिश्रम, असफल आनन्द रहित प्रयास।
लाड—पुरुष जननेन्द्रिय।
घिसाई—संघर्ष से क्रम-क्रम नष्ट होना।

वि०—नर मादा जानवरा के प्रसग से सतानोत्पत्ति सम्भव होती है। प्रकृति ने इस काय म रञ्जन और उपयोगिता दोना का समन्वय किया है अत उसको इसी रूप म रख पान के लिये योग्य युग्मो का मिलन होना चाहिय। लोकोक्ति कि एक व्यजना यह भी है कि किसी अति साधारण काय के लिए किसी भीषण बलवान का प्रयास अयोग्य और असफल ही होता है।

[किसी हीन काय म वलिष्ठ के लगने पर]

चुन-पुन सब याही मे।

आश्रम निर्वाह एव आतिथ्य सभी कुछ थोडी सी आय म।

चुन=जीवनावश्यकतायें (भोजनादि चून)।

पुन्न=(पुण्य) परहित साधन परोपकार। भारतीय गृहस्थ के लिए अतिथि सत्कार ही बडा पुण्य माना गया है। [हीन परिस्थिति का ब्यौरा]

पै न धागा, नाम चन्दरभागा।

अतिशय निधनता म भी महत्त्व का मिथ्या प्रदशन। न होन पर भी अपने को भाग्यशाली घोषित करना।

वि०—ललाट पर चन्द्रोदय होना मुख सामुद्रिक के अनुसार सौभाग्य का चिन्ह है।

[निधनता मे सौभाग्य का अयथाथ प्रदशन करन पर व्यग्य]

टि०—वसन विहीन होन पर रूपवती नारी भी लोकापवादन का भाजन बनती है।

विधु वदनी सौ भाति सँभारी
साहै न बिना बसन बर नारी। —तुलसी

चूतिया कू दिखाई, कहै कुहाडी का लगवाई।

धार अनता का प्रदशन किसी आवश्यक वस्तु की अजान के कारण उपेक्षा।

[अननुभवी व्यक्ति के व्यवहार पर टिप्पणी]

कुहाडी—कुल्हाडी (लकडी काटने का यन्त्र)। (कुहाडी से भी दरार बन जाती है)।

चूतिया कू लुगाई, अर हरामी कू लाई हमेस अच्छी मिलै।

प्रकृति म सन्तुलन का अनुभव। ईश कृपा अथवा भाग्य की महिमा।

लाई=धान की कटाई का पारिश्रमिक।

हरामी—आलसी कामचोर। [सामान्य अनुभव का कथन]

चूतिया बुर का नकसाण।

अनाडी व्यक्तियो द्वारा काय सुचारु रूप म सम्पन्न नही होता। मूख व्यक्ति

कठिनाइयों में सहसा वृद्धि ।
भूत—प्रेत योनि जिसका दूषित प्रभाव उसके पारिवारिक जन को सहन करना पड़ता है । प्राय भूत घर वालों को ही सताते हैं, किन्तु कभी कभी उनके साथ औरों के लग जाने पर भयंकर पीड़ा का उदय होता है ।
दहेज—विवाह में प्राप्त वस्तुयें जो बिना मांगें ही दी जाती हैं ।
[संकट में अवाछनीय योग]

चिकने मुंह बिल्ली चाटे ।
जिनसे लाभ की आशा हो लोग उनकी खुशामद करते हैं सामन्त लोगों को बड़े आदमियों की चाटुकारी भाती है ।
जिनसे कुछ प्राप्ति की आशा रहती है लोग उन्हीं को पूछते हैं ।
वि०—बिल्ली एक चालाक जानवर है जिसे रूखा-सूखा नहीं भाता और सदा दूध मलाई की ताक में लगी रहती है ।
[लालची, चालाक, चाटुकारों पर व्यंग्य]

चिड़िया की मे चुथाई का हिस्सा ।
विभाजन के अयोग्य वस्तु में से भी बँटवारा थोड़े में से थोड़ा ।
हिस्सा बाँट के योग्य न होना ।
चुथाई—चतुर्थांश चौथाई ।
[विभाजन के अनौचित्य पर]

चिड़िया की चेटुओ जाय ।
छोटे बल हीन व्यक्तियों से कोई बड़ी उपलब्धि सम्भव नहीं (यथा चिड़िया छोटे बच्चे को ही जन्म दे सकती है ।)
थोड़ी वस्तु थोड़ी थोड़ी करके बट जाने से ही नष्ट हो जाता है । अथवा कोमल वस्तु अधिक आघात नहीं सह सकती ।
चेटुआ—चिड़िया का बच्चा ।
चेंटुआ—अँगूठे और उँगली के बीच में दबा कर खाल खींचना ।
जाय —नष्ट हो । (फारसी जाया') जन्म दे ।
वि०—इस लोकोक्ति का प्रयोग अधिकतर ब्रज और खड़ी बोली की सीमा के ग्रामों में किया जाता है ।
[अन्य लोगों की वासना-पूर्ति के कारण किसी वस्तु का विघटन होने पर]

चिड़िया की में हाथी की घिसाई ।
व्यर्थ परिश्रम असफल आनन्द रहित प्रयास ।
लाड—पुरुष जननेन्द्रिय ।
घिसाई—सघर्ष से क्रम-क्रम नष्ट होना ।

वि०—नर मादा जानवरों के प्रसग से सन्तानोत्पत्ति सम्भव होती है। प्रकृति ने इस कार्य में रञ्जन और उपयोगिता दोनों का समन्वय किया है अत उसको इसी रूप में रख पान के लिये योग्य युग्मों का मिलन होना चाहिये। लोकोक्ति कि एक व्यजना यह भी है कि किसी अति साधारण कार्य के लिए किसी भीषण बलवान का प्रयास अयोग्य और असफल ही होता है।

[किसी हीन कार्य में बलिष्ठ के लगने पर]

चुन-पुन सब याही मे।

आत्म निर्वाह एव आतिथ्य सभी कुछ थोडी सी आय मे।

चुन्न=जीवनावश्यकतायें (भोजनादि चून)।

पुन्न=(पुण्य) परहित साधन परोपकार। भारतीय गृहस्थ के लिए अतिथि सत्कार ही बडा पुण्य माना गया है। [हीन परिस्थिति का ब्योरा]

पै न धागा, नाम चन्दरभागा।

अतिशय निर्धनता में भी महत्त्व का मिथ्या प्रदर्शन। न होने पर भी अपने को भाग्यशाली घोषित करना।

वि०—ललाट पर चन्द्रोदय होना मुख सामुद्रिक के अनुसार सौभाग्य का चिन्ह है।

[निर्धनता में सौभाग्य का अयथार्थ प्रदर्शन करने पर व्यंग्य]

टि०—वसन विहीन होने पर रूपवती नारी भी लोकापवादन का भाजन बनती है।

विधु बदनी सौ भाँति सँभारी
सोहे न बिना वसन वर नारी। —तुलसी

चूतिया कू दिखाई, कहै कुहाडी का लगवाई।

घोर अज्ञता का प्रदर्शन किसी प्राकृतिक वस्तु की अज्ञान के कारण उपेक्षा।

[अननुभवी व्यक्ति के व्यवहार पर टिप्पणी]

कुहाडी—कुल्हाडी (लकडी काटने का यन्त्र)। (कुहाडी से भी दरार बन जाती है)।

चूतिया कू लुगाई, अर हरामी कू लाई हमेस अच्छी मिल।

प्रकृति में सन्तुलन का अनुभव। ईश कृपा अथवा भाग्य की महिमा।

लाई=धान की कटाई का पारिश्रमिक।

हरामी—आलसी कामचोर। [सामान्य अनुभव का कथन]

चूतिया बुर का नक्साण।

अनाडी व्यक्तियों द्वारा कार्य सुचारु रूप में सम्पन्न नहीं होता। मूर्ख व्यक्ति

कोई काय सफनतापूवक कर पाने के बदले उपादाना (सामग्री) को भी नष्ट करते है।प्राय अनाडी अति उत्साही भी होते हैं जिस कारण वह काय को बनाने के बदले बिगाड देते है।
बुर=योनि (स्त्री)।
नकसाण—नुक्सान नष्ट होना।
वि०—नारी प्रसग के सम्बध म दिय गय (Go slow with your maid) इस निर्देश से यह व्यञ्जना ली गयी है कि मूख यन्त्रिया के कोई काय करने पर काय मे असफलता ही नही होती, अपितु हानि की सम्भावना भी होती है।
यथा, योनि—विदरण सतति फल प्राप्ति के हेतु किया जाता है, किन्तु यदि ऐसा न हो तो नारी का सतीत्व भग व्यथ है।

[उतावली एव अज्ञान मे कोई काय न करने का आदेश ऐसी दशा अथवा व्यक्ति के कारण हानि होन पर]

चूल्हे की मिट्टी चूल्हे लग गई।

जहाँ की वस्तु थी वही उपयोग म आ गई। एक समान की सगति।

[जिसकी जहाँ की वस्तु हो वही उपयोग म आन अथवा थोडा भटक कर फिर वही स्थिर हो जाने पर]

चूल्हे गाऊँ चक्की गाऊँ, पचो बठी जूती खाऊ।

काय योग्यता का सवत्र विज्ञापन करके उसकी परीक्षा के समय असफल होना। होशियार बनन पर विशिष्ट समय पर एसा सिद्ध न होने के कारण लोकापवाद प्राप्त।

[कलाकारा की प्रकृति पर व्यग्यात्मक टिप्पणी। समय पर असफल हान पर टिप्पणी]

चूहे क जाए भट्ट खोद।

सस्कार नष्ट नहीं हात। धोखबाज बेईमाना क बइमान ही हात हैं।

[व्याज स्तुति हानिकर चरित्र की निन्दा। वश वशिष्टय का कथन]

टि०—इस लाकाक्ति का अथ बडा व्यापक है क्योकि इसका व्यवहार व्याज स्तुति और व्याज निन्दा दोना म ही किया जाता है।

चोट्टी कुतिया जलेबियों की रखवाळी ।

अविश्वसनीय पर श्रद्धा बइमान को माया सौंपना वासनासित्त के समक्ष आकर्षण छोडना ।

वि०—कुत्ता को मीठा देना हानिकर है, इसीलिए दिया भी नही जाता किन्तु वे इसके लिय सदा ललचाये रहते है और अवसर प्राप्त होने पर उसे खा लेते है । [किसी को बेईमानी का अवसर प्रदान करने पर]

चोर चोर मुसेरे भाइ ।

समान व्यवसाय के लोगो म प्रीति । सम प्रकृति म घनिष्टता रुचि एव व्यव साय की एकता के कारण भिन्न वग स्थान एव परिवार के व्यक्ति होने पर भी एकत्व ।

बुराई आपस म शीघ्र समझौता कर लती है । इसके विपरीत दो विद्वान् परस्पर शत्रु होते हैं । [रुचि ऐक्य का महत्त्व]

मुसेरे—मौसरे ।

चोरी चोरी तें जा, हेरा फेरी तें ना जा ।

स्वभाव बदलना कठिन होता है । लालच परधन मे धनी होने की इच्छा जागृत होने पर सहज नष्ट नही होती । कुप्रवृत्ति मनुष्य पाप का अवसर न पाने पर भी उसकी इच्छा तथा उस इच्छा के अनुरूप कम से वचित नही रहता । [वासना वृत्ति पर टिप्पणी]

चोरों से मोर मरवाना ।

अनुपयुक्त व्यक्ति स काय लना । झिझकत लुक छिपकर रहते व्यक्ति से उजागर होने वाला काम करवाना । परिश्रम स बचने वाला से किसी बडे काम की आशा करना ।

(पतित आत्मा म या वासना का कीट अह नाश म किस भाँति सफल हो सकता है । इन्द्रियार्थ की कामना ही चोरी है और अह के कारण ही इसे करने की विवशता होती है ।) [प्राय दूसरे अर्थ के सन्दभ म प्रयुक्त]

चोंच समाता चूण, सब को यो दे ।

भगवान सबकी आवश्यकता पूर्ति करत हैं । ससार से आशा त्याग ।

जब दाँत न थे तब दूध दियो
अब दाँत भये कहा अन्न न दैहै
जन्त म थल म पछी, पशी
जा दत सब सा तऊ कू दहै
काह को सोच करे मन मूरख
सोच करे कछु हाथ न एहै

जान कू देत, अजान कू देत
जहान कू देत सो तोहू कू दहै।

[प्रभु की दया पर विश्वास]

छ

छटी मे पुजना।

शिशु काल ही से गृहीत। जीवन की अटूट मान्यता, उस वस्तु के प्रति जिसका आग्रह बना रहे।

छटी=षष्ठी देवी (विश्वास किया जाता है कि इस दिन बालक का जो स्व भाव बन जाता है वही जीवन म उसकी अनेक क्रियाओ और मान्यताओ म प्रकट हुआ करता है। आधुनिक मनोविज्ञान का भी ऐसा मत है कि जीवन के प्रथम पाच वष मे बालक के जो सस्कार बन जाते हैं वह उनसे आजीवन मुक्त नही होता। लोकोक्ति म इसी सत्य को और भी दूर तक ले जाया गया है।

[किसी वस्तु या स्थिति के अभाव मे न रहने पर]

छाज बोले तो बोले चळणी कि बोल्ले जिसमे बहत्तर छेद।

कोई समथ चरित्रवान टिप्पणी करे तो उचित है, किन्तु जो स्वय सदोष (अगणित छिद्र युक्त) है उसे इसका क्या अधिकार।

बडो के सामने छोटे दोषयुक्त की प्रगल्भता का निषेध।

छाज और छलनी म दोना ही अन्न का कूडा कक्ट निकालने के लिए व्यवहार मे आते हैं किन्तु छाज (सूप) सार ग्रहण ही करता है और थोथे अथवा सदोष को छिटका देता है। छलनी भी इसी उपयोग म आती है किन्तु वह छिद्र युक्त होने के कारण उसम स कूडा करकट ही निकल पाता है वह पूण रूप से धान्य को शुद्ध नही करता है। ऐसे ही सार ग्राही गुरु जब यदि किसी के परिष्कार की इच्छा स कुछ कहे तो उसका लाभ होता है और जो स्वय सदोष है उसके वचन प्रभावशाली नही होते।

[किसी पतित व्यक्ति का दूसरा की आलोचना करन पर]

छेरी जो स गई राजा क माइ ना।

बलिदान का उचित मूल्याकन न किया जाना। प्रगाढ प्रेम की उपेक्षा जीवन सवस्व प्राप्त कर लन पर भी असन्ताप।

माई ना=भाव ही नही अर्थात् चिन्ता नही। भाई ना रचिकर नही हुई।

[उदासीन इष्ट क प्रति व्यग्य]

ी सी लोहडी उसी मे गुसाई बावा ।
कुचित स्थान म भारी भरकम ।
कुचित गृहस्थ म विरक्त म'यामी । अनमिल का साथ ।
ाहडी=कुटी [तगी म किसी विना‍त काय का प्रवेन होने पर]

ा

गल मे ऊसर स्हैर मे दूसर ।
जगल मे अनुवर भूमि की भाति ही नगर मे दूसर (वैश्यो का वग विनेष) जो अब अपने को कुछ काल से ब्राह्मण कहने लगा है और भागव के नाम से प्रसिद्ध है । लोग अनुपयोगी होने है । जगन म बजर भूमि की भाति नगर मे दूसर-लोग दृष्टि मे गढते हैं ।

[जाति चरित्र पर टिप्पणी]

गल मे मोर नाच्या, किसए जाएा ।
स्नही सम्बं धया (प्रनसको) से दूर गौरवा तित भी हुए तो क्या ? अनुपयुक्त स्थल पर महिमा प्रदशन (दान व्यय आदि) करने का क्या लाभ । जो स्थिति मामा‍यत सबके सामन आती है उसी की प्रशसा होती है । गुए ग्राहको के समक्ष ही गुए प्रदशन हाना चाहिए अ‍यथा व्यथ है ।

[परिचिता स दूर प्रदशन पर]

जएी ना ब्याही परसूत कहा तें लाई ।
अकारए काय सिद्धि काय-कारए परम्परा विच्छेद
परसूत=(स० प्रसूत) रोग विशेष, जो स्त्रिया को प्रसव के उपरा‍त प्राय कष्ट देता है । अविवाहित स्त्री को प्रसूत रोग की सम्भावना नही की जाती ।

मौत सजोग न रोग कछु नाँहि गिरह बलवा‍त ।
ननद होत क्या दूवरी ए अलि ! जगत बसन्त ॥

[पतित चरित्र अथवा अकारए ही सम्भाव्य लक्षए प्रकट होने पर आलोचना]

जब दात हुए तो चएोंना, जब चएो हुए तो दाँत ना ।
अवसरोचित साधना का अभाव कठोर काल प्रवत्तन की आनाचना । दो पूरको म एक का सतत अभाव ।

भूख गए भोजन मिले जाडे गए कबाव ।
बल थाके तिरिया मिनी तीनो पन ही खराब ॥

[आवश्यकतानुकूल उपलब्धि न होने के समय]

जब सों (सग) जीणों तब सों (सग) सीणा।

जब तक जीवन है तब तक काय म मुक्ति नही। जीवन रक्षण के लिए परिश्रम की अनिवार्यता।

वि०—लोकोक्ति म जीवन धारण करने के लिए मनोयोग-पूर्वक परिश्रम करने का निर्देश है। सीन म हाथ आँख और मस्तिष्क सभी का योग आवश्यक है। [आराम हराम है।]

जहां गाय वहीं बच्छी।

जहाँ माँ वही बच्चा आश्रितता को दूर नहीं रखा जा सकता। जीवनाधार से कोई पृथक नहीं रह सकता। [पोष्य पोषक सम्ब ध। साम्य सूत्र]

जहां जाय भुक्खा वहां पड़ सुक्खा।

अभागो का सकट पीछा करते हैं दुर्भाग्य आपत्तियाँ सभी जगह अपने साथ ले जाते हैं।

सुक्खा < सूखा = अवर्षा (अकाल) [कठोर नियति पर टिप्पणी]

जहां देखो तवा परात वहेंइ गवाइ सारी रात।

जहाँ स्वार्थ सिद्धि हो वहीं रम रहना। खाने पीने का जहाँ सहारा हो वहाँ से न टलना। प्राप्ति की आशा म निकम्मता का प्रदर्शन। स्वार्थ से मोह की उत्पत्ति।

वि०—लोकोक्ति म रात गवाने म आलस्य एव साधारण आवश्यकतापूर्ति पर सतुष्ट प्रदर्शन से अधिक स्वार्थ का भाव है।

तवे परात—भोजन बनाने के उपकरण जिनके होने से भोजन प्राप्त होने का अनुमान हो सकता है।

[किञ्चित लाभ के लिए किसी के साथ लगे रहना]

जहां बहू का पीसना वहीं ससुर की खाट।

अवैध व्यापार। एकान्त स्थल मे दो स्त्री पुरुषो की अनौचित्य पूर्ण स्थिति। सबल व्यक्ति की निबल पर बलात्कार कामना।

वि०—पीसते समय चक्की से उत्पन्न घरघराहट निद्रा म बाधक है फिर भी ऐसे स्थल म शया लगाने का कोई रहस्यपूर्ण (अनुचित) कारण ही हो सकता है। वैसे भी ससुर और पुत्रवधू का एक स्थान पर सशयात्मक परिस्थितियो म रहना पतनकारी और असामाजिक है।

अनुज वधू भगिनि सुत-नारी
सुन सठ ये कन्या समचारी।
—तुलसी

[अवैध सम्ब ध के हेतु अवसर ढूढने वाला के प्रति]

जहा मुगा ना बोल्ल, क्या तड़का नी होता।

प्रकृति व्यापार किसी विशेष पर निभर नहीं करता। कोई एक काम न करे, तो भी काय क्रम चलता ही है। किसी के लिए अपने को अति महत्वपूर्ण समझना व्यर्थ। [अहम्वादी की उपेक्षा]

जाम्रो लाख, रहो साख।

कितनी ही हानि क्या न हो पर मयादा बनी रही तो सब कुछ है।
साख=मयादा सदभाव। [समाज म स्थायित्व के लिए]

जाट गाड्डा म दे भेल्ली दे।

मूख व्यक्ति स्वच्छा से किसी को कुछ नहीं देता, विवशता म चाहे उसे कितना ही अधिक क्या न देना पड़े। आधार ही नष्ट हो जाय तो दान शक्ति कैसे आयगी।

(गन्ना गुड़ बनाने का आधार है एक एक करके वह बाट दिया जाए तो गुड़ की भेली कस बन सकती है।)

[मूखता पूण व्यवहार की आलोचना। जाट बुद्धि की दूरदर्शिता भी]

जाट की बेटी बाबा जी नाम।

मवथा भ्रम। प्रवृत्ति परक व्यक्ति के निवृत्ति परक होने का भ्रम पहले ही संसार का और उदासीन बनना।

वि०—जाट श्रमशील सूरमा जाति है जिसको युद्ध म तलवार की मूठ और शांति म हल की मूठ पकड़ना का काम है। वह कठोर यथाथ मे जीता है उस ऐहिक प्राणी को आमुष्मिकता म क्या प्रयोजन।

[व्यवहार की सरलता अथवा अज्ञात पर टिप्पणी]

जाट मरा जिद्द जाणिय बरस्सोडी होल्ले।

जाट को मृत्युपरान्त ही नष्ट न जान लेना चाहिए। अपितु जब तक मृत्यु पश्चात् के सारे संस्कार न हो जाएँ—जिनके कारण उसका नाम और स्मृति रहती है तब तक उसे नष्ट न माना जाए। मृत्यु शारीरिक और सामाजिक दोनों ही हो तभी व्यक्ति को मरा समझना चाहिए। कहीं गया हुआ व्यक्ति जब बहुत दिन तक न लौटे तथा लोग भी उसे भुला चुके हों तभी उसका जाना स्वीकार किया जा सकता है।

बरसोडी—बर्षी (एक संस्कार जो मृत्यु के एक वर्ष पश्चात् मरण निमित्त को हो किया जाता है।) इसको मृत्यु सम्बन्धी संस्कारों म अन्तिम माना जाता है।

(कोई काम तब पूरा हुआ समझो जब इस पर्याप्त समय बीत जाए क्योंकि कभी-कभी परिस्थिति परिवर्तित होने के पश्चात् भी पूर्वस्थिति स्थापन हो सकता है।)

जाडा दुइ से जा, या रुई से।
शीत निवारण के लिए मीलित शयन अथवा रुई अपेक्षित है।
दुई—द्वैत, युग्म, स्त्री पुरुष।

जाण मार वाणिया पिछाण मार चोर।
व्यापारी परिचितों को हानि पहुचाते हैं और चोर अपरिचितों को क्योंकि यदि चोर से कोई पहचान निकालता है तो वह अपनी हानि के भय से ऐसे व्यक्ति को नष्ट कर देता है। [वर्ग आचरण पर टिप्पणी]

जाणी पूच्छी डूमणी, गाव आळ-पताळ।
अति परिस्थिति का आडम्बर पूर्ण कथन।
कहा कहत मामी के आगे जानत नानी नानन्।' —सूर०
आळ पताळ=आकाश पाताल—के सिर पर की आडम्बर पूर्ण।
डूमणी—डूम जाति की स्त्री उत्तर प्रदेश की एक अपराधी आदिम जाति जो मुर्दे उठाने और कहीं कहीं नाचने गाने का व्यवसाय करती है।
(देखो—Elliot s—Races of the N W P)
[अवगत तथ्य को किसी क द्वारा अतिशयोक्ति पूर्ण ढंग से प्रकट करने पर]

जान न पेंह चान, बडी खाला स सलाम।
अपरिचितों से परिचय उत्पन्न करना, प्रवचना पूर्ण शालीनता का प्रदर्शन। अथवा अपरिचित और अनभिज्ञ होने का भाव।
[स्वार्थी असम्बन्धित व्यक्ति के प्रति]

जिनणा कर तागां तुलसी, उत्त खा जा ढोर सुलसी।
जितनी मितव्ययता की जाय उतनी ही हानि हो।
सीमित साधना में रहने के प्रयत्न पर भी। असम्बन्धित प्राणियों के कारण दुर्व्यय और हानि।
तांगा—तुलसी—(फा०) तंग तुरसा (मितव्ययता)। कजूसी
सुलसी=सुर सुरी (अन्न को हानि पहुँचाने वाला एक छोटा कीट)
ढोरे=ढोरा (बहु वचन) यह भी अन्न को हानि पहुँचाने वाला एक कीट होता है।
[किसी कंजूस का असम्बन्धित व्यक्तियों एवं कार्यों के लिए व्यय होने पर। भाग्य की कटुता का कथन]

जितनी सपत उतनी विपत।
जितनी सन्तान (वंश परिवार) उतना ही कष्ट।
जितनी माया उतना ही संकट।
सपत (सं० सम्पत्ति ...त्र, सन्तति-सन्तान।

वि०—लोक म सपत शब्द धन और सन्तान दोना के लिए प्रयुक्त होता है यथा 'तर सपत जन्मे नाय ।"
(वर्तमान १९६९ भारतीय शासन की परिवार नियोजन नीति के सवथा मेल म लोकोक्ति सीमित परिवार का समर्थन करती है ।
[माया के अभाव भाव म कष्ट बडे परिवार से उत्पन्न दरिद्रता]

जितने काळे, उतने मेरे बाप के साळे ।
समान रूप से समान सम्बन्ध, एक समान पर समान अधिकार समान रूप म समान गुणा की कल्पना ।
जितने भयकर हैं व सब अपने तो मामा हैं ही अर्थात इनसे कोई भय नहीं ।
[कठोर भयकर म सम्बन्ध स्थापना अथवा किसी व्यक्ति को भ्रम पूवक गलत समझने पर]
(लोकोक्ति का प्रचलन दूसरे अथ मे ही है)

जिन जाए उन्हीं लजाए ।
जिनको जन्म दिया उन्ही से बदनामी मिली । अभद्रता ।
[कृतघ्न आचरण पर]

जिब गादड की मोत आवे, गा उरिया भागे ।
जाको प्रभु दारुण दुख देही ।
ताकी मति पहल हर लेही ।। —तुलसी
(विनाश काले विपरीत बुद्धि)
जसा होना होता है वैसे बानक बन जाते हैं नाश के सन्निकट होने पर उसी के अनुरूप कम होते हैं ।

जियत पिता से दगमदगा, मरे पिता पहुचाए गगा ।
जीवन म विरोध और मत्यु पर पूजन ।
वि०—गगा—वह भारतीय पवित्र नदी है जिसके तट पर अंतिम सस्कार मोक्षदायी माना जाता है ।
[लोकभाव की रक्षा के लिए गुरुजना के प्रति सम्मान प्रदशन पर]

ज्यित बाप कू असाढ़ो के डले मरे बापू कू दही बडे ।
जीवन काल म जिस पिता की उपेक्षा मत्यु के उपरान्त उसी के प्रति अतिशय स्नेह-सम्मान । भावना रहित मिथ्या प्रदशन ।
रुचि रहित लोक परम्परा निर्वाह । सामने आदर न कर पीछे पूजना ।
वि०—श्राद्ध म जो मृतकों के लिए हिन्दुओं म प्रतिवर्ष आश्विन कृष्णपक्ष मे किए जाते है, परिवार के बडे-बूढ़े के श्राद्ध के दिन भोजन म उन की दान के

जाडा दुइ से जा, या रुई से।
शीत निवारण के लिए मीलित शयन अथवा रूई अपेक्षित है।
दुई—द्वैत युग्म, स्त्री पुरुष।

जाण मार बाणिया पिछाण मार चोर।
व्यापारी परिचितों को हानि पहुँचाते हैं और चोर अपरिचितों को क्योंकि यदि चोर से कोई पहचान निकलता है तो वह बन्दी होने के भय से ऐसे व्यक्ति को नष्ट कर देता है। [वर्ग आचरण पर टिप्पणी]

जाणी पूच्छी डूमणी, गाव आळ-पताळ।
अति परिस्थिति का आडम्बर पूर्ण कथन।
कहा कहत मामी के आगे जानत नानी नानन्। —सूर०
आळ-पताळ=आकाश पाताल—के सिर पर की आडम्बर पूर्ण।
डूमणी—डूम जाति की स्त्री उत्तर प्रदेश की एक अपराधी आदिम जाति जो मुर्दे उठाने और बही रही नाचने गाने का व्यवसाय करती है।
(देखो—Elliot s—Races of the N W P)
[अवगत तथ्य को किसी के द्वारा अतिशयोक्ति पूर्ण ढंग से प्रकट करने पर]

जान न पेंह चान, बड़ी शाला स सलाम।
अपरिचितों से परिचय उत्पन्न करना, अजनबी पूर्ण घनिष्ठता का प्रदर्शन। सर्वथा अपरिचित और अनभिज्ञ होने का भाव।
[स्वार्थी धनाकांक्षित व्यक्ति के प्रति]

जितणा कर लागे गुणसी उतना लागे कोर गुणसी।
जितनी मितव्ययता की जाय उतनी ही हानि हो।
सीमित साधनों में रहने के प्रयत्न पर भी। असम्भावित प्राणियों के कारण दुर्व्यय और हानि।
लागे—गुणसी—(फा०) नफा-नुकसान (मितव्ययता)। कंजूसी
गुणसी=गुर गुरा (धन की हानि पहुँचाने वाला एक छोटा कीड़ा)
कोर=कोरा (बहु वचन) यह भी धन को हानि पहुँचाने वाला एक कीड़ा होता है।
[स्त्रियों के कुल का असम्बन्धित व्यक्तियों एवं कार्यों के लिए व्यय होने पर। भाग्य की कटुता का कथन]

[illegible]

खाद्य सामग्री। [सम्पन्न का आदर होने पर]
(One who controls the purse, controls all)

जिसमे खाय उसी हाडी मे छेक करे।
पायक का विरोध। कृतघ्नता। अदूरदर्शिता। मूर्खतापूर्ण आचरण।
छेक—छेद (छिद्र)=बुराई अपवाद। [कृतघ्न के आचरण पर]

जिसका खाव, उसका गाव।
जिससे उदरपूर्ति (उपलब्धि) हो उसी की प्रशंसा (चाटुकारी) करना। आभार-स्वीकृति। स्वार्थ मय आचरण। [लालची चाटुकार के प्रति]

जीभ का जीत करतब का हार।
वाचालता के समक्ष कर्मशील मन्द पड जाते हैं। कार्य से प्रदर्शन का अधिक महत्व (क्योंकि जीभ विज्ञापन स्वयं करती है और कार्य दूसरों के द्वारा देखे जाने पर उनसे विज्ञापन की अपेक्षा रखता है)
[प्रगल्भता के महत्व पर टिप्पणी]

जीवेंगे सोई, सोवेंगे दोई।
शीत निवारण उपचार।

शिशिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्ह
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
× × ×
सुवाला है दुशाला है, विशाला चित्रशाला है।

जता तेरा नाच कूद, वसी मेरी वार फेर।
कृतित्व क अनुरूप भेंट। श्रम और पारिश्रमिक सानुपातिक।
[कर्म के लिए प्रोत्साहन अथवा कर्मफल की विवेचना]
अर्थात्
जसा किया वसा पाया अथवा जसा करोगे वैसा पाओगे।

जसी गजी सत्ती, वसे ऊत पुजारी।
जसे स्वामी ऐसे सेवक। समान स्वभाव का गठबन्धन।
गजी=गंजी।
मत्ती=सती पूजनीय कुल देवी।
[इष्ट अथवा दास होना म किसी के भी आचरण पर]

जसी तेरी तूमडी, वसे मेरे राग।
साधन के अनुरूप फल।
तूमडी=वाद्य विशेष। [साधना की अपर्याप्तता एव अक्षमता पर]

ाद्य सामग्री। [सम्पन्न का आदर होने पर]

One who controls the purse, controls all)

समे खाय उसी हाडी मे छेद करे।

ापक का विरोध। कृतघ्नता। अदूरदर्शिता। मूर्खतापूर्ण आचरण।

द—छेद (छिद्र)=बुराइ अपवाद। [कृतघ्न के आचरण पर]

सका खाव, उसका गाव।

जससे उदरपूर्ति (उपलब्धि) हो उसी की प्रशंसा (चाटुकारी) करना। आभार-वीकृति। स्वार्थ मय आचरण। [लालची चाटुकार के प्रति]

म का जीत करतव का हार।

ाचाला के समक्ष कर्मशील मन्द पड जाते हैं। कार्य से प्रदर्शन का अधिक महत्व (क्योंकि जीभ विज्ञापन स्वयं करती है और कार्य दूसरो के द्वारा देखे जाने पर उनमे विज्ञापन की अपेक्षा रखता है)

[प्रगल्भता के महत्व पर टिप्पणी]

ोवेंगे सोई, सोवेंगे दोई।

शीत निवारण उपचार।

शिशिर के पाला को न व्यापत कसाला तिन्ह
जिनके अधीन एते उदित मसाला हैं।
× × ×
सुवाला है दुशाला है विशाला चित्रशाला हैं।

जता तेरा नाच कूद, वसी मेरी वार फेर।

कृतित्व के अनुरूप भेंट। श्रम और पारिश्रमिक सानुपातिक।

[श्रम के लिए प्रोत्साहन अथवा कर्मफल की विवेचना]

अर्थात्

जसा किया वसा पाया अथवा जसा करोगे वसा पाओगे।

जसी गजी सत्ती, वसे ऊत पुजारी।

जस स्वामी ऐसे सेवक। समान स्वभाव का गठबन्धन।

गजी=गंजी।

सत्ती=सती पूजनीय कुल देवी।

[स्वामी अथवा दास दोनो में किसी के भी आचरण पर]

जसी तेरी तूमडी वसे मेरे राग।

साधन के अनुरूप फल।

तूमडी=वाद्य विशेष। [साधना की अपर्याप्तता एव अक्षमता पर]

जो पोड़ी मसतक लिखी, चोर कहाँ से जाय।
भाग्य लिखी सपत्ति सब मिलेगी। (भाग्यवाद पर अमिट विश्वास)
[वस्तु के खान और मिल जाने पर]

जो देगी, उसी का खल्लेगा।
जो अप्रिम धन देगी उसी के बालक को खिलौना मिलेगा। यात्रा पर जाते हुए व्यक्तियों से लौटने पर कुछ अपने लिए खरीद लाने के आग्रह का निषेध।
[नीतिकथन]

ज्यूं-ज्यूं लीया तेरा नाम, तूने मारा सारा गाम।
जितना स्नेह दिया उतना ही नखरा कर परेशान कर डाला।
[प्रेम की अवज्ञा एवं उसके परिणाम की कठोरता पर]

ज्यों ज्यों चिड़िया मोटी हुइ, त्यों-त्यों गाड सिकुड़ती गइ।
जितनी सम्पन्नता बढ़ी उतना ही सकोच। अधिक प्राप्ति होने पर अनुदारता।
गाड—गुदा। मल द्वार
[कजूस की मनोवृत्ति पर तीखा व्यग्य]

ज्यों ज्यों झंडा डाके डाल, अंग्रेजो की गही हाल।
साहसी व्यक्ति का निज आतक वर्णन। किसी के कार्यों से दूसरा की स्थिति म अस्थिरता की उत्पत्ति।
वि०—ब्रिटिश शासन काल मे झंडा गूजर नाम का एक आतककारी डाकू हुआ है। इसका प्रभाव क्षत्र जि० बुलन्दशहर तथा दिल्ली प्रदेश था। कहते हैं कि इसने विशेषकर अंग्रजो को अधिक सताया था। स्मरण रहे कि बुलन्दशहर मेरठ के गूजरो ने १८५७ ई० के प्रथम स्वतन्त्रता सग्राम म अंग्रजो का भारी विरोध किया था तथा उन्होंने भी गूजरो पर भयानक अत्याचार किए थे। झंडा का काय प्रतिहिंसा की भावना से प्ररित था। लोकोक्ति का प्रचलन इसी घटना के आधार पर हुआ है।
[आततायी की प्रतिहिंसा का गल कथन]

झ

झगड़ तो कुरना कू रए बासरी भी गई।
अतिरिक्त लाभ की आशा म अपना सवस्व खोना। लालच म हानि।
(चौबे छब्बे होने गए। दुबे ही रह गए।)
वि०—कुरवा तथा बासरी जि० बुलदशहर के दो ग्राम हैं जिनम कुरवा के जमीदार बाँसरी पर भी दावा रखने की इच्छा से बाँसरी वासियों से

फौजदारी कर बैठे और उस अभियोग से अपने को बचाने के लिए उनको इतना व्यय करना पड़ा कि अपनी संपत्ति (कुरैना ग्राम) भी खो बैठे।

आधी तज सारी को धावे।
सारी मिल न आधी पावे।।'

[मुकदमे बाजी के दूषित परिणाम पर]

(उक्त दोनों लोकोक्तियां जिला बुलंदशहर के सीमित क्षेत्र में प्रचलित है। वस्तुतः इनका स्थानीय महत्व ही अधिक है।)

झाट उखाड़े ते क्या मुर्दे हलके हों।
कोई छोटी कमी करने से क्या भार कम होता है?
झाट=पुरुष जननेंद्रिय के ऊपर उगने वाले बाल जो और स्थान के बालों से भी अपेक्षाकृत कम होते हैं।

[किसी अतिसाधारण बात में कमी की जाती हुई देखकर]

झाझर सी लुट गई।
बुरी तरह नष्ट करदी गई। दीन विरूप कर दी।
वि०—झाझर जिला बुलंदशहर का एक कस्बा जो सन् १८५७ के राज्य विद्रोह में इतनी बुरी तरह लूटा गया कि आज तक भी उसका पुराना संपन्न रूप नहीं लौट सका।

[पूरी बर्बादी पर]

ट-ठ

टका की हांडी गई तो गई, कुत्ते की जात पिछाणी गई।

पाठा०—
दमड़ी की हांडी गई तो गई,
कुत्ते की जात पिछाणी गई।

ठाकुरों की बरात में हुक्का कौन भरे।
महमान्य लोगों में समाज सेवा भाव कहाँ?
समान स्थिति लोगों में कौन किसका सत्कार करे। [महमान्यता पर व्यंग्य]

ठाली बहू का नूण के में हाथ।
कुछ काम न हो तो बिगाड़ ही करना। अनावश्यक व्यस्तता।
नूणई=नमक रखने की हांडी। [अनाभकर काय पर व्यंग्य]

ठाली बहूा यणिया भाड़ तोल।
स्वभावगत अनुपयोगी काय।

अतिरिक्त सावधानी के कारण प्रत्येक वस्तु का परिभाषा बोध।
क्रय विक्रय के लिए यदि कुछ न हो तो व्यवसायी व्यक्ति क्या करे?
वि०—लोकोक्ति का दूसरा अर्थ उच्चारणगत भिन्नता से प्राप्त होता है।

ठाली नायन कडरा मूडन लागी।

[व्यंग्य वर्गस्वभाव]

ठलवार का काम। अनुपयोगी होते हुए भी अभ्यास बनाये रखने का भाव। और कोई न मिलता तो वासनामयी नारी अवयस्क पर ही दाव चलाने लगी।
कवि तुलसी ने सोहर नाग के ग्रंथ में विज्ञित नायिका भेद वर्णन करते हुए इस जाति की प्रवृत्ति का वर्णन इस भांति किया है।
नउनम्याँ नन नचावइ हो।
कडरा=पटडा (भैंस का नर बच्चा) (मादा कटिया।)
मूल अल्पायु

ड-ढ

[स्वभाव वर्णन]

डूम का घोडा जिघे चळ व्हई जजमान का घर।
नाचन गान वाला का सभी जगह आदर।
जिजमान का घर=आश्रय स्थल।

[रंजन कार्यों की लोक प्रियता]

ढाइ पा का माल लाइ मूडो प तें मारी आइ।
ओछापन। स्वल्प कृतित्व का विज्ञापन प्रदर्शन। ननद भावज में पारस्परिक व्यवहार का निदर्शन। (ननद भावजों के प्रति सदैव कटु एवं असहिष्णु रहती आई है। उनके कार्य को विपरीत आलोचना इनका स्वभाव होता है। परन्तु लोकोक्ति में आलोचक नहीं प्रदर्शनकारी पर ही व्यंग्य है। लोकोक्ति का प्रयोग इसी अर्थ में होता है। इसका प्रचलन ब्रज सामान्य पर है।
भूरा=बालू रेत के ऊंचे टीले।

[आत्म विज्ञापन पर व्यंग्य]

ढाइ क दो करद नाम दारोगा धर द।
वेतनमान चाहे घट जाय किन्तु नामधारी पद प्राप्त हो। धन से अधिक मान। प्राप्ति से अधिकार की अधिक लालसा।
वि०—लोकोक्ति में वेतन घटाकर दरोगा नाम (पद) धारकर संतुष्टि व्यक्त की गई है।

ब्रिटिश शासन काल म प्रचलित घूसखोरी और आतक इससे प्रकट हैं।
[मनुष्य की अधिकार लालसा पर व्यग्य]

त

तत्ता घुणा, मूज की तात।

उत्साही कायकर्त्ता के अटपटे उपादान, शीघ्र काय करने की धुन मे यह भी न देखना कि कायपूर्ति के समुचित उपादान हैं भी या नही।

वि०—मूज शीघ्र चटकन वाली होने के कारण तात बनाने के लिए अनुप युक्त होती है। इसम लचक तनिक नही होती।

[लापरवाह जल्दबाज काम करने वाले के प्रति]

तन प नहीं लत्ता, पान खांय अलबत्ता।

असामथ्य म शृगार की कामना। आवश्यकताएँ तो निधनता के कारण पूरी न हो और व्यसन फिर भी करें।

लत्ता=वस्त्र। अलवत्ता=निस्सदेह परन्तु।

[निधन व्यसनी के आचरण पर]

तवे की मेरी, चूल्हे की तेरी।

सपत्ति का सम विभाजन। आपा धापी (जिसके जो हाथ पड जाय वह उसी का।)

पहिले दूसरे का भाग पीछे अपना (उदारता)।

वि०—रोटी पकाते समय एक पचाने के लिए तवे पर डालते हैं, और वही जब चूल्हे मे सिकने के लिए रखने है तो दूसरी तवे पर पडी होती है। इस प्रकार तवे और चूल्हे की म पूर्वापर क्रम रहता है।

[व्यक्ति व्यवहार पर टिप्पणी]

ताखी त न चुल्हा छोडा ना चौकी।

विभेदकरी क्रूर दृष्टि के कारण सम्पन्नता और सामरस्य का नाश। स्त्री की कुभावनाओ के कारण सम्मिलित परिवार की हानि।

ताखी=वह स्त्री जिसकी दोनो आखें (रँग ढग म) एक जसी न हो। भेद दृष्टि रखने वाली।

चूल्हा—चौकी=सम्मिलित परिवार के चिह्न। [विभेदकारी आचरण पर]

तेरो एड्डी मे गू लगरया है।

शिशु एव किसी सुन्दर वस्तु का कुदृष्टि स बचाने का मन्त्र।

याल व्यक्ति का ध्यान उचटाने के लिए । गन्ने गति और मति प्रभावों के निवारणार्थ । [अनुभवहर प्रभाव निवारण के लिए]

तेरी मेरी राजी, तो क्या करेगा काजी ।

दो व्यक्तियों की सहमति हो तो तीसरे की क्या आवश्यकता । किसी विषय पर दो व्यक्तियों की पूर्ण सहमति होने पर अन्य के मत प्रकाशन की आवश्यकता नहीं । कोई दो (प्रेमी प्रेमिका) यदि स्त्री-पुरुष बनकर रहना चाहते हैं, तो इसके लिए किसी गारता की आवश्यकता नहीं ।

वि०—किसी भी अनुबन्ध में केवल दो व्यक्ति ही महत्त्वपूर्ण होते हैं उस पर किसी अन्य की छाप की आवश्यकता नहीं ।

(किसी विषय पर दो व्यक्तियों में पूर्ण सहमति होने पर अन्य की उपेक्षा)

तेल तमाखू सिगरट बढ़त मले ।

प्रयोग की वस्तुओं का प्रयोग में आना ही उचित ।

प्रकाश-पूर्ण घर में स्वागत सत्कार होना ही उचित ।

[ज्ञान दी जीव की अभिव्यक्ति]

तेल देखक तेल की धार देखरा ।

परिस्थिति और घटना प्रवाह पर ध्यान दो । परिस्थितियों को समझने-बूझने का यत्न करो । घटना चक्र का अध्ययन करो ।

कुग्रह का प्रभाव दूर करो और भविष्य का अनुमान प्राप्त करने की चेष्टा करो ।

वि०—कुग्रहों का प्रभाव नष्ट करने के लिए किसी पात्र में तेल भर कर उसमें अपने मुख का प्रतिबिम्ब देखकर दान किया जाता है । इसे छायादान कहते हैं तथा किसी पात्र में तेल भर कर विवाहोपरान्त वर वधू भावी जीवन में सामरस्य का अनुमान करने के लिए दीवार पर उसकी (धार) नाल लगाते हैं । यदि धारा अविभाजित हुई तो सुखी जीवन और दो हुई तो विषम जीवन का अनुमान किया जाता है । (इस लोकोक्ति का प्रचलन प्रायः प्रथम दिये गए सन्दर्भ में ही होता है ।)

[जीवन के प्रति सावधानी बरतने का निर्देश]

तेला खसम करया फिर बी पानो स गाड धाइ ।

सुख प्राप्ति के लिए अयुक्त कर्म करने पर भी सुख भाग क्या न हो । सम्पन्न से सम्बन्ध होने पर भी दीनता में क्या रहना । विशिष्ट की संगत में विशिष्ट आचरण (असाधारण व्यवहार) ।

खसम करना=उपपति वरण करना । [अनुचित महिमा प्रदर्शन पर]

तू डाल डाल, मैं पात पात ।

सतर्कता (चातुरी म स्पर्धा) अन्य से अपने को (चालाकी मे) कम सिद्ध न करना । [सावधानी का प्र शन]

तू तो गधो कुमार को, तने राम सू कौत ।

भारवाही जीव को राम स क्या सगत । पनित व्यक्ति का परिष्कृत सभ्य आचरण स क्या प्रयाजन ।

स्वल्प नान और व्यवहारी जीवन हाने के कारण आदर्शों के प्रति उन्मुख न होना । श्रमगत व्यापार ।

कौन=क्या सम्बन्ध ।

[साधारण व्यक्ति द्वारा उच्चादर्शों की चर्चा करन पर]

तू रूठी मैं छूटी ।

जैसे को तसा । किसी के द्वारा उपेक्षा पान पर उदासीनता, सम्ब धो की अनिवायता म एक के उदासीन होने पर दूसरे की प्रतिक्रिया ।

[शठे शाठ्य समाचरत]

द

दतुल खसम की, हँसी न खसी ।

सातक मुद्रा वाना की प्रसन्नता और रोष नही जाना जाता । (मुख मुद्रा से स्वभाव का अनिश्चय) ।

दतुला=जिसके दात बाहर को निकल हा ।

खसी=नाराजी ।

वि०—मान्यता है कि मुख मुद्राए स्वभाव की परिचायक होती हैं ।

नीद विपय आलस हरप अनहित हेत अहन ।
मन महीप के आचरन हग दिवान कह देत ॥ —रहीम

परन्तु लोकोक्ति म इस विश्वास को उलट दिया गया है ।

(हमेशा दात काढे (झगडने के लिए तत्पर व्यक्ति) कब प्रसन्न हैं और कब नाराज इसका पता नही चलता । व्यक्ति-स्वभाव वणन ।)

दमडी की बुन्यि , टका सेर मुँडाइ ।

मून वस्तु स उसक रख रखाव पर अधिक व्यय । [अपव्यय पर]

दमडी की हाडी गइ तो गइ, कुत्ता की जात पिछाणी गइ ।

कुछ हानि हुई ता क्या लालची स्वभाव का परिचय ता मिला । लालची लाग किञ्चित आकषण पर ईमान खा बठत है ।

वाले व्यक्ति का ध्यान उचटाने के लिए। गहन रुचि और मति प्रगाढ़ के निवारणार्थ। [अनुभूत प्रभाव निवारण के लिए]

तेरी मेरी राजी, तो क्या करेगा काजी।

दो व्यक्तियों की सहमति हो तो तीसरे की क्या आवश्यकता। किसी विषय पर दो व्यक्तियों की पूर्ण सहमति होने पर अन्य के मत प्रकाशन की आवश्यकता नहीं। कोई दो (प्रेमी प्रेमिका) यदि स्त्री पुरुष बनकर रहना चाहते हैं तो इसके लिए किसी शास्त्र की आवश्यकता नहीं।

वि०—किसी भी अनुबन्ध में केवल दो व्यक्ति ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, उस पर किसी अन्य की छाप की आवश्यकता नहीं।

(किसी विषय पर दो व्यक्तियों में पूर्ण सहमति होने पर अन्य की उपेक्षा)

तेल तमाखू सिगरट बळत भले।

प्रयोग की वस्तुओं का प्रयोग में आना ही उचित।
प्रकाश पूर्ण घर में स्वागत सत्कार होना ही उचित।

[मान दी जीव की अभिव्यक्ति]

तेल देखस तेल की धार देखस।

परिस्थिति और घटना प्रवाह पर ध्यान दो। परिस्थितियों को समझने-बूझने का यत्न करो। घटना चक्र का अध्ययन करो।

कुग्रह का प्रभाव दूर करो और भविष्य का अनुमान प्राप्त करने की चेष्टा करो।

वि०—कुग्रहों का प्रभाव नष्ट करने के लिए किसी पात्र में तेल भरकर उसमें अपने मुख का प्रतिबिम्ब देखकर दान किया जाता है। इसे छायादान कहते हैं तथा किसी पात्र में तेल भर कर विवाहोपरान्त वर वधू भावी जीवन में सामरस्य का अनुमान करने के लिए दीवार पर उसकी (धार) नाल लगाते हैं। यदि धारा अविभाजित हुई तो सुखी जीवन और दो हुई तो विषम जीवन का अनुमान किया जाता है। (इस लोकोक्ति का प्रचलन प्रायः प्रथम दिये गए संदर्भ में ही होता है।)

[जीवन के प्रति सावधानी बरतने का निर्देश]

तेलो ससम करया फिर बी पानी ते गाड धोड।

सुख प्राप्ति के लिए अयुक्त कर्म करने पर भी सुख भोग क्या न हो। सम्पन्न से सम्बन्ध होने पर भी दीनता में क्या रहना। विशिष्ट की संगत में विशिष्ट आचरण (असाधारण व्यवहार)।

ससम करना=उपपति वरण करना। [अनुचित महिमा प्रदर्शन पर]

तू डाल डाल, मैं पात पात ।

सतर्कता (चातुरी म स्पर्धा) अन्य से अपने को (चालाकी म) कम सिद्ध न करना । [सावधानी का प्रदर्शन]

तू तो गधी कुम्हार की, तने राम सू कौन ।

भारवाही जीव को राम से क्या मतलब । पतित व्यक्ति को परिष्कृत सभ्य आचरण से क्या प्रयोजन ।

स्वल्प ज्ञान और व्यवहारी जीवन होने के कारण आदर्शों के प्रति उन्मुख न होना । श्रमगत व्यापार ।

कौन=क्या सम्बन्ध ।

[साधारण व्यक्ति द्वारा उच्चादर्शों की चर्चा करन पर]

तू रूठी मैं छूटी ।

जसे का तसा । किसी के द्वारा उपेक्षा पाने पर उदासीनता सम्बन्धों की अनिवार्यता म एक के उदासीन होन पर दूसरे की प्रतिक्रिया ।

[शठे शाठ्य समाचरेत्]

द

दतुल खसम की, हँसी न खसी ।

सातक मुद्रा वालों की प्रसन्नता और रोष नही जाना जाता । (मुख मुद्रा से स्वभाव का अनिश्चय) ।

दतुला=जिसके दात बाहर को निकले हो ।

खसी=नाराजी ।

वि०—मान्यता है कि मुख मुद्राए स्वभाव की परिचायक होती हैं ।

नीद विषय आलस हरष अनहित हेत अहेन ।
मन महीप के आचरन दृग दिवान कह दत ॥ —रहीम

परन्तु लोकोक्ति म इस विश्वास को उलट दिया गया है ।

(हमेशा दात काढे (भगवान के लिए तत्पर व्यक्ति) कब प्रसन्न हैं और कब नाराज इसका पता नही चलता । व्यक्ति-स्वभाव वर्णन ।)

दमडी की बुढिय , टका सेर मुँडाइ ।

मूल वस्तु स उसके रख रखाव पर अधिक व्यय । [अपव्यय पर]

दमडी की हाडी गइ तो गइ, कुत्ता की जात पिछाणी गइ ।

कुछ हानि हुई तो क्या लालची स्वभाव का परिचय तो मिला । लालची लोग किञ्चित आकर्षण पर इमान खो बठते हैं ।

वाल व्यक्ति का ध्यान उचटान के लिए । गम्न रुचि और प्रति प्रगसा के निवारणाय । [अनुभवार प्रभाव निवारण के लिए]

तेरी मेरी राजी, तो क्या करेगा काजी ।

दो व्यक्तियो की सहमति हो तो तीसरे की क्या आवश्यकता । किसी विषय पर दो व्यक्तियो की पूर्ण सहमति होने पर अन्य के मत प्रकाशन की आवश्यकता नहीं । कोई दो (प्रेमी प्रेमिका) यदि स्त्री पुरुष बनकर रहना चाहते हैं, तो इसके लिए किसी शास्ता की आवश्यकता नहीं ।

वि०—किसी भी अनुबन्ध म केवल दो व्यक्ति ही महत्त्वपूर्ण होते हैं, उस पर किसी अन्य की छाप की आवश्यकता नहीं ।

(किसी विषय पर दो व्यक्तियो म पूर्ण सहमति होने पर अन्य की उपेक्षा)

तेल तमाखु सिगरट बळते मले ।

प्रयोग की वस्तुओ का प्रयोग मे आना ही उचित ।

प्रकाश पूर्ण घर म स्वागत सत्कार होना ही उचित ।

[आन दी जीव की अभिव्यक्ति]

तेल देखख तेल की धार देखख ।

परिस्थिति और घटना प्रवाह पर ध्यान दो । परिस्थितियो को समझने-बूझने का यत्न करो । घटना चक्र का अध्ययन करो ।

कुग्रह का प्रभाव दूर करो और भविष्य का अनुमान प्राप्त करने की चेष्टा करो ।

वि०—कुग्रहो का प्रभाव नष्ट करने के लिए किसी पात्र मे तेल भर कर उसमे अपने मुख का प्रतिबिम्ब देखकर दान किया जाता है । इसे छायादान' कहते हैं तथा किसी पात्र मे तेल भर कर विवाहोपरान्त वर वधू भावी जीवन म सामरस्य का अनुमान करने के लिए दीवार पर उसकी (धार) नाल लगाते है । यदि धारा अविभाजित हुई तो सुखी जीवन और दो हुई तो विषम जीवन का अनुमान किया जाता है । (इस लोकोक्ति का प्रचलन प्राय प्रथम दिये गए सदर्भ म ही होता है ।)

[जीवन के प्रति सावधानी बरतने का निर्देश]

तेली खसम करया फिर बी पानी ते गाड धाइ ।

सुख प्राप्ति के लिए अयुक्त कर्म करने पर भी सुख भोग क्या न हो । सम्पन्न स सम्बन्ध होने पर भी दीनता म क्या रहना । विशिष्ट की सगत म विशिष्ट आचरण (असाधारण व्यवहार) ।

खसम करना=उपपति करना, करावा । [अनुचित महिमा प्रदान पर]

तू डाल डाल, मैं पात पात ।

सतर्कता (चातुरी म स्पर्धा) अन्य से अपने का (चालाकी मे) कम सिद्ध न करना । [सावधानी का प्र नान]

तू तो गधो कु मार की, तने राम सू कौत ।

भारवाही जीव को राम म क्या सगत । पनिन व्यक्ति का परिष्कृत सम्य आचरण स क्या प्रयोजन ।

स्वल्प ज्ञान और व्यवहारी जीवन होन क कारण आदर्शों के प्रति उन्मुख न होना । श्रमगत व्यापार ।

कौन=क्या सम्बन्ध ।

[साधारण व्यक्ति द्वारा उच्चादर्शों की चर्चा करन पर]

तू रूठी मैं छूगी ।

जस को तमा । किसी के द्वारा उपेक्षा पान पर उदासीनता सम्बन्धों की अनिवार्यता म एक क उदासीन होने पर दूसर की प्रतिक्रिया ।

[शठे शाठ्य समाचरत]

द

दतुल खसम की, हँसी न खसी ।

मालक मुद्रा वाला की प्रसन्नता और रोष नहीं जाना जाता । (मुख मुद्रा से स्वभाव का अनिश्चय) ।

दतुला=जिसके दात बाहर को निकले हो ।

खसी=नाराजी ।

टि०—मान्यता है कि मुख मुद्राए स्वभाव की परिचायक होती हैं ।

नीद विषय आनस हरष अनन्दित हत प्रसन्न ।

मन मनीष के आचरन दृग दिखान कह दत ॥ —रहीम

परन्तु लोकोक्ति म इस विश्वास को उलट दिया गया है ।

(हमेशा दात काढे (मजाक क लिए तत्पर व्यक्ति) कब प्रसन्न हैं और कब नाराज इसका पता नहीं चलता । व्यक्ति-स्वभाव वर्णन ।)

दमडी की बुल्यि, टका सेर मुँडाइ ।

मूल वस्तु से उसक रख रखाव पर अधिक व्यय । [अपव्यय पर]

दमडी की हाडी गइ तो गइ कुत्ता की जात पिछाणी गइ ।

कुछ हानि हुई तो क्या लालची स्वभाव का परिचय तो मिला । लालची लोग किञ्चित आकर्षण पर ईमान खो बठते हैं ।

दमडी—ब्रिटिश राज्य काल में १६ आने के रुपये का ५१२ वाँ भाग।

जाम है अधेली चार पावली, दुअन्नी आठ
ताम पुनि आना सरि सोलह समात हैं।
बत्तीस अधन्ना जाम चौंसठ पैसा होत
एक सौ अठाईस अधेला गुन पात है।
जग मत छप्पन (२५६) छदाम ताम दगियत।
दमडी सो पाच सत बारह समात हैं।
कठिन समया कविराज का कुटिल दया
सलग रुपइया अइया काप दिया जात है।'

[व्यक्ति के आचरण पर टिप्पणी]

दाइ के आगे पेट छिपाव।

जानकार के सामने रहस्य रखने की इच्छा।

पेट—गर्भ। [मनोविज्ञान]

दुकान सो दाता, न घर सा भिखारी।

व्यवसाय और व्यय के स्थिति की तुलना। गृहस्थी का सारा सामान अथवा उसे क्रय करने के लिए धन दुकान में ही निरन्तर प्राप्त होता है फिर भी घर की कभी पूर्ति नहीं होती। [गृहस्थी के व्यय पर टिप्पणी]

दुजहा जोड़, कनबाल की घोडी जितणा नाच उतणा थोडी।

दूसरी विवाहिता और रोगा की घोडी एक समान तेजी और नखरा दिखाती है।

वि०—दूसरी पत्नी और पति में वयक्रम भेद होने के कारण उसका मन रखना आवश्यक होता है। [स्वभाव वर्णन पर]

दुनियाँ चली सोने फूहड चली पोने।

असमय का काय। मूर्ख व्यक्ति विश्राम का समय काम में और काम का समय विश्राम और आलस्य में व्यतीत करते हैं। [स्वभाव पर टिप्पणी]

दुनिया सुख की साथी है दुख का कोइ ना।

सुसमय सम्बन्धी भी कुसमय में दूर हो जाते हैं। दुख को बाटना सम्भव नहीं। स्वकर्म का फल आप भोगना पडता है।

सियह वक्त में कब कोई किसी का साथ देता है।
कि तारीकी में साया भी जुदा होता है इसा से ॥ —अथवा
कौन होता है बुरे वक्त की हालत का शरीक।
मरते दम आँख को देखा है कि फिर जाती है ॥

[समाज व्यवहार की आलोचना]

दूध के न पूत के।
सर्वथा अनुपयोगी। [व्यक्ति आचरण पर टिप्पणी]

दूर जमाई सोना बराबर, पास जमाई आधा।
घर जमाई गधा बराबर, जब चाहा तब लादा॥
जामातृ का दूर स्थित होने पर अधिक मान निकट होने पर कम और साथ रहने पर बिल्कुल नहीं होता। उल्टे उसे अपमान जनक कार्य करने पड़ते हैं। घर जमाई=उसके साथ समाज-सम्मत व्यवहार न होने का परिणाम।

आवत जात न जानियत, तेजहि तजि सियरान।
घरहि जमाई लौं घट्यो, खरो पूस दिनमान॥ [नीति वचन]

देख बहू का [illegible]डा, पूत भए भूतडा।
विवाहित व्यक्ति परिवर्तित हो जाता है। विवाहित व्यक्ति का पत्नी को छोड़ (जिससे प्रेम होता है) शेष सभी से विरोध हो जाता है।
To draw towards one, is to withdraw from all others
किन्तु यह सर्वथा सापेक्ष है। (मनोवैज्ञानिक—समान वयक्रम में आदर्श और रुचि ही स्नेहाधार हैं।) [व्यक्ति आचरण पर]

दे चून में पाणी।
पूरा डालने के लिए वस्तु में अत्यधिक मिश्रण। खराबी में और खराबी करना।

देनहार बलिहारी, हल देखे ना फाळी।
ईश्वर के प्रति कृतज्ञता का ज्ञापन। प्रभु साधन हीनों को भी देते हैं।
हल और फाळी=कृषि के आवश्यक उपकरण।
'बाजू टूटे बान का साहब चारा देत। [आस्तिकवाद]

देवी दिए काटे, पडा पर्चे मांगे।
स्वयं तो निर्वाह कठिनाई में हो तथा दूसरे के लिए उपलब्धि की कामना करे पर्चे=परिचय। शक्ति का प्रमाण। पडा=देवी का भक्त।
वि०—लोकोक्ति में देवी की शक्ति पर उतना सन्देह नहीं किया गया है जितना कि पंडा के आचरण पर जो सर्वथा स्वार्थ-पूर्ण और स्वार्थान्ध होने के कारण अन्य की परिस्थिति नहीं देख पाता।
[व्यक्ति आचरण पर टिप्पणी]

दो चून के बी बुरे हो।
दो व्यक्तियों की सम्मति होने पर प्रतिद्वन्द्वी की पराजय ही होती है। दो अन्य व्यक्तियों के सामने हुई बात पक्की हो जाती है। वह छिपती नहीं और उसका विज्ञापन हो जाता है।

चून के=चितन ही निवल।

ध

[समूह आचरण पर टिप्पणी]

धी जणी तो के जेठ के उप्पर ?
दायित्व लिया तो क्या गरा के उपर। अपना भार स्वय उठाने का भाव।
वि०—भारतवष म कन्या का ज म उसके प्रति होने वाले विवाहादि अनक दायित्वो के कारण अश्रेयस्कर माना जाता है। किसी का भार कोई दूसरा सिर नही धरता। लोकोक्ति म उसी तथ्य को पहचानकर अपना भार आप उठान की तत्परता का वणन है।

[जब कोई दूसरा भ्रम से समझे कि दायित्व उस पर आयेगा ऐसे म स्थिति स्पष्टीकरण]

धी दस कोसी पूत पडौसी।
दुहिता दूरे हिता। विवाहोपरा त क या पराये घर की होती है इसलिए अपरिचितो से दूर और रक्त सम्ब ध के साथ निर्वाह ही उत्तम है।
पूत पडौसी=लोकोक्ति म दूरदर्शिता की यह बात कही गई है कि विवाहोपरा त पुत्र को भी पास नही पडौस म ही रखना श्रेयस्कर है।

[सामूहिक आचरण पर]

न

नगी के हाथ के निचोडू।
जिसके पास साधन न हो वह क्या करे ? अवश स्थिति।

[विवशतापूण स्थिति का पश्चातापपूण कथन]

नइ नायन बास का निहन्ना।
अकुशल एव अनुभवहीन शिल्पी के अनुपयुक्त साधन। उत्साह के कारण अटपटे उपकरणो से विचित्रता लाने का क्रम। अयुक्त काय विधि।
निहन्ना=नाखून काटने का औजार जो आकार म चार पाच इच का होता है।

[कौतूहलप्रद कायविधि के सम्बन्ध म]

न गू म इट गेरे, न छीट लाग।
मलिनता एव अपवित्रता से बचने का यक्ति को स्वय सावधानी करनी चाहिए।

[गदगी म न फँसने का उपाय]

न निए दिखने न घूहड पिस्स।
विलम्ब म काय करना मूख जब तक स्थिति सामने न हो विश्वास नही कर पाता। कल्पना का अभाव।

वि०—ग्रामों में रात्रि के अन्तिम प्रहर से चक्की चलाने की प्रथा है। मूर्खाएँ जब तक दिन निकल नहीं आता पड़ी अलसाया करती हैं और अदूरदर्शिता का परिचय देती हैं। [श्रममय कार्य करने पर व्यंग्य]

नटनी बाँस चढ़ तो कुलकी आंख बचाके।
लोग ऐब भी करते हैं तो परिचितों से छिपकर।
बाँस चढ़ना=कला प्रदर्शन।
वि०—लोकोक्ति का भाव है कि निर्लज्जता और नग्नता का प्रदर्शन परिचितों के समक्ष नहीं किया जाना चाहिए। [मर्यादा रक्षा का भाव]

नदिद्दे गुड़ पाया गोज्झा भेर हकाया।
बड़ी चाहत में प्राप्त थोड़ी वस्तु का भी भारी विज्ञापन। न कुछ से कुछ की प्राप्ति भी प्रसन्नता का कारण। साधारण व्यक्ति के लिए छोटी चीज का भी भारी महत्त्व।
नदिद्दे=लिप्सावान। नदीदा। गोज्झा=धोती या कुर्ते को समेट कर वस्तु रखने के लिए बनायी गई थैली।
[सामान्य वस्तु की प्राप्ति पर असाधारण हर्ष]

नहीं आइ मा मगर धहराए लाग।
कार्य हुआ नहीं कि आनन्द लेने वाले एकत्र हो गए। किसी कार्य के आरम्भ होने के पूर्व ही से स्वसुख अथवा स्वलाभ का अनुमान करना।
तु०—पैठ लगी नहीं गँठकट पहले ही आ गए। (व्रज प्रदेश)।
[व्यक्ति आचरण पर]

न नौ मन तेल होगा न राधा नाचेगी।
न साधन होंगे न कार्य हो पायगा। साधन की कमी बताकर कार्य से बचना। कार्य के सापेक्ष साधनों का अभाव। विपुलता के अभाव में कार्य सम्पन्न न होना। [किसी कार्य के लिए अतिशय सामग्री की माँग पर]

नवा मुल्ला, बोरिया को तेहमद।
कट्टर धर्मप्राण व्यक्ति का अनुचित प्रदर्शन। [आडम्बर करने पर]

न्यारा पूत पड़ौस बराबर।
जुदा रहने वाला पुत्र परिचितों के समान। अलग रहने वाले बेटे और पड़ौसी में कोई अन्तर नहीं। [असंसर्ग के कारण स्नेह हानि पर]

नाइयों की बरात में सब ठाकुर ही ठाकुर।
सेवक कोई नहीं सभी सेव्य। आत्म प्रतिष्ठा की भ्रामक अनुभूति। हीनों के समाज में सभी समादृत। [समूह की गौरवानुभूति

नाइ नाइ थाल कितने, जिजमान सब सामने आए जा हैं।

परिणाम ये शीघ्र प्रकट होने का मतलब। सामर्थ्य का नान।

[सामर्थ्य पर व्यंग्य]

नाज है, तो राज है।

अन्न है तो सभी कुछ है।

वि०—अन्न ही ससार की सभी वस्तुओं की विनिमय दर निश्चित करता है।

मनुष्य अन्नमय कोप है अत शरीर पोषण के लिए उसे अन्न प्राप्त है तो क्या कमी। आवश्यकताओं म भोजन की प्राथमिकता।

[सुख सम्पन्नता की कसौटी]

ना जाने मुर्दे की घटी कब सच बोल जा।

मरणासन्न व्यक्ति न जाने किस क्षण यथार्थ कह द। (उसके मुँह की भाखा फल जाय।)

वि०—मरणासन्न व्यक्ति तटस्थ होता ह अत यथार्थ कथन म उसे सकोच नहीं होता। निर्मल दृष्टि होने के कारण यह भी सम्भव है कि उसकी वाणी सफल सिद्ध हो जाए

न जाने किस क्षण मतक (शव) सत्य घटना का सकेत कर द।

घटी=कण्ठपिटक। [सन्यासात्मक स्थिति म]

नानी खसम कर धवती दण्ड भर।

कोई करे कोई भोग। कुत्सयाति का प्रभाव पारिवारिकों पर।

[कुकर्म का दूरागत प्रभाव]

नानी की पूछ बुढाने का रास्ता अथवा डडा सी पूछ बुढाने का रास्ता।

बुढाने का रास्ता नानी (किसी वय प्राप्त वृद्ध) अथवा दण्डी स्वामी (जो एक स्थान पर नहीं रहते और बराबर घूमते हैं) से ज्ञात करो।

मरियल बल को जिसकी दूमली पूछ मात्र पर ही दृष्टि जाती है उस बुढाना ग्राम की बडी पैठ म ले जाने का क्या लाभ? अर्थात विक्री के अयोग्य वस्तु को बाजार म क्या रखना।

वि०—लोकोक्ति के प्रथम पाठ म की का अर्थ म है।

पूछ=ज्ञात करो। [स्थानीय शब्द प्रयोग]

पूछ=पुच्छ।

कहते हैं कि बुढाने ग्राम को जाने वाले मार्ग पर किसी सन्यासी की कुटी थी। किसी अपरिचित ने बुढाना का रास्ता किसी के द्वारा पूछे जाने पर सकेत किया कि वह उस दण्डी स्वामी से रास्ता पूछ ले।

कहते हैं कोई व्यक्ति अपने मरियल बल को बुढाना की पठ म बचने के लिए ले जाना चाहता था जहा बहुत उत्तम कोटि के पशु क्रय विक्रय के लिए लाये जाते थे। उसके रास्ता पूछन पर बैल को देख कर व्यग्य किया।

[व्यग्योक्ति]

नारे स सारा घिसणा।

किसी भांति जीवन निवाह करना। कठिन परिस्थितिया म साथ न छोडना।

[परिस्थिति सकेत]

निखट्टू आम लडते, कमाऊ आमे डरत।

अनुपयोगी झगडी तथा अर्जन करन वाले सकाजी व सहनशील होते हैं। (बेकारी म मानसिक विकृति और व्यवसाय म व्यक्ति का सन्तुलन बना रहता है।)

[व्यक्ति मनोविज्ञान]

नेकी सौ कोस, बदी सौ कोस।

लोकापवाद जितना शीघ्र फलता है, उतनी कीर्ति नही। अपवाद का विस्तार-क्षेत्र कीर्ति से कहीं अधिक होता है।

वि०— मैं जिधर जाता हूँ उठती है उँगलिया मुझ पर
पर-सेमा है मेरी या मरी रुसवायी है।

[समाज प्रतिक्रिया]

नौहों तें मांस छुटाणा।

प्रकृत-सम्बन्धो को अलग करना जिसके कारण उभय पक्ष की स्थिति कठिन हो जाए।

[विभेदकारी आचरण पर]

प

पचा का कहणा सिर माथे, पतनाळा वहइ गिरेगा।

दूसरा के मत्य की अवज्ञा अपनी हठ रखना।

सिर माथे=शिरोधाय। स्वीकार।

[हठी स्वभाव का सकेत]

पराया घर, थूकणे का डर। (अपना घर हग भर।)

अपरिचित स्थान में वाय-स्वातन्त्र्य की बाधा। दूसरे के स्थान पर स्वच्छन्दता नहीं बरती जा सकती (इसके विरोध म दूसरी लोकोक्ति अपने स्थान म मनमाना आचरण करन की स्वतन्त्रता देती है।)

वि०—महाराज युधिष्ठिर न धमराज के प्रश्ना का उत्तर देत हुए कहा था जिसको एक समय आधे पट भोजन मिलता है किन्तु जो किसी की भूमि म नही रहता वही सुखी है।

[मर्यादाओं का सकेत]

पाँच सात की लाकड़ी एक जणे का बोझ।
सहयोग सहानुभूति म निबल निधन की पूर्ति हो जाता है। तनिक-तनिक
दान से किसी का कल्याण सम्भव। [समूह आचरण]

पीछ खाये पछतावे।
ब्राह्मण भोजन पान पर (यजमान की श्रद्धा अथवा उदार बड़प्पन पर)
विश्वास करते हैं।
जिसको सुख लाभ होना है वही सन्तोषानुभूति करता है।

पाछली घडिया खाय, पाछली अक्कल आव। [स्थूल मनोवृत्ति]
रसोई म अन्तिम तयार हुई रोटी खान स बुद्धि अन्त म आती है।
खाद्यान्न और विवेक का सम्बन्ध। (जसा खाए अन्न वसा बने मन)

पादे सर तो हगण क्यूँ जा। [आचार नियन्त्रण पर]
सुगमता स काय हो तो परिश्रम की क्या आवश्यकता? आलसी स्वभाव।

पानी ते पहळ पुल बाँधणा। [व्यक्ति स्वभाव पर टिप्पणी]
अनुमानित सकट के निवारण का प्रबन्ध। व्यय काय म दत्त चित्त होना।
कारण के पूर्व काय का अनुमान।
[सशयात्मक अथवा कल्पनाशील आचरण के सम्बन्ध म]

पिद्दी न पिद्दी का सेरुआ।
नगण्य महत्त्वहीन। पिद्दी ही कितनी फिर उसका शोरुआ क्या।
पिद्दी=एक छोटी भूरी चितली चिडिया जिसको मिनी अथवा मुनिया भी
कहते है (लाल मुनिया का जोडा)
सेरुआ=(फा०) शोरुआ। [तुलना करते नगण्यता का सकेत]

पिरथम सुख नरोगी काया दूजा सुख जाके घर माया।
तीजा सुख सुत आग्याकारी, चौथा सुख पतबरता नारी॥
स्वस्थ शरीर सम्पन्न स्थिति स्नेही भार्या एव आज्ञानुवर्ती सन्तान—ये
चारा ही ससार म सुखानुभूति के आधार है।
उक्त चारा के क्रम से यह भी प्रतीत होता है कि लोकोक्तिकार ने उन चारो
सुखा की पूर्वापर क्रम म गणना कराकर उनका सापेक्षित महत्त्व भी कहा है।
वि०—निवृत्ति परक दाशनिक ससार म सुख की कल्पना ही नही करते
किन्तु प्रवृत्ति परक व्यक्ति ऐषणाओं की पूर्ति म ही सुख मानते है।
[ससार सुख की कल्पना]

पूत कपूत हो जा मा कुमा न होती।
पुत्र माता मे उदासीन हो सकता है माता पुत्र म कदापि नहीं। मा की ममता (मनोवैज्ञानिक)। [माता और पुत्र के स्वभाव पर टिप्पणी]

पूत की मूत पिराग का पाणी।
पुत्र का मूत्र भी सगम के जल की भांति पवित्र है। पावन एव अपावन वस्तु की तुलना।
पिराग—प्रयाग। सगम स्थल (गगा+यमुना)
वि०—हिन्दुओ म पुत्र का बडा महत्त्व है। क्योकि विश्वास किया जाता है कि दाह सस्कार के अनन्तर की जाने वाली कपाल क्रिया पुत्र के द्वारा सम्पन्न होने पर जीव की मुक्ति होती है। [पुत्र के प्रति अतिशय रुचि]

पूरब जाओ पच्छम, वोइ करम क लच्छन।
कुछ भी करो परिणाम एक ही है। (भाग्यवाद)
'भाग बिना फिरै भाग-सी खाय।
[पश्चात्ताप और व्यग्य प्रदान पर]

पूरी कचोडी अर मिस्ठान उनकू न्हाए ना भगमान्।
सुस्वादु भोजन की प्राप्ति म विलम्ब की आवश्यकता नहीं।
वि—स्नान आदि शुद्धि के अनन्तर भोजन म रुचि और स्वाद बढता है। किन्तु भोजन यदि स्वादिष्ट है तो एम किसी आयास की आवश्यकता नही।
[आलसी मनोवृत्ति। भोजनभट्ट]

पूरी न पापडी, पटाक बहू आपडी।
पूर्वाभास न होने पर भी सहसा कार्य-पूर्ति।
वि०—हिन्दुओ के यहा विवाह पूर्व अनेक अनुष्ठान और सस्कार किये जाते हैं जिनमे मुख्य काय का सकेत होता है। लोकोक्ति म इसके विपरीत आचरण का कथन है। जो वर्तमान Love marriage अथवा Civil marriage के के मेल मे है। [बिना किसी व्यय और तयारी के वाछित काय]

पूस घर की घूस।
पौषमास का दिन अत्यन्त छोटा और घर म (दारुण शीत होने के कारण) बैठे रहने के लिए होता है। समय की न्यूनता के कारण सुविधापूवक किसी काम के लिए बाहर निकलना सम्भव नही। दिन निकला कि साझ होने लगी। [ऋतु प्रसग म]

पैंठ लगी ना गठकटे पहले आ गए।
क्रय विक्रय आरम्भ भी नही हुआ कि धोखे घडी वाले पहले आ गए। काम हुआ भी नहीं कि लाभ लेन वाले आ उपस्थित हुए।

गठाने=नर पान्न वाल ।

पेट पडा गुन दे । [व्यक्ति आचरण पर]

भोजन स (बन) लाभ । गभ म आयी गन्तान उपयोगी ही सिद्ध होगी । (गमूह नाति)

पेट खाय, आँख लजाय । [निन्दा]

पापक क सम । सकोच स्वाभाविक । खान क पश्चात पराई भपन लगती है । आभार म दबना ।

फ

[सामान्य आचरण]

फिर गली गली जेब म नई सल की डली ।

विज्ञापन अधिक साथ कुछ नहा ।

सल=तेल निकालन के बाद बुचली हुई सरसों का लौंदा ।

फूहड चाल्ल नौ घर हाल्ल । [व्यक्ति आचरण पर]

मूर्खों के कार्यों का अप्रत्याशित प्रभाव । मूर्खों के काय स दूसरों को भी हानि की सम्भावना ।

हाल्ल=कम्पित हो (भूकम्प)

फूहड ने राधी दाल आधी मासी आध बाल । [व्यक्ति आचरण पर]

मूख द्वारा किया गया काय असफल । मूखता घिनौन पन का जम देती है ।

वि०—बाल और मक्खी उदर म नही समाते । बाल तो गल के नीचे उतरता ही नही और मक्खी वहा पहुँचकर अपने साथ पहल का भी खाया पीया लेकर लौटती है ।

फूहडिया के तीन काम हग बटोर फकण जा । [व्यक्ति आचरण पर]

मूख स्त्रियाँ काय को व्यथ विस्तार देती ह । काम बिगडने पर उसके ठीक करने का यत्न ।

ब

[व्यक्ति आचरण पर]

बदर के जाणे अदरख का सवाद ।

मूख को वस्तु का महत्त्व क्या मालूम । चचल मति गुणा स अनवगत रहती है । अनुभवहीन का वस्तु का क्या ज्ञान । बढ़िया चीज का मूल्य गवार क्या जान ।

वि०—चरपरा (तिक्त) होने के कारण बंदर अदरक नहीं खाता । उसके गुणों से वह अनभिज्ञ है इसलिए फेंक देता है ।

[किसी वस्तु का किसी के द्वारा उचित मूल्य न लगाए जाने पर]

बछड़ी के दांत पिछाणना ।

पुरुष परीक्षा । शालिहोत्र—दांत देखकर पशु के आयुबल का ज्ञान करना । किसी की आंतरिक बातें जानना सामर्थ्य नहीं ।

बछडी > बउडी = अल्पायु घोडी ।

बछिया छोटी, हत्या बडी ।

कम लाभ का काम । प्रयास अधिक प्राप्ति कम । हत्या महान पाप है फिर छोटी बछिया का हनन क्या करें ।—(किसी बड़े का ही क्यों न मारा जाय ।)

वि०—गोवध पाप है ।

[छोटे कम लाभ वाले काम पर अधिक परिश्रम लगाते देखकर]

बड़े घर जाणे, ढळे ढो मर जाणे ।

श्रीमानों के यहाँ साधारण व्यक्ति अपमानित (बेगारी) होता है । पैसे वालों की मनोवृत्ति कम दाम में अधिक काम । बड़ों से सेवक अलाभकर ।

[*नीति कथन*]

बडो पाद सुलतान छोटो डुमडुमिया ।

भौं-करिया बदनाम, मारे फुसकरिया ।

अपान वायु निस्सरण के आधार पर भेद ।

वि०—स्वर तक निस्सृत वाली वायु श्रेष्ठ व तनिक-तनिक निस्सृत वायु दुर्गन्धी होती है । बड़े आदमी पादें तो या सहज कहा जाता है और छोटों का पाद चर्चा का विषय बन जाता है । बडा (उच्च नाद कारक) पाद तो कुख्यात भले हो परन्तु दुर्गन्धपूर्ण फुसफुसाहट वाला होता है ।

बणिया जिसका यार उसे दुस्मन क्या दरकार ।

व्यापारी से मित्री हो तो शत्रु की खोज क्या ? (ये दोनों ही निजी लाभ के समक्ष मित्र किसी बात का ध्यान नहीं करते ।) [वर्ग-स्वभाव]

बणिए का बावला, खोव न छदाम, कमाव पावला ।

व्यापारी वर्ग की संतान भी धन कमाने में चतुर होती है (तनिक हानि न उठाकर वह बड़ा लाभ ही कमाने की युक्ति जानते हैं ।)

पावला = रुपए का चतुर्थांश । [वर्ग-स्वभाव]

बणिया भगत, न वेश्या सती ।

व्यापारी मतवादी और किसी से प्रेम करने वाले नहीं । जो दूसरों के धन से धनी होने की कामना करें उनके लिए व्यवहार का क्या औचित्य ।

व्यापारी और वेश्या दोनों चचन ।
वि०—सतीत्व भी भक्ति है जो एक पर व्यक्ति से बधकर न रहने वाली वेश्या के लिए सभव नहीं ।
नेहरी लीपर द्वारा उभयनिष्ठ की तुलना ।
[व्यक्ति-स्वभाव । मनोवैज्ञानिक]

बहू का सिंगार, ससुर का आधार ।
आभूषण आपत्ति के समय सहायक । सचित धन रूप । कला और उपयोगिता का समन्वय सिंगार आभूषण (यथार्थवादी लौकिक दृष्टि) । दूरदर्शिता । आभूषण बनवाने का समर्थन ।
[आभूषणों पर अनुकूल टिप्पणी]

बहू तो सुघरी, प काणी स ।
बहू सुन्दर तो है पर जरा काणी है—(श्रेष्ठता व सुन्दरता में भी बुराई खोज लेने की प्रवृत्ति ।) यथार्थ वर्णन ।
[ईर्ष्यालु भाव]

ब्या न हुआ तो क्या, बरात तो करीं एँ ।
स्वानुभव नहीं तो परानुभव से तो (तथ्य) अवगत हैं । लोकानुभव से ज्ञान । बरात=वर यात्रा (बरात में जाने वाले व्यक्ति विवाह के साक्षी रूप में होने के कारण उसके सबध में सभी कुछ तो जानते हैं ।)
[परानुभूति ज्ञान की अभिव्यक्ति]

बामण का पूत पढ़ा भला, अक मरा भला ।
ब्राह्मण सतान या तो शिक्षित या नष्ट हो जाय । (अन्यथा उसके जीवन की उपयोगिता एवं महत्त्व कुछ नहीं ।)
वि०—ब्राह्मण का कार्य शिक्षा पाना एवं शिक्षा देना है । यदि प्रथम में कोई सफल नहीं तो दूसरे में क्या होगा अतः जीवन व्यर्थ ।
अक=या कि ।   [वर्ण धर्म पर टिप्पणी ।—की अनिवार्यता]

बातणिया घर उजाडिया हारे प जळ गई दाळ ।
बातून (स्त्री) घर की बर्बादी करती है । (बातों में) उसे चिन्ता नहीं रहती कि हारे पर पकने के लिए रक्खी दाल की क्या दशा है । बतरस में कार्य हानि ।
हारा=दूध औटाने अथवा कोई वस्तु पकाने के लिए जमीन में गड्ढा खोदकर बनाया गया चूल्हा ।   [यक्ति आचरण पर]

बानौड़े की बान न जाय, कुत्ता मूत्त टाग उठाय ।
आदतें नही बदला करती । कुत्ते टाग उठाकर ही मूतते है । (स्वभाव ऊपर प्रकृति ।)
बान=आदत । बानौड़े=आदत वाले । [अपरिवर्त्तनीय स्वभाव पर]

बाप घर बेट्टी, गूदड लपेटी ।
माइके म लडकी की सादा वेशभूषा ही उपयुक्त । कैसी ही स्थिति पिता की क्या न हो पुत्री का शृङ्गार पीहर म नही सिलता । पितृगृह म शृङ्गार वर्जित ।
गूदड=फट पुराने वस्त्र । [नीति व्यवहार]

बाप न मारी पोदणी, बेटा तीरदाज ।
बाप न छोटी चिडिया कभी मारकर न दिखाई बेटा लक्ष्यवेधी बनता फिरता है । सस्कार न हो तो परिवार म कौशल कैसे ?
जिन्होने कभी कोई उपयोगी काम न किया उनकी सतान मिथ्या गौरव प्रकट करती है ।
जन्म एव स्वभाव से कार्य के अनुपयुक्त । 'यस्मिन कुले तुव उत्पन्न तत्र सिंह न दृश्यते । [व्यक्ति स्वभाव पर टिप्पणी]

बाप न जितणी बक्सीस दी, बेट्टे न उतणी भीख माग ली ।
पुरखाओ ने जितना उपकार किया उतना ही उनकी सतति ने लोगो को ठग लिया । जितने उदार महान पूवज थ सतान उसके विपरीत स्वभाव की उत्पन्न हुई ।
दो पीढियो की मनोवृत्ति का अतर । [व्यक्ति स्वभाव पर व्यग्य]

बाप्पू जब लुट ग्यो, तो भौत मगो ।
जोखिम उठाने के बाद अक्ल । सब कुछ खो देने के पश्चात सावधानता । अनुभव म ज्ञान तथा कम प्रेरणा—(निरथक)—पिछली अक्ल ।
[ठोकर खाकर बुद्धि उदय व्यथ]

बारह बस मे कूडी के दिए फिर ।
एक युग म आमूल चूल परिवतन हो जाता है । सकट की लम्बी अवधि पर सुख का उदय ।
काल प्रवत्तन के परिणाम स्वरूप हेय व्यक्ति स्थान को भी महत्त्व प्राप्त होता है ।
कूडी=गाव म कूडा करकट व मैला डालने का स्थान—गन्दी जगह ।
[परिवत्तन का प्रभाव]

बारह बरस दिल्ली रह्या पै भाड भोक्या ।

सभ्य सम्पन्न स्थान में युग व्यतीत करने पर क्या पाया ? यथापूर्व रहे निरर्थक समय बिताया । कुछ कमाई नहीं की । शिक्षा न ली ।

दिल्ली=भारतीय दृष्टि से देवस्थान—

देवी मदद ...गार ...देना दिल्ली से ...। —विवाह-गीत सम्पन्न व्यापारिक केन्द्र जहाँ हर किसी को मिल जाता है । सभ्य नगर शिष्टाचारपूर्ण ।

भाड भोकना=व्यर्थ (हेय) काम करना ।

[किसी पर स्थान एव सगत प्रभाव से परिवर्तन न देखकर]

बिटोड़े के मूते गोस्से ई गोस्से लिकड़ें ।

भद्दे व्यक्तियों के मुह से बुरी बातें ही निकलती हैं । मन की कालिमा और दुर्गन्ध वचनों में प्रकट होती है । [अनुचित आचरण]

बिना बुलाई आइए ना अपणे घरूँ खाइए ना ।

अनास्था का निमत्रण । भोज निमत्रण देकर भी न खिलाने की इच्छा—(ल०) किसी काम के लिये सहायता वचन देकर उदासीनता—उपेक्षा एव ऊपरी स्नेह ।

अतिशय चातुरी । आतिथ्य के बदले और दुखी करने का यत्न ।

बुलावा=निमत्रण । (बुलाइ=निमत्रण)

[चातुरी की आलोचना । (व्यग्य)]

बिल्ली दिक्ख न कुत्ता भु क्ख ।

झझट मूल दृष्टि न पड़े तो झझट नहीं हो । (काय कारण परम्परा)

चतुराई स्वार्थी के साथ की जाय तो झगड़े का कारण होती है ।

[सघर्ष का अवसर न दें । नीति]

बीत गइ, सो बात गइ ।

अतीत का क्या चर्चा । जो स्थिति व्यतीत नहीं रहा वह सवदा के लिए अदृश्य हुआ ।

अतीत गौरव—(सकटो की स्मृति से क्या लाभ

गुजर गया है जो अन्देशा न रख तू नाहक अब इसकी हसरत

समझ इसी को समा गनीमत जो वक्त पेशे नजर है तेरे ।

[अतीत पश्चात्ताप]

बुज्झा महाने का रस्ता कहे गोरे के पच्चीस ।

प्रश्न कुछ उत्तर कुछ । असगत बात ।

गोरे=धौला, (श्वेत) रंग का बैल ।

वि०—महादो-मेरठ जि० का एक ग्राम—कोई व्यक्ति दूसर से जो अपन बैल बचने पठ लिए जा रहा था महादो का रास्ता पूछन लगा। वह ऊचा सुनता था, और यह समझ कर कि बैल का मूल्य पूछा जा रहा है बोला—गोर के पच्चीस। [भावविभारना बहरापन]

बुढिया मरी, खटोल्ली मिली।
किसी की मृत्यु (अनुपस्थिति) पर अधिकार प्राप्ति। किसी के स्थान परि वतन होन पर सम्पत्ति अधिकार।
खटोल्नी=छोटी खाट। [किसी के स्थान छोडन पर प्राप्त सुख]

बुढ्ढी घोडी, लाल लगाम।
प्रौढा का शृगार प्रसाधन। वडी आयु म बनाव चुनाव की असगत इच्छा। विगत यौवना का साहस।
सुन्दरता बनाए रखन (का प्रदर्शन करन) का यत्न।
वि०—गाढ रग सजीव अपनी ओर का आकर्षित करता और अपेक्षया निकट जान पडता है। [असमय सज्जा]

बुए कमळिया गाऊ गाता, ना जाए तेरी ईता-सीता।
आनन्द पूर्वक कर्मलीन रहे तो दुख सुख कैसा। कर्मलीन व्यक्ति को दुख-सुख की अनुभूति नही होती वह कर्मयोगी कर्मानन्द म ही रहता है।
वि०—कम्बल बुनता और (श्रम) गीत गाता है मुझको दैवी आपत्तिया अथवा वरदानो का कुछ अनुभव नही—यथा महात्मा कबीर।
गीता=श्रीमद् भगवद्गीता श्रम गीत।
ईता—सीता=दैवी-सकट सुख शीतलता।
[श्रम ही पूजा—(आनन्दकर) है]

बूढा कुत्ता बाच सौन लगी है तो मारगा कौन।
आलस्य की चरमसीमा लापरवाही।
सौन=शकुन।
(लगी है इसके पश्चात् किवाड शब्द प्रच्छन्न है।)
वि०—कहत हैं कि किसी गृहस्थ म कुत्ते घर के भीतर पहुँच कर खान पीन की चीजें बहुत बिगाडा करते थ तो गृहस्वामी न उनको रोकन क लिए द्वार पर किवाड चढवा दिए। इस पर कुत्ता की सभा हुई और वह सोच करन लगे कि अब पट वहाँ स भरेगा। इस पर एक वृद्ध (अनुभवी) कुत्त न कहा मैं शकुन स बतला सकता हूँ कि यदि किवाड चढ भी गए है तो उनको बन्द करन वाला वहाँ कौन है—सभी आलसी है—अत हमारी स्थिति पूर्ववत्

है। यह लोकोक्ति बुलन्दशहर जिला पानी मोरगाबाद के निकट प्रचलित है।
[भागी व्यक्तियों पर व्यंग्य]

बूढ़ा मर या ज्वान, तन्ने हत्या सू काम।
किसी की न्यून क्षति हो अथवा अधिक तुमको तो अपनी रुचि रखनी ही है।
अपने लाभ के लिए अन्य की हानि की चिन्ता न करना।
किसी पर कुछ बीते तुमको अपने स्वभाव में परिवर्तन नहीं करना।
हत्या=वध। प्राण हनन। [मा मरत स्वार्थी प्रवृत्ति]

बूढ़ी भेड़ भेड़िया ने भकावै।
सामर्थ्यहीन का स्वार्थ सिद्धि हेतु अन्य को भुलावे में डालना। मतिहीन का चपल सबल से छल।
वि०—भेड़ मूर्ख पशु है तथा आयु अधिक होने पर सभी का मस्तिष्क कम काम करता है। ऐसी दशा में सदा समूह के पीछे चलने वाली विस्तृत जंगल के अनुभव से हीन भेड़ भला जंगल जंगल घूमने वाले बलिष्ट भेड़िए को क्या बहका सकती है। अतः लोकोक्ति ऐसे व्यक्ति की ओर इंगित करती है जो अनुभवहीन अशक्त होकर भी अन्य सशक्त को अपने लाभ के कारण भुलावे में डालने का यत्न करता है।
भकावै<बहकावै=भुलावा दे। [व्यक्ति आचरण]

बूढ़ मूँ मुहासे देखो लोग तमासे।
कौतूहलकारी असामयिक परिस्थिति। अशोभन। प्रौढ़ायु में तरुणाई का मिथ्यानुभव।
वि०—मुहासे तरुणता का चिह्न है यदि कोई उनका अपने मुँह पर प्रौढ़ायु में होना कहे तो आश्चर्य का विषय है। लोकोक्ति का प्रयोग न सजने वाले शृंगार प्रसाधन एवं परिधान ग्रहण अथवा कोई कृत्य देखे जाने पर किया जाता है। [अनुचित आचरण पर व्यंग्य]

बूरी (भूरी) बिणा बाढ कूँ कूण चर?
जिससे मन की लगन अथवा लाभ की आशा हो उसको छोड़ हानि करने का क्रम का साहस है। इधर उधर मुँह मारने का जिसका स्वभाव है उसके बिना और कौन बाड़ को (नव क्षुप को हानि करेगा)। जिसका नाम निकल गया वही पकड़ा गया।
बूरी<भूरी=भूरे रंग की (भैंस)
वि०—अल्पप्राण को महाप्राण (ब>भ) बोलने की खड़ी बोली की प्रकृति है। [व्यक्ति आचरण पर व्यंग्य]

बेई छिनळे, बेई डोले के सग ।
चरित्रहीन द्वारा यौवन रक्षा की कामना व्यय । अविश्वसनीय के सरक्षण मे अाकपव वस्तु ।
छिनळे=चरित्रहीन व्यक्ति ।
वि०—छिना उम स्त्री को कहते हैं जो अपने पति से विलग रह कर कुल्टाओ का व्यवहार करे तथा आप धर्म का पालन न करती हो । उसी से पु० छिनले । [हानि की सभावनाओ से ग्रस्त स्थिति पर टिप्पणी]

बेहा की गाड मे रूख उवजा, आओ लोगो या छा बठो ।
निलज्ज व्यक्ति अपनी बुराई का प्रदशन करके गौरवान्वित होते हैं। निलज्जतापूवक अपनी बुराई को दूसरो की भलाई बतलाकर दिखाने का यत्न ।
बेहा=बेहया निलज्ज ।
उवजा=उपजा । (प का व म परिवतन) अकुरित हुआ ।
वि०—लोकोक्ति का प्रचलन बुलदशहर जिले म व्रजसीमा पर अधिक है ।
[लज्जाहीन आचरण के सबध म]

भ

भर भर कूडे ढाएगी, भाद्दों कू ना जाएगी ।
वस्तु रहते भविष्य की चिंता न कर उसका अपव्यय । अदूरदर्शिता । आगे आने वाले कठिन समय का विचार न कर भडार रीतना ।
भाद्दो=घोर वर्षा काल । (अति वर्षा म कुछ उत्पन्न नही होता ।)

भला एक बळ की दाय चली है ।
दो मिलकर ही कोई काय सुचारु रूप म कर सकते हैं । (गहस्थ का भार स्त्री पुरुष दोनो मिलकर वहन करते है ।) सम सहयोगी की सफलता के लिए अपेक्षा होती है ।
दाय=अन्न और भूसा अलग करने के लिए बैलो की सुमिल जोडी को चक्राकार रास के ऊपर घुमाना । [दो के अभाव मे काय क्षति होने पर]

भला हुआ मेरी माला टूटी, राम भजन से छूटे ।
साधन नष्ट होने पर काय मुक्ति । काय के प्रति अवनापूण उदासीनता । काय की एक तानता से अरुचि होने पर साधन नष्ट होने का सतोष ।
माला=सुमरनी । [व्यक्ति मनोविज्ञान]

माई मर्‌या सुगिया हाथ लगी ।
प्रिय निधन हुआ तो क्या स्त्री अथवा ओढ़ने की चादर तो मिली । अन्य की क्षति से अपना स्वार्थ सिद्ध ।
सुगिया=सुगइया, ओढ़ने की चादर ।
[संकुचित आत्मरत वृत्ति पर टिप्पणी]

भाग भाग बद्री आया ।
दुश्चरित्र से सावधान ।
वि०—यह लोकोक्ति केवल खुरजा, जिला-बुलन्दशहर में प्रचलित है। बद्री नाम का इस नगर का हलवाई, दुष्कृत्य के हेतु लड़कों को फंसाया करता था । एक बार इसी संबंध में उस पर अभियोग चला, और सजा हुई । तभी से यह कहावत चली है । [चरित्रहीनों को चिढाने के लिए]

भादों के न बरसे, मा के न परसे, कहीं पेट भरया है ।
क्षुधापूर्ति का प्रकृत प्रबन्ध न हो तो क्या तृप्ति सम्भव है । थोड़े थोड़े से तृप्ति सम्भव नहीं ।
वि०—भाद्रपद में घनघोर वर्षा होती है, जिससे पृथ्वी की प्यास बुझ जाती है। ऐसे ही, माँ के स्तनपान से शिशु तृप्त होता है अन्यथा नहीं । कहते हैं मा के स्तनों में एक घड़ा—बालक की आवश्यकता से कहीं अधिक दूध उतरता है ।) भारतवर्ष में कृषक आज भी प्राकृतिक साधनों पर ही अधिकांश निर्भर करता है । [सादृश्यमूलक]

भुक्खा बेच्चै जोरु, अघाया कहै उधारी दे ।
दीन निर्धन व्यक्ति का सम्पन्नों द्वारा शोषण । आवश्यकता के समय वस्तु का उचित मूल्य प्राप्त होने में कठिनाई । सबल की शोषणकारी मनोवृत्ति । (वस्तु को अमूल्य प्राप्त करने की इच्छा ।)
अघाया=तृप्त सम्पन्न । [ले—दे का अन्तर]

भुस मे आग लगा जमाळो दूर खड़ी ।
दूसरों में लड़ाई कराकर स्वयं अलग रहना ।
औरों को उत्तेजित कर, आप आनन्द लेना ।
जमाळो=आनन्द लेने वाली स्त्री ।
(जमाल (फा०)=तेज) [व्यक्ति-आचरण]

भूख में किवाड़ पापड़ ।
क्षुधित व्यक्ति को कैसा भी कड़ा भोजन दो, वही सुस्वादु और कुरकुरा जान पड़ता है ।

आवश्यकता वस्तु को महत्त्व देती हैं । अरुचिकर भी प्रिय ।
किवाड > कवाड=सख्त सूखा काठ ।
पापड=एक खाद्य वस्तु जिसको उद की दाल की पिष्ठी सज्जी, और काली मिच जीरे आदि के योग से तयार किया जाता है । यह सुस्वादु, रुचिकारक एव पाचक होता है । [महत्त्व एव आवश्यकता सानुपातिक]

भूखा उठाव वो किसी कू भूखा सुवाता ना ।
भगवान् सब को भर पेट भोजन की व्यवस्था करते हैं । ससार मे हर किसी को आवश्यकता-पूर्ति के साधन मिलते हैं ।
वो=परोक्ष सत्ता, ईश्वर । [श्रद्धालुवृत्ति]

भूखे न भूखे की गांड मारी, दोर्णों कु गत आग्या ।
निबल का निबल द्वारा शोषण । (दोनो के लिए अनिष्ट कारक) ।
किसी दीन निधन द्वारा अपसमान का धनापहरण ।
वह काय जिसमे किसी का लाभ न हो । [शोषक प्रवृत्ति पर व्यग्य]

भूरी तो मरग्यी घांटळ कू बी ले गई ।
भस के साथ कटरा भी मरा, पूण विनाश नि नेपता ।
अपने नाश के साथ अन्य का भी ।
'हम तो डूबेंगे मगर, यार को ले डूबेंगे ।—
घाटळ=कटरा । [अपने साथ दूसरे को भी नष्ट करने पर]

भेड़ की लात, गोडडों तक ।
मूर्खों की सीमित सामथ्य मूख किसी की अधिक हानि भी नही कर सकते ।
गोडडो=घुटना । [मूख की पहुच,—का कम प्रभाव]

भेड़िया का मूं खाय तो लोह रा, न खाय तो लोहरा ।
बदनाम व्यक्ति कुकम करे, या न करे, दोषारोपण उसी पर ।
मुख-मुद्रा से कम का अनुमान ।
लोहरा=लालिमामय । आरक्त । [बदनामी सदा दुखदाई]

भस बाम्मे, बळद के पुतड फट ।
कष्ट किसी को दुख किसी को । काय-कारण विच्छेद । व्यथ कष्ट की अनुभूति ।
बळद=बलीवद (स०) बैल ।
पुतड फट=वाक्पद्धति आतकित भयभीत होना । [असगति]

भस का बळ के सगे ।
दोनों का सम्बन्ध क्या । विजातीय ।

(एक–एक के बल और विचार का दूसरे पर कोई प्रभाव न होने के कारण स्वार्थी [illegible] रहना।) [illegible]

भैंसों की लड़ाई में झुण्डों का सत्यानास।

दो बलिष्ठ व्यक्तियों के झगड़े में मध्यस्थों की हानि। सर्वनाश होना।

झुण्ड=पौध की बड़ी झाड़ी।

सत्यानास=सर्वनाश (सं०) हानि। [illegible]

भूखा को बाल कुत्ता को बराम।

असम्भावित कार्य। असम्भाव्य एक से दूसरे की सिद्धि। (कुत्ता समूह बना कर चल पड़े—एक पर ही पड़ें तो कदाचित् बाल भी नहीं निकल पाए।)

बराम – बरसाना [illegible]।

टि०— 'बाघ न कुत्ता, हाथी। ये नहि जान के साथी।

[तथ्य—असम्भावित]

म

मछली के जाये किन तराए।

संस्कार प्रभाव। कुल परम्परा का असर। व्यवसाय में परिवारों की सहज निपुणता। परिवर्तनशील प्रकृति।

मछली के जाये=भील। [व्यवसाय सम्बन्धी]

मटका मांगण चली, गांड पीछे कमोरी।

याचना में लज्जा कैसी। दीनता में प्रार्थना का संकोच।

अप्रतिष्ठा का भय।

कमोरी—छोटी हंडिया। (कुम्भ+ओरा प्रत्य० हिं०=कमोरा, स्त्री० कमोरी)। [व्यक्ति आचरण पर व्यंग्य]

'मन भोगिया करम दलिद्दरी।'

सुखेच्छा होने पर अनुकूल कर्म का अभाव। भाग्य-हीनता। सुख की कामना के अनुरूप कर्म में आलस्य।

भोगिया=सुखेच्छा करने वाला।

मति अति नीच ऊँच रुचि आछी।

चहिय अमिय जग जुरइ न छाछी॥ [असंगत भाव]

मरणे कू जी करे, कफण का टोटा।

इच्छाएं महान् और साधना की न्यूनता। असामर्थ्य में भोगेच्छा। अवसर विशेष पर व्यय में अशोभन-कंजूसी।

कफन (फा०)—शव को ढकने का वस्त्र। [मनोवैज्ञानिक व्यंग्य]

मरी जाय मल्होरें गाव ।

निबल परिस्थिति म ग्रानन्दोल्लास की भावना । सामर्थ्य से बाहर काम ।

मल्होरे=[मल्हण (प्रा०) प्रसन्न करना] वह राग जो प्रसन्नता के लिए ग्रामीण जन रात्रि के समय कोल्हू पर गाते हैं । यह पुरुषों का राग है । स्त्रिया मल्हार गीत सावन मे गाती हैं । लोकोक्ति म इसी शब्द के मूल भाव को लेकर मल्होरे शब्द का व्यवहार होना है । [अमगत व्यवहार]

मरी बछिया, बाम्मण के सिर ।

अनुपयोगी वस्तु का दान । अपना दायित्व दूसरे के सिर । उपयुक्त कर्म न होने पर भी पुण्य फल-लाभ की आशा ।

बछिया=अनब्याही अल्पायु गऊ (यदि वह भी मरी अर्थात निबल हो तब भविष्य में भी उसके उपयोगी बनने की सम्भावना नहीं की जा सकती ।

वि०—दानशीलता का गौरव श्रेष्ठ वस्तु के दान म है किन्तु लोक-वृत्ति मूल्य हीन अनुपयोगी वस्तुओं के दान की देखी जाती है । यथा—

लेत ही सांस उडिगो उपल्ला औ' भितल्ला सब,
दिन द्वैक बाती हेत रूई रह गई है ।"

अथवा—

'ऐसे आय दीन दयाराम तन दया करि
जावे आगे सरसा सुमेर सौं लगत है ।'

[लौकिक दानियो पर व्यग्य]

मरे बाबा की बडी बडी आँख ।

अतीत कुल गौरव का अत्युक्तिपूर्ण वणन । ऐसा कथन जिसका प्रमाण प्राप्त करना कठिन हो—शेखी । [व्यक्ति आचरण]

मर न माँभा ले ।

सवथा अरुचि । उपेक्षापूर्ण असहिष्णुता । किसी के नष्ट होने की कामना करना ।

माँभा=मच्छली पकडने के काटे पर लगाया जाने वाला चारा जिसको खान की इच्छा म मच्छली प्राण दे देती है ।

माँभा ले=[मभा, (प०) खाट]—खाट पकडे (रोग शय्या ले) ।

[अरुचिकर व्यक्ति के प्रति दुर्भावना]

म्हार पिस्स पिसणहारी, अर हम पिस्स पाऐंदार क ।

अपने लिए परिश्रम न करके विवशता म दूसरे के लिए श्रम करना । शक्ति के समक्ष आत्मसमपण । अपमान सूचक ।

वि०—ब्रिटिश राज्य काल म पुलिस का आतक । [परवशता]

मां सासम कर बेटी बड मर ।

करे कोई और परिणाम किसी दूसरे को भुगतना पड़े । एक की बदनामी दूसरे के सिरे । [समाज-व्यवहार]

'मां की चूंचियों पेट ना भर्‌या, बाप्पू के सांड म के भरगा ।

अतिशय लालची की कभी तृप्ति नहीं होती । जिन साधना से तृप्ति सभव है उनसे न हो पाई तो उसकी शेष क्षोभ व्यग्य । अनुपयुक्त स्थान म कामनातिरेक के कारण तृप्ति की खोज ।

सांड=पुरुष जनेन्द्रिय

दिये लोभ चशमा चखन लघु पुनि बडो लगाय ।

[लालची मनोवृत्ति पर व्यग्य]

मां डायण हो तो के पूत कूं खाय ।

अपना का अनिष्ट कोई नही चाहता । अपर व्यक्तियों के लिए जो भयानक एव आतककारी हैं वह भी अपना पर दया करते हैं ।

[अपने-पराये का अन्तर]

मां धी गाणहारी, बाप्प पूत बरासो ।

एकाकी और असहयोग पूर्ण व्यवहार । आत्म रत व्यक्तिया का अगोमन व्यापार । समाज तिरस्कृत अथवा कजूस लोगो का आचरण ।

गाणहारी=मगल गान करने वाली महिलाएँ ।

[असमाज सगत स्थिति पर टिप्पणी]

मां पर पूत पिता पर घोडा, भोत नई तो थोडा थोडा ।

रुधिर एव सगत का प्रभाव । स्वभाव जन्म जात सस्कार और परिस्थितियो का परिणाम । ससग फल ।

भोत=बहुत—(अल्पप्राण का महाप्राण 'ब' का 'भ')

[रूप एव प्रकृति पर टिप्पणी]

मा मरी धी कू धी मरी धींगडों कू ।

अपनी अपनी रुचि । (रक्त एव वय क्रम का सम्बन्ध)

धीगडा=बलिष्ट पुरुष

या चिन्तयामि सतत मयि सा विरक्ता

× × × ×

इश्क पर जोर नही, है ये वो आतिश गालिब',
जो लगाये न लगे और बुझाये न बने ।' [मनोविज्ञान]

मा के परसे अर, कात्तक के बरसे ई पेट मरै।

पृथ्वी की प्यास और बालक की तृप्ति मा के स्तन पान और कार्तिक की वर्षा से होती है।

वि०—कार्तिक की वर्षा भारतवर्ष में रबी की बुआई के लिए आवश्यक होती है और इसी के परिणाम स्वरूप अच्छी फसल की आशा की जाती है। [प्रकृत साधना से ही तृप्ति सभव]

मा फिर चोत्थी चोत्थी, पूत बिटौडा बवसैं।

वास्तविक दीनता को गुप्त रखकर उदारता का मिथ्या प्रदर्शन।

चोत्थी=किसी छोटे पशु का एक बार मे गिरा गोबर का ढेर। अनुकरणात्मक शब्द। [आत्मप्रदर्शन पर व्यग्य]

मा मेज्जै तो रोणें रींगसें ते लगू, ना तों गोब्बर कूढे ते लगू।

निर्दिष्ट कम के अनुकूल काय। आज्ञा के अनुसार कम।

वि०—युवा लडकियो को ससुराल जाने का चाव और मायके मे रहने की इच्छा आरम्भ म समान भाव होती है, किन्तु मायके से विदा होने पर लडकिया के रोने की प्रथा है। हृदय के उत्साह से प्रेरित कन्या का प्रश्न है कि यदि उसकी विदा की जाय तो वह लोक प्रथा का निर्वाह करे अन्यथा गृह-काय की हानि न होने दे और उसी म सलग्न रहे। [स्थिति के अनुरूप काय]

मा मरगी अधेरे मे, धी का नाम रोसनी।

वास्तविकता को भूल कर शान दिखाना। निवल अतीत को छिपाने की इच्छा। अयथाथ का मिथ्या प्रदर्शन की मनोवृत्ति पर व्यग्य। [दिवास्वप्न]

मां के लखन धी सब सीखी, सीखा सीख पडोसन सीखी।

काय कौशल का कारण सस्कार एव परिस्थिति। (मानसिक गठन के द्विविध आधार—जन्मगत सस्कार और वातावरण) [मनोवैज्ञानिक]

मां साग घोटती मरगी, मेठ मे पूत टमाटूर माग।

वास्तविकता को भूलकर प्रदर्शन और सुख लाभ की आकाक्षा। अनहोनी वस्तु माँगना।

मेठ>मेरठ (मयराष्ट्र)

वि०—यह लोकोक्ति मेरठ के ग्रामो से नगर मे पढने के लिए आने वाले विद्यार्थियो म किसी व्यय की शान दिखाने वाले साथी के लिए व्यवहार की जाती है। [व्यग्य]

मांस दुणिया खावैं, गळे मे हड्डी कोई ना लटकाता।

लोग बुराई (दुष्कम) करते है, उनका विज्ञापन नहीं। दुगुण हों तो समाज

की आख बचाई जाती है। असामाजिक कम हो तो भी असामाजिक व्यवहार न होना चाहिए। [नीति। समाज सापेक्ष आचरण पर बल]

माडे की जोरू सबकी भाब्बी, ठाडे की जोरू सबकी दाद्दी।

समाज मे निबल व्यक्ति की पत्नी से हर कोई आनन्द लेने की इच्छा करता है और बलशाली की पत्नी का सम्मान। निबल से आनन्दोल्लास पाने की प्रवृत्ति। (यौन सम्बन्धी)

वि०—बुलन्दशहर जिले मे 'माडे' के स्थान पर 'गरीब' अथवा 'नीसक' का प्रयोग चलता है। [मनोविज्ञान]

मान मनाई खीर न खाई, चमचा चाटण आई।

सम्मानपूर्ण निमन्त्रण की उपेक्षा एव स्वार्थ की विवशता मे चिपटने का स्वभाव। असमय किया गया कार्य असम्मान का कारण। लोकमत की अवना से वस्तु एव सम्मान की हानि। निमन्त्रित एव अनिमन्त्रित कहीं पहुँचने पर प्राप्ति एव सत्कार मे अन्तर।

[अदूरदर्शी लालची स्वभाव पर टिप्पणी]

माया का क्या जोडना, खलखाना, टप्पर ओढ़ना।

कष्ट सहन से धन सग्रह। बचत आवश्यकताओ के सीमित करने से सभव। टप्पर=टाट। [मनोविज्ञान]

माया तेरे तीन नाम, परसा, परसो, परसराम।

विलोम—

टोटे तेरे तीन नाम—लुच्चा, गुडा, बेईमान।'

सम्पन्नता सत्कार और अभाव लोकापवाद का कारण होते हैं। अर्थकारी समाज-व्यवस्था म धन ही से मान।

[धन वृद्धि के अनुपात मे सम्मान वृद्धि]

मार कूट क टाड बठाई, हरियल कौन उडावगा।

धमकाकर काम म लगा भी दिया, तो उसे करेगा कौन? बलपूर्वक किसी से श्रम नहीं कराया जा सकता। (श्रम के लिए स्वच्छा और स्वरुचि की अपेक्षा है)

टाड=खेत म बाँधा गया मचान। हरियल=तोता (ये मक्ई की बहुत हानि करते हैं) [आलसी एव कामचोर व्यक्तियो पर टिप्पणी]

मारते का हाथ पकडले, बोलते की जीभ कौन पकड।

लोकापवाद सामित करना कठिन। शारीरिक क्षति बचाई जा सकती है किन्तु मानसिक आघात नहीं। [किसी जल्पक के प्रति]

मीडकी ने बी पा ठा दिए, मेर बी तनाल जड ।
व्यय स्पधा, दूसरे की देखा देखी वह काम करना, जिसकी सामथ्य न हो ।
तन्नान=लोहे की मुडी हुई पत्ती जो पशुग्रा के खुर घिसने से बचाने के लिए लगाई जाती है ।
माडकी > मेढकी = मादा मेढक । [होड का निषेध]

मुह खाव, ग्राख लजाव ।
उदरपूर्ति म सहायक के प्रति सकोच । कृतनता जिससे लाभ हो, उससे दबना पडता है । उपकारी का प्रतिकार ।
[मानवी स्वभाव । सामान्य अनुभूति]

मुफ्त का चदन, घिस मेरे नदन ।
दूसरा की मूल्यवान् वस्तु बर्बाद करना । पराइ वस्तु की चिंता न करना । ग्रमूल्य का दुरुपयोग ।
'पर द्रव्यपु लोष्टवत् ।' [बिगाडा व्यक्ति के स्वभाव पर टिप्पणी व्यग्य]

मुरदे की चुत्तडों मे हींग लाणा ।
निर्जीव का उपचार । ऐस व्यक्ति का उपचार, सहायता जिसको कोई लाभ न पहुँच सके । व्यथ प्रयास । मृतप्राय व्यक्ति से भी कुछ निकलवाने की इच्छा ।
वि०—गुदा म हीग का फाया रखने से वायु निस्सरण ग्रथवा शौच होता है । [निबल का स्वस्थ्य करन की कामना]

मुल्ला भाट तबीज्जों मे ।
ईश्वर भक्त का मल भी धारण करने योग्य, श्रद्धा भाजना का ग्रयोग्य व्यवहार ।
ग्रधी श्रद्धा का परिणाम । विश्वास का ग्रनुचित प्रतिकार ।
तबीज=(फा०) ताबीज यत्रा । [पावन व्यक्ति की हेय वस्तु भी ग्रहणीय]

मू साई डूमणी गाव ग्राळ-पताळ ।
मुह चढे व्यक्ति को उचित रूप म काय न करना । महत्व प्राप्त व्यक्ति यथच्छ प्रलाप ।
ग्राळ-पताळ=ग्रसगत । [सिर चढे होने पर व्यवहार]

मू ग मोठ मे कौण बडा ।
समान का समादर । समस्थिति के लागा म किसी को विशिष्ट महत्व नहीं ।
[पारस्परिकता म समानता

मूतते का लम्बा दिखाई दे।
कृतित्व के अनुरूप महत्व स्वीकृति। देने-लेने वाले उदार व्यक्तियों की सामर्थ्य अधिक ही कूती (जाची) जाती है।
[कृती के चरित्र पर टिप्पणी]

मूत पै धरी ताक धिन्ना।
शेखी फलान पर। बहुत बढ़कर बोलने वाले की अवज्ञा।
ताक धिन्ना=नृत्य के तोड़ों पर तबले का स्वर। [उपेक्षा भाव]

मेरे ई तें आग लाई, ना धर्‌या बैसुंदर।
भीख की वस्तु पर अभिमान। माँगे-ताँगे की चीजों से बड़प्पन प्रकट करना।
बैसुंदर=(स० वैश्वानर) यज्ञ की पवित्र अग्नि।
[अकारण महत्व प्रकट करने पर व्यंग्य]

मेरे पिया की उल्टी रीत, सामण मास चिनाई भीत।
असमय कार्य करना। बिना हानि-लाभ का विचार किये कार्य करना। अदूरदर्शिता।
उल्टी रीत=असंगत व्यवहार।
वि०—सामण मास में अधिक वर्षा होने के कारण भवन निर्माण निषिद्ध कहा जाता है। [असामयिक कृत्य पर टिप्पणी]

मेरे बाब्बा कू रिजक ना मिलियो, नई लड़कियों कू भेज्जगा।
आलस्य पराकाष्ठा। उस सिद्धि की उपेक्षा जिसके कारण श्रम करना पड़े।
[व्यक्ति स्वभाव]

मेरे लला के तीन यार, धुने, जुलाहे अर मनिहार।
मनिहार=चूड़ी पहनाने वाला। [कुसंग पर कटाक्ष]

मैंने खाई, पितरों न पाई।
अपनी तृप्ति हुई तो सभी की तृप्ति जान ली। 'जी सुखी तो जहान सुखी।' अपनी उदर-पूर्ति हुई तो सब सन्तुष्ट हो गये।
पितर=पितृदेव जिनके नाम पर अभ्यागतों में ब्राह्मण भोजन कराया जाता है। [आत्मरत स्वार्थी]

मैं और मेरा पुरस, तीजे का मूं भुरस।
आत्मरत। स्वहित चिन्तन में ही संलग्न तथा दूसरों की उपेक्षा, अनिष्ट भावना।
प्रभु और माया के अतिरिक्त तीसरा कौन ?

स्त्री की स्वामी के प्रति एकान्त निष्ठा ।
झुरस < भुरस (स० ज्वल+ग्रश) ।
भुरस = झुलसाना । [असहिष्णुता]

मैं धन बजाऊ, तू बिल में हाथ गेर ।
दूसरे को सकट म डाल कर स्वय को दूर रखना । आपत्ति को आमत्रण देकर स्वय को सुरक्षित और दूसरे को सकट म डालना । [युग सत्य]

मोकू ग्रौर, न तो कू ठौर ।
एकाश्रय । साथ रहने की विवशता । [अन्योन्याश्रित]

य

या तो राड की राड रोवै ना, रोवै तो खसम कू खाय ।
प्राय किसी काय में रुचि लेना, और ले तो उसे अत तक पहुँचा देना ।
खसम = पति । [काय-पद्धति के विषय मे]

या हसा मोती चुग, या लघण मर जा ।
रुचि का गव । निम्न कोटि की उपलब्धि की उपेक्षा । उपयुक्त वस्तु प्राप्त न होने के अभाव म आवश्यक्ता का निषेध ।
लघण = किसी रोग अथवा विशेष स्थिति म रोगी को वैद्य द्वारा कराया जाने वाला व्रत । [स्वच्छापूवक हीन वस्तु के प्रति उदासीनता]

ये देखो कुदरत के खेल, पढें फारसी, बेच तेल ।
अभागे का परिश्रम भी व्यथ । शिक्षिता म बकारी ।
वि० = फारसी, भारतवष मे शाहजहा के समय तक राजभाषा थी, जिसका ज्ञान व्यक्ति को वृत्ति दिला सकेगा यही अनुमान कर लोग पढते होंगे । परन्तु आज ही कि भाति शिक्षिता म बकारी सावदशिक एव साव कालिक रही है । लोकोक्ति में प्रयुक्त फारसी शब्द का आजकल लाक्षणिक अथ लिया जाता है ।
[भाग्यवाद । आवश्यक ज्ञान प्राप्ति के अनन्तर भी व्यवसाय हीनता पर]

ये मू मसूर की दाल ।
किसी छोटे आदमी का महान् के प्रति अनुचित उद्गार । वतमान अथ—किसी छोटे आदमी की श्रेष्ठिमा के समान भोगेच्छा । छोटे मुह बडी बात ।
वि०—कालान्तर मे इस लोकोक्ति का सवथा रूप-परिवतन हो गया है । वास्तव म लोकोक्ति इस प्रकार रही होगी—
'यह मुह और मसूर की दार ।'

मसूर=एक सूफी फकीर ।
दार=सूली ।   [अनुपयुक्त माँग के प्रति]

र

रखूपुरा की पठ मे मैं किसका फूफा री ।
किसी अपरिचित का सम्बन्धी । वंचिता की तलाश ।
रखूपुरा=*जिला बुलन्दशहर स्थित एक ग्राम, जिसमे प्रसिद्ध पठ बहुत समय से लगती है ।*
वि०—किंवदन्ती चलती है कि एक बार रखूपुरा की पठ म किसी दुकानदार के पास कोई स्त्री एक हँडिया में ऊपर थोड़ा घी और नीचे गोबर भरकर लाई और बोली—'फूफा मेरे पास दाम कम हो गये हैं, तुम ये रख लो और मैं अगली बार या अभी इस बेचकर तुम्हारे पैसे दे दूंगी । मैं लत्ता ले आऊँ, ऊ जा रह्या है । —विश्वास करके दुकानदार ने पैसे दे दिये पर स्त्री फिर कभी नही लौटी । उसने जब हँडिया को देखा तो घी की पतली तह के नीचे गोबर देखकर हताश हो गया और उसने फिर अनेक बार पठ म शोर मचा कर उसका परिचय पाने की चेष्टा की जो कभी सम्भव नहीं हुआ ।
[खोया हुआ वंचित मनुष्य]

रांड के पर सुहागण लागी, होज्जा भरी मो सी ।
द्वेष । अपने समान दूसरे को सकटग्रस्त देखकर सुख ।
हो जा मो सी=मेरे समान । विधवा ।   [दूषित मनोविज्ञान
संकुचित मनोवृत्ति]

रांड मतेरी सोग्य, रडवे ना सोण दें ।
विधवा बचारी तो शात सयम रहना चाहती किन्तु वासनामय व्यक्ति रहने भी दें ।
उत्तेजित कर चैन न लेन देना । नारी के पतन का कारण पुरुष ।
[यौन विज्ञान]

राजा का तेल जले मशालची की गांड जले ।
दूसरे के दान पर अन्य को मन । दूसरे की उदारता म अनमनापन ।
दाता दे भण्डारी का पेट फटे ।
जाको वानी गुम की क्यों कर चित्त मलीन ।
ना तेरो कछु गिर गयो ना कछु काहू दीन ।।
ना मरो कछु गिर गया ना कछु काहू दीन ।
दता दाता और है तात चित्त मलीन ।।

राम के पूरे ।
चारों खान दुरुस्त । तेज, चालाक व्यक्ति ।
वि०—राम भारतीय लोक विश्वास एवं साहित्य के अनुसार एक शीलगुण सम्पन्न चरित्र है । लोकोक्ति में कदाचित इससे विपरीत चरित्र एवं स्वभाव वाले व्यक्ति की ओर संकेत किया गया है ।
पूरे=पूरक । [व्यंग्य]

रूप चुडैलों का मिजाज परियों का ।
कुरूपा स्त्री का मिथ्या रूप गर्व । नजाकत । व्यर्थ नखरा ।
परी=वायवी सौन्दर्य की मूर्ति । [नारी मनोविज्ञान]

रूप की रोवे, भाग की सोवे ।
'भाग्यं फलति सर्वत्र ।'
रोवै=विरह पीड़ा अनुभव करे ।
सोवै=रतिसुख पाय । [भाग्य की लीला]

रोते जा, मरों की खबर लावे ।
निरुत्साह से असफलता । पूर्व ही से अपशकुन ।
[व्यक्ति चरित्र पर टिप्पणी]

ल

लकड़ी के बल बँदरी नाचे ।
दबाव से आज्ञा पालन । भय के फल-स्वरूप कार्य । उदण्ड, चंचल आतंकित होने पर कार्य करते हैं ।
वि०—नाचना एक कमनीय कला है जिसे बन्दर जैसा चंचल प्राणी नहीं सीख सकता किन्तु वह भी भय के कारण उसे सीख लेता है । [मनोविज्ञान]

लच्छन एक, कुलच्छन दो ।
पाठान्तर— लच्छन एक, कुलच्छन चार —गुण थोड़ा अवगुण बहुत ।
[विषम चरित्र]

लड़ै बराबर रोवै दूणी ।
समान झगड़ालू होने के साथ दूसरों की सहानुभूति पाने के लिए दीनता का प्रदर्शन । (नारी स्वभाव) [चरित्र वैषम्य]

लाडे न ठाई पूछ पोंह चा सत्ताइस कोस ।
उत्साह में भर कर निर्बल व्यक्ति भी साहसपूर्ण कार्य कर डालते हैं । आशा से अधिक बल अथवा कार्य-क्षमता का प्रदर्शन ।

ठाई पूंद=उत्साह प्रथवा बल सग्रह किया (उ' प्रादि स्वर लोप) ।
[साहस प्रदान पर टिप्पणी]

सघारो का नाम महात्मा गांधी ।
विपन्नता ही सयम का कारण है । (प्राधुनिक समय म यह बात भले ही ठीक हो, किन्तु वास्तव म विपन्नता म सयम कोई महत्व नहीं रखता) ।
गांधी=मोहनदास कमचन्द गांधी, भारतीय राष्ट्रीय नेता जो प्रपने सयम के लिए प्रसिद्ध थ । [परिस्थितियो पर व्यग्य]

स

सत्तर करे, पिछत्तर छाड़े ।
कुल्टा का प्राचरण । (बहु पतित्व) प्रनेक से सम्बन्ध । प्रस्थिर मति ।
प्रस्थायी सम्बन्ध—प्रविश्वसनीय । प्रस्थायी मति के प्रस्थायी काय ।
[मनोविज्ञान]

सब दिन चगो, त्योहार के दिन नगो ।
सामान्यत सुसज्जित विशेष प्रवसर पर विरूप । कालानुसार व्यवहार का प्रभाव । सब समय सपन्नता विशेष समय पर दीनता ।
त्योहार=उत्सव । [व्यक्ति प्राचरण पर टिप्पणी]

सबी कुतिया गगा न्हाने लगीं, तो हड़िया कौन चाटेगा ।
बाह्य धर्माडम्बर करने से प्रकृति म परिवतन नही होता । जातीय स्वभाव बनाए रखने के लिए पुण्य काय की उपेक्षा की जा सकती है ।
सभी लालची पवित्रात्मा हो गए, तो लोलुपता का प्रदशन कौन करेगा ।
[जाति स्वभाव म परिवतन कठिन]

सस्ती भेड की पूछ, सभी ठा ठा देखें ।
कम दामो म मिली वस्तु की श्रेष्ठता म शका की जाती है । निबल प्राणी की खोज बीन प्रधिक । सहज प्राप्त का प्रनादर ।
पूछ उठाकर देखना=पशु परीक्षा ।
वि०—मेहगी वस्तु का मूल्य सुनकर ही लाग उसे बढिया समझ बैठते हैं, जबकि सस्ती वस्तु के सम्बन्ध म प्रनेक शकाएँ उत्पन्न करते हैं ।
[मनोविज्ञान]

सायड करक करा कसार ।
मैत्री मानकर प्राव भगत ।
प्रगाढ़ता म उदासीनता का व्यवहार ।

कसार=शक्करा मिश्रित गेहूँ का आटा (सामान्य सत्कार)
[सासारिकता, वाक्चातुर्य]

साझी का लोंडा, काम न कर, यून्म तो मरें।
साझे म समान सकट विभाजन की नीति। साझेदारा की व्यवहारी दृष्टि। साझे में दूसरों का अतिरिक्त लाभ न लेने देने का प्रयत्न। [मनोविज्ञान]

साझे के चणें, दुखती आखों चाबणे।
साझे के व्यापार म प्राप्त सकट भी अगीकार करने की विवशता। साझे की हानि भी ग्राह्य। साझे मे बराबर का काम करना।
वि०—आँख दुखनी आने पर चने अथवा कोई कडी वस्तु चबाने से और अधिक पीडा बढती है। [साझेदारी का शील]

साझ की माल, सवेरे का कउग्रा,
आँव मेरे माई भतिज्जे, क ग्राव मेरे गाम का नउग्रा।
शुम=शकुन।
माल=चरखे की माल का टूटना शुभ माना जाता है।
नउग्रा >स० नापित=नाई। [दिवास्वप्न]

सात खाये, सात लटकाये।
रौद्र एव वीभत्स भाव। जितना को खा लिया (नष्ट कर दिया) उतनो ही को मार कर दूसरा को आतकित करन के लिए प्रदर्शनार्थ साथ रखा। किसी अत्यन्त क्रोधी व्यक्ति का स्वभाव।
[आतक प्रदर्शन पर व्यग्य]

सात पाच की लाकडी, एक जणे का बोझ।
सब के सीमित सहयोग से किसी एक का निर्वाह। सहयोग और सहायता से किसी दीन की आवश्यकता पूर्ति-सुख लाभ।
सहयोग से किया गया काय सुगम और एक के जिम्मे छोडा हुआ कठिन होता है। सभी की सहायता मिले तो काय की दुरूहता कम हो जाती है।
[सहयोग की महिमा]

सात मामा का भाणजा, न्योता-न्योता डोलल।
सब का अतिथि किसी का अतिथि नही। एक के द्वारा दूसरों के बहाने उदासीनता का व्यवहार। जो एक का काम नहीं वह किसी का काम नहीं। कत्तव्य के प्रति उपेक्षा। [परिचितों की उदासीनता पर]

सारी उमर का क्वारा रातों फेरे ले।
स्वप्न मे कामना पूर्ति का सुख।

एकाकी व्यक्ति की व्यग्रता।
कुंवारा=अविवाहित।
फेरे लेना=निरन्तर चक्राकार घूमना। सप्तपदी का क्रम। [मनोविज्ञान]

सास आगरी, बहू पागरी, कौन बजावे घर की झाझरी।
सास बहू दोनों ही अपाहिज हों तो घर का धन्धा कौन करे? यदि रोगी व्यक्ति को अकर्मण्य (हरामी) सहायक मिले तो कैसे निर्वाह हो।
आगरी > अगुरी।
पागुरी=पंगु। चलने में सर्वथा असमर्थ।
वि०—सास यदि पैर की अंगुली की चीस के कारण गृह-कार्य की असमर्थता दिखाये और बहू पहले से ही पंगुता का बहाना करने लगे, तो ऐसी दशा में गृह का कार्य कैसे चल सकता है।
सास बहू में प्रायः गृह-कार्य के सम्बन्ध में गन्दी स्पर्धा रहती है। कारण कि उन दोनों में गृह स्वामित्व की होड़ होती है।
लोकोक्ति की गरिमा सराहनीय है। [मनोवृत्ति]

सास घर जमाई कुत्ता,
बहन घर भाई कुत्ता।
सब कुत्तों का सरदार,
बाप बसे बेटी के बार॥'
बार=द्वार। पतित जीव। [लोक-व्यवहार]

सास ननद की मेहर हुई घुना भुसी की घुघड़ दई।
हिन्दू गृहस्थ में बहू की उपेक्षा। अधिकारी की कृपा से किंचित लाभ। दया भाव (व्यंग्य)।
मेहर=कृपा
घुनी भुसी=दाल के टूटे हुए छोटे कण और छिलके तथा आटे की छानस।
[कटुता में सहृदयता का आभास]

'सास को पड़ी आजर की बहू को पड़ी काजर की।'
बहू को शृंगार और अपनी स्वास्थ्य रक्षा की तथा सास को गृहस्थ का सामान भगवान की चिन्ता रहती है। आयु भेद के कारण रुचि भेद।
पड़ी=चिन्ता लगनी।
आजर=(सं० आहरण।) गृहस्थ का सामान
काम की उपेक्षा कर कुछ लोग द्वारा बनाव-चुनाव को महत्त्व देना।
[रुचिभेद]

सास मरी राज भाया ।

अधिकारी के न रहने पर सुखानुभव । महत्व की अनुभूति । कार्य स्व-तन्त्रता । स्वच्छन्दता ।

रोकने-टोकने वाले के अभाव में स्वेच्छाचारिता का प्रदर्शन ।

[परिस्थिति-परिवर्तन में सन्तोष]

सिकार के बखत कुतिया हगासी ।

कार्य काल में शिथिलता (संकट उपस्थित होने पर कायरता)

वि०—किसी विशिष्ट कार्य का अवसर होने पर शौच, लघुशंका एवं प्यास का अनुभव मानसिक उत्तेजना का द्योतक होता है। (घबराहट) [अतत्परता]

सुकर भेज समधियाने कूं नहिं फिरतो दो-दो दाने कूं ।

वैवाहिक सम्बन्ध से अप्रत्याशित लाभ । रिश्तेदारी से जीवन निर्वाह में सहायता । और के बल पर जीवन यापन । [परिस्थिति पर व्यंग्य]

समधियाना—लड़के अथवा लड़की की ससुराल ।

सुघड़ मलाई बहुवड़ ले, बलद-खोल ससरे का दे ।

दूसरे की सम्पत्ति लुटा कर प्रशंसा पाने का यत्न ।

[अकारण प्रशंसा पर टिप्पणी]

सुलफइया यार किसके दम लगाया खिसके ।

स्वार्थी स्वार्थपूर्ति के पश्चात् नहीं ठहरा करते । [स्वार्थी आचरण पर व्यंग्य]

सुसरार सुख की सार, दिन दो चार, फिर जूतियों की मार ।

ससुराल में थोड़े समय सत्कार, फिर उपेक्षा । जामातृ श्वसुर गृह में स्वल्प समय ही सहनीय ।

जूतियों की मार—अतीव निरादर ।

'असारे खलु संसारे सारं श्वसुर मन्दिरम्' के विपरीत भाव । [नीति]

सूर्णों सार तें, मरखना बल अच्छा ।

ना कुछ से कुछ बहतर है । स्नेही लोगों के अभाव में तीव्र स्वभाव वालों का भी मूल्य । (उनके कारण भी कुछ तो सम्बन्ध रहता ही है ।)

वि०—प्रेम और घृणा की ग्रन्थियां का एक ही स्थान से उदय होता है। यह लोकोक्ति स्त्रियों में पीहर अथवा ससुराल में किसी एक कटु स्वभाव वाले व्यक्ति के बच रहने पर कही जाती है । [अवशिष्ट पर सन्तोष]

सूत न कपास, कोलिया ते लट्ठम् लट्ठा ।

अकारण, व्यर्थ झंझट । असंगत व्यवहार ।

कोलिया=जाति विशेष । बुनकर ।

सूनी रास ढोक्सों स नप है।

कल्पना म दीनता का कोई कारण नहीं। (जब अन्न का भाण्डार है ही नहीं तो उसे किसी भी बडे छोटे पात्र से माप डालो) जब कुछ नहीं होना तो प्रगल्भता के बल पर ही लोग जीते हैं।

ढोकसा=मिट्टी का चौडे मुह का पात्र। [कल्पना का व्यापार]

स्हेंर फूक दिया, अग्यारी करणी ना आई।

अज्ञता का मिथ्या प्रदशन। जानबूझ कर अनजान बनना। प्रवचना।

अग्यारी=स० अग्नि+काय। अग्नि, धूप देना। छोटे परिमाण में प्रज्वलित अग्नि। [व्यक्ति आचरण पर टिप्पणी]

सोत्ते का कटडा, जागते की कटिया।

सावधानी से लाभ असावधानता से हानि। [नीति उपदेश]

सोत्ते कू तो जगादे, जागते कूं कोन जगाव।

जिसकी काम मे रुचि न हो उसे कौन सावधान करे। जानबूझ कर नीद का बहाना करता हुआ व्यक्ति नहीं जगाया जा सकता।

[जानबूझ कर अबोध बनने वाले के प्रति]

सोने की छुरी हो, तो क्या पेट मे मारी जा।

बहु मूल्य क्षतिकारक भी अग्राह्य। सुदर मूल्यवान वस्तु, से भी हानि की सम्भावना हो तो उसे कोई नहीं चाहता। [व्यवहार कुशलता]

सोना ससार की, लछमी सुनार की।

गहने की अनुपयोगिता। दोना ही भाति आभूषण व्यथ। बाहर वालो के प्रदशन के निमित्त ही समझना चाहिये, अन्यथा खोट और मजदूरी से सारा सोना सुनार का हो जाता है। [दूरदर्शिता]

सौकीन बुढिया चटाई का लहगा।

प्रौढ़ा की आकषक बनने की इच्छा। शृगार प्रसाधन की विधि अज्ञात रहते हुए भी शृगार चेष्टा। (अनुपयुक्त, असामयिक प्रयास)

चटाई=चारखाने का कपडा या चैक।

बुना हुआ बठने का बड़ा आसन।

ह

हम औरों के काम बिगाडें, यो तो अपणे घर का है।

सवथा लापरवाही। निज-पर की हानि की चिंता न करना। (सया इसी म

अपनी महत्ता समझना) अन्य की हानि की चिन्ता नहीं तो अपनी को तो क्या करना है ।।मस्ती का आचरण ।। [दायित्वहीन व्यक्ति का आचरण]

हळदीं लग न फिटकडी, रग चोक्खा ।
बिना दाम खर्च किए काम बनाना । चालाकी । अपना कुछ न लगा कर पूरा काम निकाल लेना । बिना पैसे के खूबी उत्पन्न करना । कार्य कुशलता । अमूल्य लाभ प्राप्ति ।
चोक्खा=श्रेष्ठ, तेज । [चालाक व्यक्ति के आचरण पर]

हमारी बिल्ली हमी कू म्याऊ ।
अपने ही व्यक्ति (पोषित) द्वारा विरोध । अपने आश्रम में रहने वाले का घातक्कारी व्यवहार । [व्यक्ति आचरण पर टिप्पणी]

हात्य कू हात्य धोव्वे ।
पारस्परिक सहायता से काय सिद्ध होता है ।।जिसके साथ जैसा व्यवहार किया जाए वैसा ही उससे प्राप्त होता है । (ऋण बन्धी ससार),स्वार्थ का परिचय होता है । [पारस्परिकता का व्यवहार]

हात्ती डोलें गाव गाव, जिसका हात्ती उसका नाम ।
मागी हुई वस्तु से श्रेय प्राप्ति असभव (जैसे हाथी के स्वामी की ख्याति, जहाँ वह मागे जाता है होती है ।) दूसरे के वैभव एव ख्याति से स्वय लाभान्वित होने का निरथक प्रयास ।
नाम=प्रसिद्धि, ख्याति ।
[दूसरो के प्रकाश मे चमकने की इच्छा पर टिप्पणी]

हात्तों की लकीर के मिटे हैं ।
घनिष्ट (जन्मजात) सम्बन्ध कभी नष्ट नहीं होते । (वैमनस्य होने पर भी) अपने विलग नही हो सकते ।
लकीर=रेखा । [समाज सबधो की दृढ़ता]

हात्य जोड़े ते कहीं बूढ़े ब्याहे जा हैं ।
चाटुकारी से क्या अनुचित काय सभव हो सकता । (तात्पय है उसके लिए कदाचित् और किसी युक्ति की अपेक्षा है ।)
ब्याहे=विवाहित । [लोकदृष्टि]

हात्य सुमरणी, पेट कतरणी ।
कहना कुछ करना कुछ । छद्म व्यवहार । ऊपर से भक्ति और मन ही मन दूसरा का अहित करना ।-
सुमरनी=माला । [क्र्मश

हाथ ने मुट्ठी, फड़फड़ा उठठी।

पास-पल्ले कुछ न होने पर, विशाल योजना। निरर्थक उत्साह।

फड़फड़ाना=अनुकरणात्मक शब्द। पक्षी का जोर से पंख हिलाना, जिससे शब्द हो। हाथ न=साधनहीन। [व्यंग्य की योजना]

हाथ पाँव की कायली, मू में माखी जाँय।

आलसी लोग घिनौने। अकर्मण्यता ही दरिद्रता का कारण।

कायली=(फा०) काहिली, सुस्ती आलस्य। [तथ्य प्रकाशन]

हाळियों के पेट सुवाळियों से भरे हैं।

श्रमिकों की क्षुधापूर्ति स्वल्प भोजन से नहीं होती। शारीरिक श्रम करने वालों को पर्याप्त अन्न की अपेक्षा। [तथ्य प्रकाशन]

हिरनी केन में कोई मट्ठा नाय।

मृगशावक सभी चंचल होते हैं।

किसी किसी परिवार के सभी सदस्य बड़े चालाक (तेज) देखे जाते हैं।

मट्ठा=म० मृष्ट=चुप सुस्त।

हुस्यार तो घणी, पर रांड कैसे होगी।

चालाक होने पर भी असफल क्यों? बुद्धिमती होकर भी परित्यक्ता किस लिये। कुल चालाक होकर भी काम न बना पाना अथवा हानि उठाना।

[व्यक्ति आचरण]

हूँ तो बाई मां के पूत धेल्ली बेड़ गे अक ना।

परिश्रम करने पर भी पारिश्रमिक पाने में सन्देह। स्वामी के चरित्र पर अनास्था।

वि०—कहते हैं कि एक बुढ़िया बड़ी कंजूस थी और वैसे ही उसके बेटे भी थे। बुढ़िया मरी तो लड़कों ने अपनी बहुओं से माँ को रोने के लिये कहा, किन्तु वे तो कंजूस बुढ़िया के मरने से प्रसन्न थीं, रोतीं कैसे। यह देखकर लड़कों ने उनको रोने का पारिश्रमिक एक एक अठन्नी देने को कहा। इस पर वे रो उठीं किन्तु रोते रोते यही कहती थीं—

हूँ तो बाई ' [संशयात्मक चरित्र पर अनास्था]

होठों कढ़ी, कोठों चढ़ी।

मुँह से निकली हुई बात तुरन्त सब में फैल जाती है। रहस्य रखना हो तो किसी से भी कुछ न कहो।

मुँह से निकली हुई पराई बात।'

इसी कारण चाणक्य का कथन है—

'मनसा चिन्तितं कर्म, वचसा न प्रकाशयेत्। [नीति]